# आरोग्य पथ

मासिक ई-पत्रिका

आईएसबीएन : 978-93-7029-455-4 वर्ष-4, अंक-04 अप्रैल, 2025

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर
MAHAYOGI GORAKHNATH UNIVERSITY GORAKHPUR
स्वस्ति पन्थामनुचरेम्
2021

## महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर-273007 (उ.प्र.)

# आरोग्य पथ

**Editors :**

Dr. Vimal Kumar Dubey (Chief Editor)

Dr. Sadhvi Nandan Pandey (Editor)

© **Editors**

Edition : 2025

Pages : 40

Size : A4

Paper Quality (GSM) : NIL (Only Electronic)

**Published by :**

Mahayogi Gorakhnath University Gorakhpur

Arogya Dham, Balapar Road, Sonbarsa, Gorakhpur,

Uttar Pradesh-273007

Tel. : +9999764424, 8765005177

E-mail : mguniversitygkp@mgug.ac.in

आरोग्य पथ

## सम्पादकीय

### परिवर्तनशील जीवनशैली में आयुर्वेदिक स्वास्थ्य सलाह एवं उपचार

'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम' निश्चित रूप से शरीर ही धर्म के पालन का प्रथम साधन है। प्रायः हम सभी शरीर को लेकर लापरवाह होते हैं। सभी दायित्वों, संबंधो, कर्म कर्तव्यों का निर्वाह हेतु जन्म से लेकर मृत्यु तक यह शरीर ही सच्चा साधन है। अतः शरीर को स्वस्थ रखना अनिवार्य हो जाता है क्योंकि यह जीवन के चारों पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को प्राप्त कराने का प्रथम महत्वपूर्ण साधन है। आइये हम इस लेख के माध्यम से वर्त्तमान परिवर्तनशील जीवनशैली में शरीर को स्वस्थ कैसे रखें और आयुर्वेद की क्या भूमिका होगी इस पर चर्चा करेंगे।

आधुनिक युग में तीव्र गति से परिवर्तनशील जीवनशैली ने मानव स्वास्थ्य पर बहुत गहरा प्रभाव डाला है। जीवन में अनियमित दिनचर्या और मानसिक तनाव आम हो गए हैं। असंतुलित आहार, मानसिक तनाव और शारीरिक निष्क्रियता के कारण उच्च रक्तचाप, मोटापा, मधुमेह, अनिद्रा और मानसिक विकार जैसे जीवनशैली जनित रोगों का प्रकोप बढ़ता जा रहा है। तो स्वस्थ कौन है। इसके बारे आचार्य सुश्रुत कहते हैं कि 'समदोषा समाग्निश्च समधातुमलक्रियः प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाः स्वस्थ इत्यभिधीयते' यह आयुर्वेद में स्वास्थ्य की परिभाषा है। इसका अर्थ है कि स्वस्थ व्यक्ति वह है जिसके दोष (वात, पित्त, कफ) संतुलित हों, अग्नि (पाचन शक्ति) समान हो, धातु (ऊतक) और मल (अपशिष्ट) क्रियाएं समान हों और आत्मा, इंद्रियां और मन प्रसन्न हों। इस परिभाषा के अनुसार क्या हम में से कोई स्वस्थ है क्या? शायद हम कहेंगे नहीं, तो ऐसे परिदृश्य में, आयुर्वेद जो भारत की प्राचीन चिकित्सा प्रणाली है। एक समग्र और प्राकृतिक समाधान प्रदान करता है, जो न केवल रोगों के उपचार में सहायक है, बल्कि उनके मूल कारणों को समझकर स्थायी समाधान भी प्रस्तुत करता है। आयुर्वेद जीवन का वो विज्ञान जो शरीर, मन और आत्मा के संतुलन पर आधारित है। इसकी प्रमुख अवधारणाएँ निम्नलिखित हैं- दोष-धातु-मल सिद्धांत शरीर के समुचित कार्य के लिए दोष (वात, पित्त, कफ) धातु (रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र आदि) और मल (मूत्र, मल, स्वेद) का संतुलन आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति की जन्मजात एक स्वाभाविक प्राप्ति भी होती है जो उसकी शारीरिक और मानसिक संरचना निर्धारित करती है उसके स्वास्थ्य और रोग प्रवृत्तियों को प्रभावित करती है। आयुर्वेद में 'दिनचर्या' (दैनिक दिनचर्या) और ऋतुचर्या (मौसमी दिनचर्या) के माध्यम से जीवन को संतुलित रखने की सलाह दी गई है।

ब्रह्म मुहूर्त में जागरण, नियमित व्यायाम, ध्यान और योग, तथा समय पर भोजन और विश्राम से मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार होता है। मौसम के अनुसार आहार और जीवनशैली में बदलाव करना आवश्यक है। जैसे गर्मियों में ठंडे और तरल पदार्थों का सेवन, जबकि सर्दियों में गर्म और पौष्टिक आहार लेना चाहिए। आयुर्वेद 'सात्त्विक आहार' पर बल देता है, जिसमें ताजे फल, सब्जियाँ, साबुत अनाज और हल्के मसाले शामिल होते हैं। अश्वगधां, सर्पगंधा और अर्जुन जैसी जड़ी-बूटियों का उपयोग करके रक्तचाप को नियंत्रित किया जाता है। साथ ही, ध्यान, प्राणायाम और योग के माध्यम से मानसिक शांति प्राप्त की जा सकती है। ये तनाव को कम करने, श्वसन प्रणाली को सुधारने और मानसिक शांति प्रदान करने में सहायक हैं। जामुन, करेला, मेथी और गुडमार जैसी जड़ी-बूटियों का उपयोग करके रक्त शर्करा स्तर को नियंत्रित किया जाता है। इसके अलावा, नियमित व्यायाम और संतुलित आहार से भी मधुमेह को प्रबंधित किया जा सकता है। तेज जीवनशैली के कारण मानसिक तनाव, चिंता और अनिद्रा की समस्याएँ बढ़ रही हैं। ब्राह्मी, शंखपुष्पी और जटामांसी जैसी जड़ी-बूटियों का उपयोग मानसिक शांति और नींद में सुधार के लिए किया जाता है। साथ ही ध्यान, योग और प्राणायाम से मानसिक संतुलन प्राप्त किया जा सकता है।

पंचकर्म आयुर्वेद का प्रमुख शुद्धिकरण उपचार है, जिसमें वमन, विरेचन, वस्ति, नस्य और रक्तमोक्षण शामिल हैं। यह शरीर से विषाक्त पदार्थों को निकालकर रोगों की रोकथाम और उपचार में सहायक होता है। रसायन चिकित्सा शरीर की प्रतिरक्षा शक्ति बढ़ाने और दीर्घायु प्राप्त करने के लिए किया जाता है। इसमें च्यवनप्राश, अमलकी और गुडूची जैसी औषधियों का उपयोग होता है। प्रतिदिन कम से कम 7-8 घंटे की नींद लेना आवश्यक है। सोने से पहले तेल मालिश यह शरीर को आराम देती है और नींद की गुणवत्ता में सधार करती है। हमें अपने मल, मूत्र, भूख, प्यास आदि वेगों को भी बलपूर्वक नहीं रोकना चाहिये क्योंकि इससे अनेक रोग उत्पन्न होते हैं। छोटे-छोटे उपायों से हम स्वस्थ रह सकते हैं। आधुनिक जीवनशैली के दुष्प्रभावों से बचने और स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए आयुर्वेद एक प्रभावी और प्राकृतिक मार्ग प्रदान करता है। इसकी समग्र दृष्टिकोण, जिसमें शरीर, मन और आत्मा का संतुलन शामिल है, न केवल रोगों के उपचार में सहायक है, बल्कि उनके मूल कारणों को समझकर स्थायी समाधान भी प्रस्तुत करता है। यदि हम आयुर्वेद के सिद्धांतों को अपने दैनिक जीवन में अपनाएँ, तो हम न केवल रोगों से मुक्त रह सकते हैं, बल्कि एक स्वस्थ, संतुलित और आनंदमय जीवन जी सकते हैं।

प्रकाशक
महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर, 273007

# आरोग्य पथ
मासिक ई-पत्रिका


## माह विशेष

### नवरात्र शक्ति, साधना और सांस्कृतिक चेतना का उत्सव

भारत एक ऐसा देश है जहाँ हर पर्व सिर्फ एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं होता, बल्कि वह समाज की सांस्कृतिक चेतना, आध्यात्मिक परंपरा और मानवीय मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है। इन्हीं पर्वों में एक अत्यंत विशिष्ट और व्यापक रूप से मनाया जाने वाला पर्व है नवरात्र। यह पर्व शक्ति की उपासना का पर्व है, जो देवी दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा-अर्चना से जुड़ा हुआ है। संस्कृत में 'नवरात्र' का अर्थ होता है 'नौ रात' अर्थात ऐसे नौ दिन और रातें जो आत्मसंयम, भक्ति और साधना को समर्पित होती हैं।

वासंतिक नवरात्र, जिसे 'चैत्र नवरात्र' भी कहा जाता है, हिंदू धर्म में मनाए जाने वाले दो प्रमुख नवरात्रों में से एक है। यह त्योहार वसंत ऋतु के आगमन पर चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तक मनाया जाता है। वर्ष में शारदीय नवरात्र (अश्विन माह) की तरह ही यह भी देवी दुर्गा के नौ रूपों की उपासना का पर्व है।

इन नौ दिनों में मां दुर्गा के अलग-अलग नौ रूपों की पूजा होती है, जिनमें शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री प्रमुख हैं। इन रूपों में देवी केवल धार्मिक शक्ति नहीं, बल्कि नारी के विविध आयामों कोमलता, करुणा, साहस, ज्ञान और न्याय का भी प्रतीक हैं। श्रीराम जन्मोत्सव (राम नवमी) भी इसी नवरात्र के अंतिम दिन मनाया जाता है, जिससे इसका धार्मिक महत्व और बढ़ जाता है। वासंतिक नवरात्र केवल देवी उपासना का पर्व नहीं, बल्कि यह साधकों के लिए आत्मिक उन्नयन का अवसर होता है। कई साधक इस समय को योग, ध्यान और मंत्रजप में लगाते हैं। यह नवरात्र शक्ति साधना का प्रारंभिक काल भी माना जाता है, खासकर तांत्रिक उपासकों के लिए।

नवरात्र का महत्व केवल आध्यात्मिक ही नहीं, सामाजिक और सांस्कृतिक भी है। भारत के विभिन्न हिस्सों में यह पर्व अलग-अलग रूपों में मनाया जाता है। गुजरात में गरबा और डांडिया की रंगीन रातें न केवल भक्ति का उत्सव हैं, बल्कि सामूहिकता और सांस्कृतिक एकता की मिसाल भी हैं। बंगाल में यह पर्व दुर्गा पूजा के रूप में भव्य मूर्तियों, सजावट और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ मनाया जाता है, जहाँ देवी की शक्ति को महिषासुर मर्दिनी के रूप में दर्शाया जाता है।

आधुनिक जीवन में जहाँ व्यस्तता, तनाव और तकनीकी एकाकीपन बढ़ा है, ऐसे में नवरात्र हमें आध्यात्मिक आत्मनिरीक्षण और शारीरिक-मानसिक संतुलन का अवसर प्रदान करती है। उपवास, ध्यान, भजन और साधना के माध्यम से व्यक्ति स्वयं से जुड़ता है, अपनी सीमाओं को पहचानता है और भीतर छिपी शक्ति को जागृत करता है। इस पर्व का एक और विशेष संदेश यह है कि शक्ति केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं है, बल्कि वह समाज में नारी सशक्तिकरण, संतुलन और न्याय के रूप में भी प्रकट होनी चाहिए।

पूर्वी उत्तर प्रदेश में चैत्र नवरात्रि एक गहरी धार्मिक आस्था और सामूहिक ऊर्जा का प्रतीक बन जाती है। वाराणसी, गोरखपुर, बलिया, देवरिया और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में यह पर्व विशेष श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। यहां के मंदिरों में कलश स्थापना, अखंड ज्योति और रामचरितमानस का अखंड पाठ एक अलौकिक वातावरण रचता है। गांवों में महिलाएं सामूहिक रूप से देवी गीत गाती हैं और कन्या पूजन का विशेष आयोजन होता है। देवी के स्थानिक रूप दुर्गा मंदिर (गोरखपुर), या मां ललिता देवी (प्रतापगढ़)। इस अवसर पर भक्तों से भर जाते हैं। ग्रामीण अंचलों में चैत्र नवरात्रि लोक-परंपरा, भक्ति और सामूहिक सहभागिता का अद्भुत संगम बन जाती है।

आज जब दुनिया बदलाव के दौर से गुजर रही है, नवरात्रि हमें हमारी संस्कृति, परंपरा और आत्मबल की ओर लौटने का निमंत्रण देती है। यह पर्व हमें बताता है कि सच्ची शक्ति किसी बाहरी साधन में नहीं, बल्कि हमारे अंतःकरण में छिपी है। जिसे श्रद्धा, साधना और सेवा से जागृत किया जा सकता है।

इसलिए नवरात्र केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि जीवन के प्रत्येक पक्ष में संतुलन और शक्ति की स्थापना का पर्व है। जो हर वर्ष हमें अपनी जड़ों से जुड़ने और अपने भीतर की शक्ति को पहचानने का अवसर प्रदान करता है।


प्रकाशक
महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर, 273007

आरोग्य पथ
मासिक ई-पत्रिका

## हमारी विरासत

# महर्षि चरक

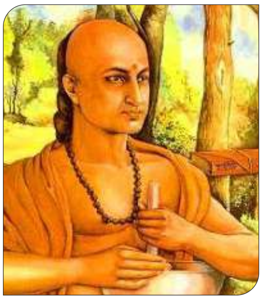

चरक एक महर्षि एवं आयुर्वेद विशारद के रूप में विख्यात हैं। चरकसंहिता आयुर्वेद में प्रसिद्ध है। आचार्य चरक ने आचार्य अग्निवेश के अग्निवेशतन्त्र में कुछ स्थान तथा अध्याय जोड़कर उसे नया रूप दिया। लेखक दृढ़बल द्वारा अतिरिक्त सत्रह अध्यायों के साथ पूरक किया गया जिसे आज चरक संहिता के नाम से जाना जाता है। इसके उपदेशक अत्रिपुत्र हैं। प्राचीन वाङ्मय के परिशीलन से ज्ञात होता है कि उन दिनों ग्रंथ या तंत्र की रचना शाखा के नाम से होती थी। जैसे कठ शाखा में कठोपनिषद् बनी। शाखाएँ या चरण उन दिनों के विद्यापीठ थे, जहाँ अनेक विषयों का अध्ययन होता था। अतः संभव है, चरकसंहिता का प्रतिसंस्कार चरक शाखा में हुआ हो।

चरकसंहिता में पालि साहित्य के कुछ शब्द मिलते हैं, जैसे अवक्रांति, जेंताक (जंताक -विनयपिटक), भंगोदन, खुड्डाक, भूतधात्री (निद्रा के लिये)। पर चरक संहिता में बुद्धमत का जोरदार खंडन मिलता है। इससे चरकसंहिता का उपदेशकाल उपनिषदों के बाद और बुद्ध के पूर्व निश्चित होता है। चरक की शिक्षा तक्षशिला में हुई थी ऐसा कुछ विद्वानों का मत है कि चरक कनिष्क के राजवैद्य थे परंतु कुछ लोग इन्हें बौद्ध काल से भी पहले का मानते हैं। आठवीं शताब्दी में इस ग्रंथ का अरबी भाषा में अनुवाद हुआ और यह शास्त्र पश्चिमी देशों तक पहुंचा। इसमें रोगनाशक एवं रोगनिरोधक दवाओं का उल्लेख है तथा सोना, चाँदी, लोहा, पारा आदि धातुओं के भस्म एवं उनके उपयोग का वर्णन मिलता है। 300-200 ई. पूर्व लगभग आयुर्वेद के आचार्य महर्षि चरक की गणना भारतीय औषधि विज्ञान के मूल प्रवर्तकों में होती है।

चरक संहिता चिकित्सा के विभिन्न पहलुओं पर एक व्यापक ग्रंथ है, जिसमें निदान, उपचार और नैतिक विचार शामिल हैं। इसमें शरीर रचना विज्ञान, शरीर क्रिया विज्ञान, औषधि चिकित्सा, शल्य चिकित्सा तकनीक और चिकित्सा में खनिजों और धातुओं के उपयोग सहित कई विषयों को शामिल किया गया है। चरक का चिकित्सा के प्रति दृष्टिकोण समग्र था और शरीर को समग्र रूप से समझने पर केंद्रित था।

उन्होंने तीन दोषों (वात, पित्त और कफ) के बीच संतुलन बनाए रखने के महत्व पर जोर दिया और माना कि इन दोषों में असंतुलन से रोग होते हैं, उनके उपचार का उद्देश्य आहार परिवर्तन, हर्बल उपचार, जीवनशैली में बदलाव और मालिश और विषहरण जैसे उपचारों के माध्यम से इस संतुलन को बहाल करना था।

चरक संहिता में व्याधियों के उपचार तो बताए ही गए हैं, प्रसंगवश स्थान-स्थान पर दर्शन और अर्थशास्त्र के विषयों का भी उल्लेख है। शास्त्रं ज्योतिः प्रकाशार्थं दर्शनं बुद्धिरत्नः। ताभ्यां भिषक् सुयुक्ताभ्यां चिकित्सन्नपराध्यति(च.सू. 9/24) अर्थात शास्त्र ज्योति शास्त्रीय ज्ञान प्रकाश के लिए है और दर्शन ज्ञान का रत्न है। जबकि चिकित्सक उपयुक्त और आपत्तिजनक दोनों का इलाज करता है।

चरक संहिता अनुसार जो चिकित्सक ज्ञान और समझ के दीपक के साथ रोगी के शरीर में प्रवेश करने में विफल रहता है, वह कभी भी रोगों का इलाज नहीं कर सकता। उसे पहले पर्यावरण सहित सभी कारकों का अध्ययन करना चाहिए, जो रोगी के रोग को प्रभावित करते हैं और फिर उपचार निर्धारित करना चाहिए। चिकित्सा पता करने की तुलना में रोग की घटना को रोकना अधिक महत्वपूर्ण है।

धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम् (च.सू.1/15) अर्थात स्वास्थ्य ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का सर्वोत्तम मूल है, चरक के अनुसार आयुर्वेद का प्रयोजन ही स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणं अतुरस्य विकार प्रशमनं च अर्थात स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य का रक्षण करना और रोगी के विकारों का शमन करना। उन्होंने आयुर्वेद प्रमुख ग्रन्थों और उसके ज्ञान को इकट्ठा करके उसका संकलन किया। चरक ने भ्रमण करके चिकित्सकों के साथ बैठकें की, विचार एकत्र कि और सिद्धांतों को प्रतिपादित किया।

प्रकाशक
महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर, 273007

# आरोग्य पथ
मासिक ई-पत्रिका

## अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी : समापन समारोह

## संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय

सम्मेलन के समारोप समारोह में विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए डॉ. अजीत कुमार शासने एवं डॉ. अंजू टी.आर.

दिनांकः 01 अप्रैल, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर द्वारा संचालित संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के तत्वावधान में सोसाइटी फॉर बॉयोटेक्नोलॉजिस्ट इंडिया (एसबीटीआइ) के सहयोग से चल रहे तीन दिवसीय अंतराष्ट्रीय सम्मेलन जैव प्रौद्योगिकी और आयुर्वेद चिकित्सा पर संवाद के साथ यंग साइंस्टिस्ट अवार्ड से युवा वैज्ञानिक और शोधार्थी सम्मानित हुए।

मुख्य अतिथि राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. अजीत कुमार शासने ने कहा कि आयुर्वेद और जैव प्रौद्योगिकी ने स्वस्थ सेवा में अभूतपूर्ण योगदान दिया। प्राचीन आयुर्वेद चिकित्सा ने विश्व को चिकित्सा सेवा की राह दिखाया।

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह ने कहा कि जैव प्रौद्योगिकी और आयुर्वेद का समागम स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में एक शक्तिशाली वदलाव का प्रतिनिधित्व करता है। आयुर्वेद के सदियों पुराने ज्ञान का सम्मान करके और इसे बॉयोटेक की प्रगति के साथ जोड़कर, हम आधुनिक स्वास्थ्य चुनौतियों के लिए अभिनव, प्राकृतिक समाधान का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। इस सहयोग से नए और नवीन तरीकों से स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने में मदद मिल सकती है। आयुर्वेद और बॉयोमेडिकल साइंस में बॉयोटेक्नोलॉजी के अनुप्रयोग पर आयोजित इस अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन नवाचार और अनुसंधान को बढ़ावा देने का अवसर प्रदान करेगा। यह सम्मेलन जैव प्रौद्योगिकी विज्ञान और आयुर्वेद को सेतु के रूप में जोड़ा हैं, रोजगार के लिए आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस ने भी भविष्य में चुनौती दी है, बाजार में बदलाव हो रहा है, स्वयं को तैयार करे, स्टडी स्किल की विकसित कर, आई ने विज्ञान, कृषि और में सहयोग किया है।

इन्हें मिला यंग साइंस्टिस्ट अवार्डः यस.बी.टी.आई. की सचिव डॉ. अंजू. टी. आर. जी. ने यंग साइंस्टिस्ट अवार्ड की घोषणा किया।

के.ए.पी.एल. अवॉर्ड डॉ. रश्मि शाही सहायक आचार्य महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर, आई.बी.एस. अवार्ड डॉ. मंतव्य सिंह सहायक आचार्य महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर, श्री सी. वी. जैकब अवॉर्ड अंजली राय शोधार्थी बॉयोटेक महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर, श्री के. एन. नरसिंहा अवॉर्ड बनारश्री बंदोपाध्याय एमिटी यूनिवर्सिटी नोएडा, कुंनथ फार्मास्युटिकल अवॉर्ड श्रीमती पार्वती राजेश (यू.एस.ए) प्रो. एडथिल विजयन अवार्ड डॉ. मध्यमंची प्रदीप (श्रीलंका) ओरल प्रेसेंटेशन अवॉर्ड प्रथम पुरस्कार–नव्या अग्रवाल एमिटी यूनिवर्सिटी नोएडा, द्वितीय पुरस्कार आकांक्षा गुप्ता शोधार्थी बी.बी.डी. यूनिवर्सिटी लखनऊ, तृतीय पुरस्कार–पूजा दुबे, शोधार्थी बनारस हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी, पोस्टर प्रस्तुति अवॉर्ड प्रथम पुरस्कार, शिवम पाण्डेय, एम.जी. यू.जी, द्वितीय पुरस्कार अनुप्रिया वेलु एम.जी.यू.जी, तृतीय पुरस्कार नेहा श्रीनिवास जैव प्रौद्योगिकी का नवाचार संरक्षण स्वर्णिम भविष्य का आधार है। डॉ. कनिका मलिक जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नवाचारों का संरक्षण विषय पर वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कनिका मलिक ने कहा कि जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नवाचारों का संरक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण है,

क्योंकि यह न केवल वैज्ञानिक और व्यावसायिक प्रगति को सुनिश्चित करता है, बल्कि सामाजिक और आर्थिक विकास में भी योगदान देता है। विभिन्न कानूनी उपायों जैसे पेटेंट, ट्रेडमार्क, कॉपीराइट और गोपनीयता समझौते नवाचारों के संरक्षण के प्रभावी तरीके हैं। हालांकि, इसके साथ–साथ इस क्षेत्र में कई चुनौतियां भी हैं, जिनका समाधान समय और प्रयास की मांग करता है। नवाचारों का संरक्षण से जैव प्रौद्योगिकी का भविष्य उज्जवल और लाभकारी हो सकता है।

बॉयोटेक्नोलॉजी चिकित्सा, कृषि, उद्योग और पर्यावरण संरक्षण जैसे कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में क्रांतिकारी बदलाव ला चुका है। जैव प्रौद्योगिकी में नवाचारों का संरक्षण, इस क्षेत्र की प्रगति और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

कोविड 19 के इलाज में सार्स–कोव–2 हो सकता है सहायक, प्रो. उमेश यादव सार्स–कोव–2 मुख्य प्रोटीज़ के अवरोधक के रूप में प्राकृतिक यौगिकों की कम्प्यूटेशनल जांच पर प्रो. उमेश यादव जी ने शोधार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए कहा कि कम्प्यूटेशनल

सम्मेलन के समापन समारोह में विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए प्रो. उमेश यादव एवं उपस्थित श्रोतागण

बायोलॉजी और मॉलीक्यूलर डॉकिंग तकनीकों का उपयोग सार्स–कोव–2 मुख्य प्रोटीज़ के अवरोधक के रूप में कार्य करता हैं। कोविड 19 जैसे संक्रमणों के इलाज में सार्स–कोव–2 सहायक हो सकता है। सार्स–कोव–2, जिसे कोविड 19 का कारण बनने वाला वायरस माना जाता है। प्रोटीज़ मुख्य प्रोटीज़ वायरस के प्रोटीन को काटने का कार्य करता है, जिससे वायरस के जीवनचक्र को प्रगति मिलती है। इस प्रोटीज़ के अवरोधक के रूप में प्राकृतिक यौगिकों की जांच, वायरस के खिलाफ संभावित उपचार विधियों के रूप में उभरकर सामने आई है। मुख्य प्रोटीज़ के सक्रियता को रोकने से वायरस के प्रसार को रोका जा सकता है और इसके कारण कोविड–19 जैसे संक्रमणों के इलाज के लिए एक प्रभावी तरीका विकसित किया जा सकता है।

अतिथि देवों भवः का सत्कार दिया महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर ने प्रो. चंचाई बोनला सम्मेलन में अपने अनुभव को साझा करते हुए चिल्लांगकोर्ण विश्वविद्यालय बैंकाक के प्रो. चंचाई बोनला ने अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के आतिथ्य सेवा से प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि भारत की यह यात्रा और महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में आध्यात्मिक, आयुर्वेद और विज्ञान के अद्भुत संतुलन शैक्षणिक भ्रमण में आत्मसात किया। यहां आना स्वर्ग की भाती रहा, अपनी संस्कृति में रचा बसा यह विश्वविद्यालय अतिथि देवों भव के भाव को पूर्ण करता है। प्रो. सुमादी डी. सिल्वा श्रीलंका, प्रो. रूपाली गुप्ता, डॉ. गौतम आनंद इजरायल, डॉ. विवेक मौर्या कोरिया, डॉ. हेमंत बीड, डॉ. रोहित उपाध्याय यू.एस.ए. सहित भारत के विविध राज्यों से आए वरिष्ठ वैज्ञानिक और शोधार्थियों ने सम्मेलन में भाग लेजर उत्साहित रहें।

संयोजक प्रो. सुनील कुमार सिंह ने कहा कि बॉयोटेक्लॉजी में नए शोध नवाचार और सृजन से अन्वेषकीय कार्य हो रहे है। इस सम्मलेन में जैव प्रौद्योगिकी चिकित्सा और आयुर्वेद के संभावनाओं को तलाशने का अवसर मिला है।

आयुर्वेद को वैज्ञानिक पद्धति से सत्यापित करके इसके प्रभावी पहलुओं को अपनाना चाहिए। पारंपरिक ज्ञान को वैज्ञानिक ढंग से समझने के लिए एक अग्रगामी, निष्पक्ष और समावेशी दृष्टिकोण आवश्यक है। सत्र में विशेषज्ञों का मानना रहा कि स्टेम सेल रिसर्च और कैंसर बॉयोलॉजी में हो रहे नवीनतम विकास, भविष्य में चिकित्सा विज्ञान के लिए क्रांतिकारी साबित होंगे।

सम्मेलन में उपस्थित शोधार्थियों और विशेषज्ञों ने इन महत्वपूर्ण विषयों पर अपने शोध पत्र भी प्रस्तुत किए और जैव प्रौद्योगिकी में नए अवसरों को लेकर गहन चर्चा की। शोधकर्ताओं ने जैव प्रौद्योगिकी, सूक्ष्म जीवविज्ञान, कैंसर बॉयोलॉजी, औषधीय पौधों और स्वास्थ्य देखभाल में प्राकृतिक संसाधनों से संबंधित अपने नवीनतम अनुसंधान कार्य प्रस्तुत किए।

शोध प्रस्तुतियों के बाद प्रतिभागियों और विशेषज्ञों के बीच विचार–विमर्श हुआ, जिसमें शोध की संभावनाओं, व्यावहारिक अनुप्रयोगों और भविष्य की दिशा पर चर्चा की गई। यह सत्र सम्मेलन के मुख्य आकर्षणों में से एक रहा और इसमें प्रतिभागियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

नवीनतम दवा खोज तकनीकों पर चर्चा की और आधुनिक जैव प्रौद्योगिकी के उपयोग से नई औषधियों के विकास की संभावनाओं को रेखांकित किया।

इस सत्र में शोधकर्ताओं और विशेषज्ञों ने नवीन दवा विकास, औषधीय जैव प्रौद्योगिकी और चिकित्सा अनुसंधान के क्षेत्र में नवीनतम रुझानों पर भी गहन चर्चा की। संचालन डॉ. रश्मि शाही, डॉ. अनुकृति, प्रशांत गुप्ता, जिज्ञासा, असफिया, शगुन शाही, अनुष्का द्विवेदी, श्वेता गिरी, किया।

समापन समारोह में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अनुपमा ओझा ने किया। आयोजन में प्रमुख रूप से आयोजन सचिव अमित कुमार दुबे, डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. धिरेन्द्र कुमार सिंह, डॉ. पवन कुमार कनौजिया, डॉ. अवेधनाथ सिंह, डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव, डॉ. अंकिता मिश्रा, डॉ. कीर्ति कुमार यादव, डॉ. अखिलेश कुमार दूबे, डॉ. प्रेरणा अदिती, डॉ. किरन कुमार ए., डॉ. आशुतोष श्रीवास्वत, श्री धन्नजय पाण्डेय, डॉ. रश्मि झाँ, सुश्री सृष्टि यदुवंशी, श्री अनिल कुमार पटेल, श्री जन्मेजय सोनी, डॉ. रश्मि शाही, डॉ. अनुकृति राज, डॉ. मंतव्य सिंह, श्री अनिल कुमार मिश्रा, सुश्री मिताली पटेल, श्री अनिल कुमार शर्मा, श्री पुनीत सिंह सहित सभी विभागों के शिक्षकगण एवं सैकड़ो छात्र–छात्राएं उपस्थित रहें।

## विद्यालयी स्वास्थ्य कार्यक्रम

## नर्सिंग एण्ड पैरामेडिकल संकाय

विद्यालयी स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत प्राथमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं को जागरूक करतीं नर्सिंग की छात्राएं

**दिनांकः 01 अप्रैल, 2025** को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंतर्गत संचालित नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय में एएनएम द्वितीय वर्ष में अध्ययनरत कुल 25 छात्राओं ने 3 शिक्षिकाओं (मिस अनु पटेल, मिस नैनशी मिश्रा, मिस सिमरन गुप्ता) के मार्गदर्शन में घुरहू टोला, चरगावां, गोरखपुर में स्थित प्राथमिक विद्यालय में दंत स्वच्छता और व्यक्तिगत स्वच्छता पर विद्यालयी स्वास्थ्य कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें कक्षा 5 तक के छात्र–छात्राएं उपस्थित थे जिसमें नुक्कड़ नाटक और चार्ट प्रस्तुति की मदद से दंत समस्याओं के सामान्य कारण और जोखिम कारक, इसके प्रबंधन और रोकथाम पर स्वास्थ्य शिक्षा प्रस्तुत की। उन्होंने दांतों की समस्याओं के बारे में बताया जैसे मीठा ज्यादा खाना (चॉकलेट, टॉफी और मिठाई खाने से कीड़े लगते हैं), ब्रश न करना (दांत गंदे रहते हैं और सड़ने लगते हैं), सख्त चीजें चबाना (पेंसिल या नाखून चबाने से दांत टूट सकते हैं), जंक फूड खाना (चिप्स और कोल्ड ड्रिंक से दांत कमजोर होते हैं), उन्होंने यह भी बताया कि दांतों की देखभाल हम अलग–अलग तारीके से कर सकते हैं जैसे . रोज ब्रश करें (सुबह और रात को सोने से पहले), खाने के बाद कुल्ला करें (मुंह साफ रखने के लिए), अच्छा खाना खाएं (फल और दूध से दांत मजबूत बनते हैं), चेकअप कराएं (6 महीने में एक बार डॉक्टर को दिखाएं), पानी पिएं (खाने के बाद पानी पीने से मुंह साफ रहता है) अंत में उन्होंने दांत खराब होने से बचने के उपाय बताये जैसे–मीठा कम खाएं (अगर खाएं तो कुल्ला जरूर करें) जंक फूड से बचे (सेहत और दांत दोनों के लिए खराब होता है), दांतों का ध्यान रखें (दांतों से नट्स या सख्त चीजें न तोड़ें), साफ–सफाई रखें (दांत और जीभ दोनों को ब्रश करें) और अगर हम अपने दांतों का ख्याल रखेंगे, तो हमेशा मजबूत और सुंदर दांत रहेंगे और व्यक्तिगत स्वच्छता के महत्व और उसके बारे में बताते हुए कहा की व्यक्तिगत स्वच्छता का महत्व हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह न केवल हमें बीमारियों से बचाता है, बल्कि आत्मविश्वास को भी बढ़ाता है। और हाथों की सफाई के लिये हाथों को साबुन और पानी से कम से कम 20 सेकंड तक धोना चाहिए, विशेष रूप से भोजन से

पहले, बाथरूम के उपयोग के बादए और गंदे स्थानों को छूने के बादए यदि साबुन और पानी उपलब्ध न हों, तो अल्कोहल. आधारित हैंड सैनिटाइज़र का उपयोग किया जा सकता है।

त्वचा की स्वच्छता बनाए रखने के लिए सही प्रकार के साबुन और शैम्पू का उपयोग करें, नाखूनों को नियमित रूप से काटें और साफ रखें।

लंबे नाखूनों में गंदगी जमा हो सकती है जो बीमारियों का कारण बन सकती है। रोज़ाना साफ और सूती कपड़े पहनें। बिस्तर की चादरें और तकिए समय–समय पर धोते रहें, ताकि उन पर कोई बैक्टीरिया या गंदगी न रहे।

स्वच्छता का ध्यान रखते हुए खाना खाएं, साफ और ताजे खाने का सेवन करें। इसके बाद छात्रों को बच्चों को पुरस्कार और खाने की चीजें प्रदान की गईं।

## विद्यालयी स्वास्थ्य कार्यक्रम

## नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय

पर्यावरण स्वच्छता और स्वस्थ आहार विषय पर छात्र–छात्राओं को जागरूक करती नर्सिंग की छात्राएं

दिनांकः 02 अप्रैल, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंर्तगत संचालित नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय के नर्सिंग विभाग में एएनएम द्वितीय वर्ष में अध्ययनरत कुल 50 छात्राओं ने 3 शिक्षिकाओ (मिस अनु पटेल, मिस नैनशी मिश्रा, मिस सिमरन गुप्ता) के मार्गदर्शन में घुरहू टोला, चरगावा, गोरखपुर में स्थित प्राथमिक विद्यालय में पर्यावरण स्वच्छता और स्वस्थ आहार पर स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम का आयोजन किया।

इसमें कक्षा 5 तक के छात्र–छात्राएं उपस्थित थे जिसमें नुक्कड़ नाटक और चार्ट प्रस्तुति की मदद से पर्यावरण स्वच्छता के प्रबंधन और स्वस्थ आहार के महत्व पर स्वास्थ्य शिक्षा प्रस्तुत की। उन्होंने बताया की पर्यावरणीय स्वच्छता का तात्पर्य हमारे आसपास के वातावरण को स्वच्छ, सुरक्षित और स्वास्थ्यवर्धक बनाए रखने से है। इसका उद्देश्य संक्रामक रोगों को रोकना, स्वास्थ्य को बढ़ावा देना और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है। इसके मुख्य सिद्धांतों में स्वच्छ जल की उपलब्धता, अपशिष्ट प्रबंधन, वायु और ध्वनि प्रदूषण नियंत्रण, स्वच्छता उपाय और स्वच्छ पर्यावरण का रखरखाव शामिल हैं। इसे स्वच्छता नियमों, नियमित सफाई, कीट नियंत्रण, जल निकासी प्रबंधन और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से लागू किया जाता है।

स्वस्थ आहार संतुलित पोषक तत्वों से भरपूर भोजन को संदर्भित करता है, जिसका उद्देश्य शरीर को ऊर्जा, वृद्धि और रोग प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करना है। यह शरीर की संपूर्ण कार्यक्षमता को बनाए रखने में सहायक होता है। स्वस्थ आहार के प्रकारों में संतुलित आहार, उच्च–प्रोटीन आहार, कम वसा वाला आहार और चिकित्सीय आहार शामिल हैं।

आहार लेने का सही समय नाश्ते, दोपहर और रात के भोजन में उचित अंतराल बनाए रखना है, जिससे पाचन क्रिया सुचारू बनी रहे और शरीर को आवश्यक पोषक तत्व मिलते रहें।

## प्रवेश प्रक्रिया

## महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

दिनांकः 03 अप्रैल, 2025। नवाचार व आधुनिक शिक्षा का केंद्र महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर ने सत्र 2025–26 के लिए प्रवेश प्रक्रिया आरंभ किया। वर्तमान में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में एमबीबीएस और बीएएमएस सहित कुल 28 पाठ्यक्रम संचालित किया जा रहे हैं। विगत 15 वर्षों से नर्सिंग शिक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर पूर्वांचल के विद्यार्थियों को राष्ट्रीय स्तर पर एक नई पहचान प्रदान करने के साथ वर्ष 2022 से विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अंतर्गत बॉयोटेक्नोलॉजी, बॉयोकेमेस्ट्री, माइक्रोबॉयोलॉजी, मेडिकल माइक्रोबॉयोलॉजी, मेडिकल बॉयोकेमेस्ट्री के स्नातक व परास्नातक पाठ्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं, फार्मेसी संकाय के अंतर्गत डी फार्मा व बी फार्मा, कृषि संकाय के अंतर्गत बीएससी (कृषि) स्नातक, नर्सिंग और पैरामेडिकल संकाय के अंतर्गत बीएससी (नर्सिंग), एएनएम, जीएनएम, नर्स प्रैक्टिशनर क्रिटिकल केयर (एनपीसीसी) एमएससी (नर्सिंग) व पोस्ट बेसिक बीएससी नर्सिंग और पैरामेडिकल संकाय के अंतर्गत 6 विभिन्न पाठ्यक्रम लैब टेक्नीशियन, ऑप्टोमेट्री, एनेस्थीसिया, ऑर्थोपेडिक, इमरजेंसी एंड ट्रॉमा व डायलिसिस में डिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित किया जा रहा हैं। गत वर्ष विश्वविद्यालय ने वाणिज्य संकाय के अंतर्गत बीबीए लॉजिस्टिक्स पाठ्यक्रम का संचालन प्रारंभ किया है। ज्ञात हो की स्थापना के साथ ही विश्वविद्यालय ने उच्च अकादमिक परिवेश हेतु राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय संस्थानों के साथ समझौता ज्ञापन किया है जिसके अंतर्गत शैक्षणिक व शोध सम्बन्धी विषयों पर ज्ञान का आदान–प्रदान किया जा रहा है, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के समस्त पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय अनुदान आयोग व सम्बंधित नियामक संस्थाओं से मान्यता होने के साथ–साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्रावधानों के अनुरूप संचालित किए जा रहे हैं। विश्वविद्यालय विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास व अंतराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी हेतु अतिथि व्याख्यान, सेमिनार, वर्कशॉप व शैक्षणिक भ्रमण

नियमित रूप से आयोजित करता है। विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट www.mgug.ac.in के माध्यम से इस सत्र में प्रवेश हेतु जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के समस्त पाठ्यक्रमों के प्रवेश फॉर्म 15 मार्च 2025 से विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट www.mgug.ac.in के माध्यम से भरे जा रहे है, प्रवेश फॉर्म भरने की आखिरी तिथि 30 अप्रैल 2025 है तथा प्रवेश परीक्षा 18, 21 और 25 मई 2025 को विश्वविद्यालय परिसर में स्थित विभिन्न संकायों में सम्पन्न करवाई जाएगी। प्रवेश परीक्षा का परिणाम 02 जून 2025 को विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट पर प्रकाशित किया जायेगा। मेरिट के आधार पर प्रवेश दिनांक 05 जून से 20 जून तक लिया जायेगा और नए सत्र की कक्षाएं 15 जुलाई से संचालित की जायेंगी।

## स्वास्थ्य परीक्षण

## नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय

घुरहू टोला, चरगावां, गोरखपुर में विभिन्न आयु वर्ग के बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण करतीं नर्सिंग की छात्राएं

दिनांकः 03 अप्रैल, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंर्तगत संचालित नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय के नर्सिंग विभाग में एएनएम द्वितीय वर्ष में अध्ययनरत कुल 50 छात्राओं ने 3 शिक्षिकाओ (मिस अनु पटेल, मिस नैनशी मिश्रा, मिस सिमरन गुप्ता) के मार्गदर्शन में घुरहू टोला, चरगावां, गोरखपुर में विभिन्न आयु वर्ग के (पांच वर्ष से कम, वयस्क, बुजुर्ग, प्रसवपूर्व और प्रसवोत्तर माता) लिए विभिन्न क्लीनिक का आयोजन किया।

इसमें कुल आयु वर्ग में लगभग 40.50 लोग उपस्थित थे। जिसमें उन्होंने पांच वर्ष से कम आयु में (मानवमितीय माप जैसे उनकी ऊंचाई, वजन, सिर की परिधि, छाती की परिधि, मध्य ऊपरी भुजा की परिधि, पेट की परिधि का आकलन किया), वयस्कों और बड़े में (शारीरिक परीक्षण जैसे सिर से पैर तक सामान्य परीक्षण और विभिन्न शारीरिक प्रणालियों में परिवर्तन से संबंधित प्रणालीगत परीक्षण), गर्भवती महिलाओं में (प्रसवपूर्व तथा प्रसवोत्तर में बॉडी मास इंडेक्स और शारीरिक परीक्षण के सभी घटकों का आकलन तथा पेरिनियम का परीक्षण) किया साथ ही पर्याप्त आहार पद्धति, जीवनशैली में बदलाव और व्यक्तिगत स्वच्छता के बारे में स्वास्थ्य शिक्षा भी दी।

उन्होंने बच्चों को शिक्षा दी की, कभी भी खाने से पहले हाथ धोने की आदत डालें, बाथरूम जाने के बाद, बाहर खेलकर आने के बाद और किसी बीमारी के लक्षण महसूस होने पर हाथ अच्छे से धोने चाहिए। पानी का उपयोग करें, हाथों को कम से कम 20 सेकंड तक धोना चाहिए। दांतों को दो बार ब्रश करें।

नाखूनों को नियमित रूप से काटना चाहिए। हमेशा स्वच्छ पानी पिएं, ताजे और साफ खाद्य पदार्थों का सेवन करें।

कच्ची सब्जियां या फल खाने से पहले उन्हें अच्छी तरह से धोकर खाएं। बुजुर्गों को स्वास्थ्य शिक्षा देते हुए बताया कि बुजुर्गों का स्वास्थ्य उनके शारीरिक और मानसिक भलाई के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। सही आहार और व्यक्तिगत स्वच्छता के द्वारा वे अपनी सेहत को बेहतर बना सकते हैं और जीवन को गुणवत्ता से भरपूर जी सकते हैं। बुजुर्गों को प्रोटीन, फाइबर, विटामिन और मिनरल्स से भरपूर भोजन खाना चाहिए।

गर्भवती और प्रसवोत्तर माताओं के लिए पोषण, जीवनशैली में सुधार और व्यक्तिगत स्वच्छता के महत्व को समझाना बेहद महत्वपूर्ण है। पोषण पैटर्न में उन्हें संतुलित आहार लेने की सलाह दी गई, जिसमें प्रोटीन (दूध, दालें, अंडे), आयरन (हरी पत्तेदार सब्जियां), कैल्शियम (दूध, पनीर) और फोलिक एसिड (फल, अनाज) को शामिल करने के लिए बोला।

इसके अलावा, आयरन और कैल्शियम की गोलियाँ नियमित रूप से लेने की सलाह दी गई, तले-भुने और जंक फूड से बचने के लिए भी कहा। गर्भवती माताओं को शारीरिक गतिविधि में हल्के व्यायाम या रोजाना टहलने की सलाह दी, साथ ही उनको बताया कि पर्याप्त आराम और नींद भी बहुत जरूरी होता है।

मानसिक तनाव को कम करने के लिए ध्यान और गहरी सांस लेने की तकनीकें अपनानी चाहिए। यह सभी उपाय न केवल माँ के स्वास्थ्य को बेहतर बनाए रखते हैं, बल्कि शिशु के विकास और संक्रमण से बचाव में भी मदद करते हैं।

इस तरह से, सही पोषण, जीवनशैली में सुधार और स्वच्छता अपनाकर आप स्वस्थ रह सकती हैं और अपने शिशु को एक स्वस्थ जीवन दे सकती हैं।

## स्वास्थ्य परीक्षण

## नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय

ग्रामीणों का स्वास्थ्य परीक्षण करती नर्सिंग की छात्राएं

**दिनांकः 04 अप्रैल, 2025** को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंतर्गत संचालित नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय के नर्सिंग विभाग में एएनएम द्वितीय वर्ष में अध्ययनरत कुल 50 छात्राओं ने 2 शिक्षिकाओ (मिस अनु पटेल, मिस प्रिया पाठक) के मार्गदर्शन में घुरहू टोला, चरगावां, गोरखपुर, में विभिन्न आयु वर्ग के (पांच वर्ष से कम, वयस्क, बुजुर्ग, प्रसवपूर्व और प्रसवोत्तर माता) लिए विभिन्न क्लीनिक का आयोजन किया। इसमें कुल आयु वर्ग में लगभग 40–50 लोग उपस्थित थे।

जिसमें उन्होंने पांच वर्ष से कम आयु में (मानवमितीय माप जैसे उनकी ऊंचाई, वजन, सिर की परिधि, छाती की परिधि, मध्य ऊपरी भुजा की परिधि, पेट की परिधि का आकलन किया) वयस्कों और बड़े में (शारीरिक परीक्षण जैसे सिर से पैर तक सामान्य परीक्षण और विभिन्न शारीरिक प्रणालियों में परिवर्तन से संबंधित प्रणालीगत परीक्षण), गर्भवती महिलाओं में (प्रसवपूर्व तथा प्रसवोत्तर में बॉडी मास इंडेक्स और शारीरिक परीक्षण के सभी घटकों का आकलन तथा पेरिनियम का परीक्षण) किया साथ ही पर्याप्त आहार पद्धति, जीवनशैली में बदलाव और व्यक्तिगत स्वच्छता के बारे में स्वास्थ्य शिक्षा भी दी।

उन्होंने बच्चों को शिक्षा दी की, कभी भी खाने से पहले हाथ धोने की आदत डालें, बाथरूम जाने के बाद, बाहर खेलकर आने के बाद और किसी बीमारी के लक्षण महसूस होने पर हाथ अच्छे से धोने चाहिए। पानी का उपयोग करें, हाथों को कम से कम 20 सेकंड तक धोना चाहिए। दांतों को दो बार ब्रश करें। नाखूनों को नियमित रूप से काटना चाहिए। हमेशा स्वच्छ पानी पिएं, ताजे और साफ खाद्य पदार्थों का सेवन करें। कच्ची सब्जियां या फल खाने से पहले उन्हें अच्छी तरह से धोकर खाएं। बुजुर्गों को स्वास्थ्य शिक्षा देते हुए बताया कि बुजुर्गों का स्वास्थ्य उनके शारीरिक और मानसिक भलाई के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। सही आहार और व्यक्तिगत स्वच्छता के द्वारा वे अपनी सेहत को बेहतर बना सकते हैं और जीवन को गुणवत्ता से भरपूर जी सकते हैं। बुजुर्गों को प्रोटीन, फाइबर, विटामिन, और मिनरल्स से भरपूर भोजन खाना चाहिए।

गर्भवती और प्रसवोत्तर माताओं के लिए पोषण, जीवनशैली में सुधार और व्यक्तिगत स्वच्छता के महत्व को समझाना बेहद महत्वपूर्ण है। पोषण पैटर्न में उन्हें संतुलित आहार लेने की सलाह दी गई, जिसमें प्रोटीन (दूध, दालें, अंडे), आयरन (हरी पत्तेदार सब्जियां), कैल्शियम (दूध, पनीर), और फोलिक एसिड (फल, अनाज) को शामिल करने के लिए बोला। इसके अलावा, आयरन और कैल्शियम की गोलियाँ नियमित रूप से लेने की सलाह दी गई, तले–भुने और जंक फूड से बचने के लिए भी कहा। गर्भवती माताओं को शारीरिक गतिविधि में हल्के व्यायाम या रोजाना टहलने की सलाह दी, साथ ही उनको बताया कि पर्याप्त आराम और नींद भी बहुत जरूरी होता है। मानसिक तनाव को कम करने के लिए ध्यान और गहरी सांस लेने की तकनीकें अपनानी चाहिए। यह सभी उपाय न केवल माँ के स्वास्थ्य को बेहतर बनाए रखते हैं, बल्कि शिशु के विकास और संक्रमण से बचाव में भी मदद करते हैं। इस तरह से, सही पोषण, जीवनशैली में सुधार और स्वच्छता अपनाकर आप स्वस्थ रह सकती हैं और अपने शिशु को एक स्वस्थ जीवन दे सकती हैं।

## कुलाधिपति आगमन

## महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

**दिनांकः 06 अप्रैल, 2025** को मुख्यमंत्री एवं महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ ने विश्वविद्यालय के फैकल्टी का आह्वान किया है कि वे समयानुकूल शिक्षण पद्धतियों को अपनाते हुए विद्यार्थियों के भविष्य को स्वर्णिम बनाने के लिए पूर्ण मनोयोग से जुट जाएं। इस विश्वविद्यालय में संसाधनों की कोई कमी नहीं है। स्थापना के अल्प समय में ही यह रोजगारपरक शिक्षण के एक प्रमुख केंद्र के रूप में प्रतिष्ठित हुआ है। अब लक्ष्य यह होना चाहिए कि यह विश्वविद्यालय प्रदेश और देश के उच्च शिक्षण संस्थानों के लिए रोल मॉडल बने।

कुलाधिपति योगी रविवार शाम एमजीयूजी का निरीक्षण करने के बाद विश्वविद्यालय प्रशासन और फैकल्टी के साथ वर्तमान व्यवस्थाओं और भावी कार्ययोजना की समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने ने कहा कि एमजीयूजी का अकादमिक इंफ्रास्ट्रक्चर विश्व स्तरीय स्वरूप में विकसित हो रहा है। अकादमिक इंफ्रास्ट्रक्चर के अलावा 1475 सीट का आडिटोरियम बन कर लगभग तैयार है। इसके साथ ही 9500 की क्षमता का स्टेडियम भी बनना है। सीएम योगी ने इस बात पर प्रसन्नता जताई कि 28 अगस्त 2021 को तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के हाथों उद्घाटित इस विश्वविद्यालय ने चार साल से भी कम समय में एमबीबीएस और बीएएमएस जैसे महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम शुरू कर खुद को एक प्रतिमान के रूप में स्थापित किया है। इसके नर्सिंग कॉलेज की ख्याति पहले से ही है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह विश्वविद्यालय राष्ट्रीय

शिक्षा नीति के प्रावधानों को भी अपनाने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

समीक्षा के दौरान गोरखनाथ मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. अनुराग श्रीवास्तव ने बताया कि विश्वविद्यालय में मेडिकल साइंस, नर्सिंग, पैरामेडिकल, एग्रीकल्चर, एलॉयड हेल्थ साइंसेज और फार्मेसी से संबंधित डिप्लोमा से लेकर मास्टर तक के दो दर्जन पाठ्यक्रम संचालित हैं। साथ ही बीबीए लॉजिस्टिक का कोर्स भी शुरू हो चुका है। गत सत्र से 100 सीटों की क्षमता से एमबीबीएस कोर्स शुरू हो गया है। एलॉयड हेल्थ साइंस में माइक्रोबायोलॉजी, बायो टेक्नोलॉजी, बायो केमिस्ट्री जैसे पाठ्यक्रम के साथ ही यहां के सभी पाठ्यक्रम रोजगारपरक हैं और उनकी बहुत मांग है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्य में यहां पाठ्यक्रम ऐसे हैं जो समाज के लिए लाभकारी, विद्यार्थी के लिए सहज रोजगारदायी हैं। हमारा प्रयास है कि एमबीबीएस की सीटों को और बढ़ाया जाए। आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम ने बताया कि एमजीयूजी के आयुर्वेद कॉलेज बीएएमएस कोर्स के लिए विद्यार्थियों के पसंदीदा संस्थानों में शामिल है। यहां की सभी सीटें शरुआती काउंसिलिंग में ही भर जाती हैं। आयुर्वेद कॉलेज से संबद्ध पंचकर्मा सेंटर में दक्षिण भारत से भी बेहतरीन सुविधाएं उपलब्ध हैं।

मेडिकल कॉलेज और आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य की बातों को सुनने के बाद सीएम योगी ने कहा कि आने वाले समय में भारत दुनिया में मेडिकल टूरिज्म का हब बनने जा रहा है। मेडिकल टूरिज्म, अन्य प्रकार के टूरिज्म की तुलना में अधिक व्यापक और महत्वपूर्ण होगा। इसके लिए एमजीयूजी को भी अभी से तैयारी शुरू करनी होगी। इसके लिए मेडिकल एजुकेशन को टेक्नोलॉजी से जोड़ना समय की मांग है। सीएम योगी ने फैकल्टी का आह्वान किया कि वे ग्लोबल मार्केट की डिमांड का अध्ययन करें और उसके अनुरूप पाठ्यक्रम तैयार करें। हमारा जोर मॉडर्न एज कोर्सेज पर होना चाहिए।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री एवं एमजीयूजी के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ ने वर्तमान शैक्षणिक सत्र की प्रवेश योजना की जानकारी ली और अबतक विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध सुविधाओं की भी समीक्षा की। उन्होंने कहा कि यहां विद्यार्थियों को उनके अध्ययन के अनुरूप विश्व स्तर की सुविधाएं मिलनी चाहिए। साथ ही यहां फैकल्टी. स्टूडेंट्स रिलेशन का कोड ऑफ कंडक्ट बनाकर एक विशिष्ट परिसर संस्कृति विकसित की जाए।

समीक्षा के क्रम में एमजीयूजी के कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह ने मुख्यमंत्री को बताया कि रोजगारपरक कई नए पाठ्यक्रमों का संचालन करने के साथ ही विश्वविद्यालय के पास शोध—अनुसंधान के लिए कई प्रतिष्ठित संस्थाओं के साथ एमओयू की भी विस्तृत श्रृंखला है। शिक्षा, चिकिसा, कृषि अनुसंधान, रोजगार व ग्राम्य विकास के क्षेत्र में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, लुम्बिनी बौद्ध विश्वविद्यालय नेपाल, दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजाति विश्वविद्यालय, एम्स गोरखपुर, केजीएमयू लखनऊ, आरएमआरसी गोरखपुर, महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान अहमदाबाद, वैद्यनाथ आयुर्वेद, इंडो—यूरोपियन चौंबर ऑफ स्माल एंड मीडियम इंटरप्राइजेज, बाबा साहब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ, राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, राष्ट्रीय कृषि उपयोगी सूक्ष्मजीव ब्यूरो, भारतीय बीज विज्ञान संस्थान, जुबिलेंट एग्रीकल्चर रूरल डेवलपमेंट सोसाइटी, लॉजिस्टिक सेक्टर स्किल काउंसिल आदि के साथ एमओयू किया है। इन एमओयू के माध्यम से अलग—अलग क्षेत्रों में विश्व स्तरीय शोध अनुसंधान के साथ ही स्टार्टअप को बढ़ावा दिया जा रहा है।

इस अवसर पर एमजीयूजी से संबद्ध गोरखनाथ चिकित्सालय बालापार के निदेशक डॉ. रोहित पाटनी, नर्सिंग कॉलेज की प्राचार्या डॉ. डीएस अजीथा, संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता डॉ. सुनील कुमार सिंह, फार्मेसी संकाय के अधिष्ठाता डॉ. शशिकांत सिंह आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहें।

विश्वविद्यालय में जारी निर्माण कार्यों का जायजा लिया सीएम ने अकादमिक कार्यों और भावी कार्ययोजना की समीक्षा करने के साथ ही सीएम योगी ने महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में जारी निर्माण कार्यों का निरीक्षण किया।

इस दौरान उन्होंने निर्माण कार्य की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने और तय समय पर कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए।

## विश्व स्वास्थ्य दिवस

जंगल कौड़िया, गोरखपुर में स्वास्थ्य जागरूकता अभियान में नर्सिंग की छात्राएं

## नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय

दिनांकः 07 अप्रैल, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंतर्गत संचालित नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय के नर्सिंग विभाग में अध्ययनरत एएनएम द्वितीय वर्ष के छात्राओं ने दो शिक्षिकाओ (मिस शक्ति और मिस सौम्या) के मार्गदर्शन में जंगल कौड़िया, गोरखपुर में स्थित सामुदायिक क्षेत्र में विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर थीम (स्वस्थ शुरुआत, आशावान भविष्य) के तहत पोस्टर प्रस्तुति के माध्यम से सामूहिक स्वास्थ्य शिक्षा प्रस्तुति की।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य समुदाय के लोगों को पर्यावरणीय स्वच्छता और व्यक्तिगत स्वच्छता के महत्व की जानकारी देना था।

इसका उद्देश्य बीमारियों से बचाव, स्वस्थ जीवनशैली को प्रोत्साहन देना और स्वच्छ वातावरण का निर्माण करना है। गंदगी, दूषित जल, अस्वच्छ आदतें और कचरे का अनुचित निपटान इसके मुख्य कारण हैं। इससे त्वचा रोग, दस्त, हैजा, डेंगू जैसे रोग हो सकते हैं। नर्सिंग छात्रों ने व्यक्तिगत स्वच्छता, दंत स्वच्छता, मासिक धर्म स्वच्छता, और स्वस्थ खानपान की आदतों पर जागरूकता फैलाई।

इस शिक्षा कार्यक्रम से लोगों को साफ–सफाई बनाए रखने, नियमित हाथ धोने, साफ पानी पीने, पौष्टिक भोजन करने और मासिक धर्म के दौरान स्वच्छ साधनों का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया गया।

छात्राओं ने पोस्टर के माध्यम से सरल भाषा में और चित्रों के द्वारा समुदाय के लोगों को स्वच्छता से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियाँ दीं। उन्होंने बताया कि कैसे नियमित स्नान, साफ कपड़े पहनना, नाखून काटना, दांतों की सफाई करना संक्रमण से बचा सकता है। साथ ही उन्होंने बताया कि खुले में शौच, गंदा पानी और कूड़े का इधर–उधर फेंकना न केवल वातावरण को दूषित करता है, बल्कि यह गंभीर बीमारियों को जन्म देता है।

इस शिक्षा अभियान में विशेष रूप से बच्चों, महिलाओं और बुजुर्गों को शामिल कर उन्हें स्वस्थ आदतें अपनाने के लिए प्रेरित किया गया।

यह कार्यक्रम हमें यह सिखाता है कि स्वच्छता केवल एक आदत नहीं, बल्कि एक जिम्मेदारी है। यदि हम स्वस्थ रहना चाहते हैं तो हमें अपने घर, शरीर और आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखना होगा।

स्वस्थ जीवन की शुरुआत स्वच्छता से होती है और स्वच्छ समाज ही एक सशक्त और आशावान भविष्य की नींव रखता है।

## कृत्रिम बुद्धिमत्ता परिचय एवं कृषि : अतिथि व्याख्यान

### कृषि संकाय

विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए श्री दर्शन श्रीवास्तव एवं श्री सच्चिदानंद चतुर्वेदी

अतिथियों के संग डीन, प्राध्यापक एवं विद्यार्थी

**दिनांकः 11 अप्रैल, 2025** को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंतर्गत संचालित कृषि संकाय में शुक्रवार को 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता का परिचय एवं कृषि में इसके अनुप्रयोग' विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में श्री सच्चिदानंद चतुर्वेदी एवं श्री दर्शन श्रीवास्तव, सहायक आचार्य, महाराणा प्रताप इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, गोरखपुर से उपस्थित रहे। कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दुबे द्वारा अतिथियों को अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया गया।

अपने व्याख्यान में अतिथि वक्ताओं ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता के सिद्धांतों एवं कृषि क्षेत्र में इसके उपयोग की विस्तृत जानकारी प्रदान की। श्री सच्चिदानंद चतुर्वेदी ने बताया कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता आज की कृषि को अधिक स्मार्ट और उन्नत बना रही है। की मदद से सटीक खेती की जा रही है, जिसमें सेंसर और ड्रोन का उपयोग करके मिट्टी की गुणवत्ता, नमी और पोषक तत्वों का विश्लेषण किया जाता है। इससे उर्वरक, पानी और बीजों का सही मात्रा में उपयोग संभव हो पाता है। फसलों में लगने वाले रोगों और कीटों का शुरुआती चरण में पता लगाकर समय रहते उनका उपचार किया जा सकता है। साथ ही, आधारित मशीनें और रोबोट्स खेतों में बोआई, कटाई और सिंचाई जैसे कार्यों को तेजी और कुशलता से पूरा कर रहे हैं। श्री दर्शन श्रीवास्तव ने कहा कि मौसम का सटीक पूर्वानुमान देकर किसानों को प्राकृतिक आपदाओं से बचने में मदद करता है और बाजार में फसल के मूल्य का पूर्वानुमान लगाकर उन्हें सही समय पर बेचने का अवसर भी देता है।

इस तरह कृषि को अधिक

लाभदायक, टिकाऊ और भविष्य के लिए तैयार बना रहा है।

कार्यक्रम का संचालन छात्रा प्रगति सिंह एवं आभार ज्ञापन संजना गुप्ता द्वारा किया गया। इस अवसर पर कृषि संकाय के डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ. आयुष कुमार पाठक, डॉ. सास्वती प्रेमकुमारी एवं डॉ. नवनीत सिंह सहित सभी छात्र–छात्राएं उपस्थित रहें।

## 30 दिवसीय सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण कार्यक्रम

## फार्मेसी संकाय

फार्मेसी संकाय के प्राध्यापक एवं विद्यार्थी

दिनांकः 12 अप्रैल, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के फार्मेसी संकाय में आज एक भव्य समापन समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें उन्नति फाउंडेशन द्वारा निःशुल्क संचालित 30 दिवसीय सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण कार्यक्रम की सफलता का उत्सव मनाया गया।

समारोह की शुरुआत फार्मेसी विभाग के प्रमुख डॉ. शशिकांत सिंह द्वारा दीप प्रज्वलन से हुई, जिससे कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

यह पहल यूएनएक्सटी प्रमुख पहल के अंतर्गत छात्रों के संप्रेषण कौशल, आत्मविश्वास, नेतृत्व गुण और पेशेवर शिष्टाचार को निखारने के उद्देश्य से प्रारंभ की गई थी। पूरे प्रशिक्षण के दौरान विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया और आज के समारोह में उन्होंने अपनी क्षमता का उत्कृष्ट प्रदर्शन अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का संचालन अनामिका पांडेय, अमन यादव, आदर्श कुमार और अजय सुभाषचंद यादव ने प्रभावशाली ढंग से किया। मंच पर अपना अनुभव साझा करते हुए छात्रों ने बताया कि कैसे इस प्रशिक्षण ने उनकी व्यक्तित्व को निखारा, अंतर–व्यक्तिगत कौशल को सुदृढ़ किया और आत्मविश्वास को बढ़ाया।

इस कार्यक्रम में 'गणेश वंदना नृत्य', 'स्वागत गीत', भाषण प्रतियोगिता, वाद–विवाद प्रतियोगिता, 'एकल एवं समूह नृत्य', 'सांस्कृतिक गीत', 'लाइट एक्टिंग', 'सोलो डांस', 'ग्रुप डांस', 'संघर्ष गीत', 'सनशाइन सॉन्ग' जैसे विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुति छात्रों द्वारा दी गई।

मुख्य अतिथि फार्मेसी संकाय के प्रधानाचार्य डॉ. शशिकांत सिंह ने छात्रों की इस जबरदस्त प्रस्तुति की सराहना करते हुए कहा कि केवल 30 दिनों में विद्यार्थियों में जो परिवर्तन देखा गया, वह अत्यंत प्रेरणादायक है।, सॉफ्ट स्किल कौशल प्रशिक्षक श्री शिवानंद त्रिपाठी और कक्षा समन्वयक सुश्री श्रेया मद्धेशिया ने बताया कि यह कार्यक्रम युवाओं को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए सशक्त और सक्षम रूप से तैयार करता है।

कार्यक्रम के दौरान फार्मेसी संकाय के शिक्षकगण में सुश्री जुही तिवारी, सुश्री नंदिनी जयसवाल, श्रेया मद्धेशिया, श्री प्रवीन कुमार सिंह, डॉ. अभिषेक कुमार सिंह और डॉ. अमित उपाध्याय उपस्थित रहें।

कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन अजय यादव और अंकिता ने किया। विश्वविद्यालय ने छात्रों को सशक्त बनाने के प्रति उन्नति फाउंडेशन की अटूट प्रतिबद्धता के लिए हार्दिक आभार व्यक्त किया और भविष्य में होने वाले प्रयासों में निरंतर सहयोग की आशा जताई।

## ऑनलाइन अतिथि व्याख्यान

## वाणिज्य संकाय

ऑनलाइन अतिथि व्याख्यान के दौरान वाणिज्य संकाय के विद्यार्थी

दिनांकः 14 अप्रैल, 2025 को महायोगी गोरक्षनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के वाणिज्य संकाय के प्रबंधन विभाग द्वारा दिनांक 14 अप्रैल 2025, सोमवार को 'रिसर्च मेथडोलॉजी' विषय पर एक ऑनलाइन विशेषज्ञ व्याख्यान का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मारवाड़ी विश्वविद्यालय, राजकोट, गुजरात के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. विकाश कुमार रूप मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहें। उन्होंने 'लॉजिस्टिक्स के संदर्भ में सैम्पलिंग एवं सैम्पलिंग डिज़ाइन' विषय पर छात्रों और संकाय सदस्यों को संबोधित किया।

इस व्याख्यान में बीबीए (ऑनर्स) इन लॉजिस्टिक्स के छात्र एवं संकाय सदस्य बड़ी संख्या में शामिल हुए और सत्र में सक्रिय रूप से भाग लिया। डॉ. रूप, जो अकादमिक उत्कृष्टता और व्यवहारिक दृष्टिकोण के लिए जाने जाते हैं, ने लॉजिस्टिक्स अनुसंधान में सैम्पलिंग तकनीकों के महत्व पर गहन प्रकाश डाला। उन्होंने प्राथमिकता एवं अप्रायिकता सैम्पलिंग के विभिन्न प्रकारों की विस्तार से व्याख्या की और बताया कि ये विधियाँ डाटा संग्रहण, निर्णय–निर्माण एवं लॉजिस्टिक्स ऑपरेशन्स रिसर्च

में किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

डॉ. रूप ने यह भी स्पष्ट किया कि एक सुव्यवस्थित सैम्पलिंग डिज़ाइन किस प्रकार लॉजिस्टिक्स अध्ययनों में सटीकता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करता है। उन्होंने वास्तविक लॉजिस्टिक्स परिदृश्यों से उदाहरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि प्रभावशाली सैम्पलिंग रणनीति कैसे सप्लाई चेन प्रदर्शन को अनुकूलित कर सकती है, लागत में कमी ला सकती है और संचालन की दक्षता में वृद्धि कर सकती है।

सत्र का समापन एक संवादात्मक प्रश्नोत्तर दौर से हुआ, जिसमें छात्रों ने अपने संदेह दूर किए और व्यावहारिक उपयोगों की गहराई से जानकारी प्राप्त की। श्री रवि निषाद ने डॉ. रूप के सहज एवं स्पष्ट प्रस्तुतीकरण की सराहना की और उनके द्वारा सिद्धांतों को वास्तविक जीवन की लॉजिस्टिक्स चुनौतियों से जोड़ने की क्षमता को सराहा।

प्रबंधन विभागाध्यक्ष डॉ. तरुण श्याम ने डॉ. विकाश कुमार रूप को उनके समय और अमूल्य योगदान हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने छात्रों को अनुसंधान में सक्रिय भागीदारी हेतु प्रेरित किया और कहा कि वे अपने शैक्षणिक प्रोजेक्ट्स एवं इंटर्नशिप्स में इस ज्ञान का व्यावहारिक रूप से उपयोग करें।

यह व्याख्यान छात्रों के रिसर्च मेथडोलॉजी के ज्ञान को विशेष रूप से तेजी से विकसित हो रहे लॉजिस्टिक्स उद्योग के परिप्रेक्ष्य में समृद्ध करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल सिद्ध हुआ।

## डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती : अतिथि व्याख्यान

## गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल सांइसेज

विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए डॉ. साध्वीनन्दन पाण्डेय

दिनांकः 14 अप्रैल, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना एनएसएस की पारिजात और माता सबरी इकाई द्वारा भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती के उपलक्ष्य में एक संगोष्ठी एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता श्री साध्वी नंदन पांडेय जी ने डॉ. अंबेडकर के जीवन, उनके संघर्ष, संविधान निर्माण में उनके ऐतिहासिक योगदान तथा सामाजिक समरसता के लिए किए गए प्रयासों पर विस्तृत प्रकाश डाला।

उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे डॉ. अंबेडकर के आदर्शों को अपने जीवन में आत्मसात कर राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएं।

कार्यक्रम के दौरान एनएसएस स्वयंसेवकों के मध्य भाषण प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया, जिसमें छात्रों ने डॉ. अंबेडकर के विचारो, शिक्षा के प्रति उनके दृष्टिकोण और सामाजिक न्याय की भावना पर प्रभावशाली वक्तव्य प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर एनएसएस पारिजात इकाई के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. आयुष कुमार पाठक एवं माता सबरी इकाई के डॉ. अभिषेक कुमार सिंह उपस्थित रहें। दोनों ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि डॉ. अंबेडकर का जीवन प्रेरणा का स्रोत है, और उनकी शिक्षाएं आज भी समाज को दिशा देने में सक्षम हैं।

इस कार्यक्रम में सहायक प्राध्यापक वाणिज्य संकाय श्री रवि निषाद, आशीष दुबे, दीनदयाल गुप्ता, प्रियांश मौर्य, अखिलेश चौरसिया, विकास यादव, निखिल प्रकाश पांडेय और माता सबरी, पारिजात इकाई के सभी स्वयंसेवक उपस्थित रहें।

## डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती : अतिथि व्याख्यान

## गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल सांइसेज

पीपीटी के माध्यम से विद्यार्थियों को समझाते हुए श्री एहतिशाम बेग

दिनांकः 17 अप्रैल, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के प्रबंधन विभाग, वाणिज्य संकाय में 'एक्सपोर्ट–इम्पोर्ट परिदृश्य की समझ:वैश्विक अर्थव्यवस्था में लॉजिस्टिक्स की भूमिका' विषय पर एक विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन किया गया।

इस सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में श्री एहतिशाम बेग उपस्थित हुए, जो वैश्विक लॉजिस्टिक्स एवं सप्लाई चेन प्रबंधन में पाँच वर्षों से अधिक का अनुभव रखते हैं।

श्री बेग ने अपने व्यावसायिक अनुभव साझा करते हुए बताया कि उन्होंने मेर्स्क और ब्लू डार्ट जैसे प्रतिष्ठित संगठनों के साथ कार्य करते हुए यूएइ/यूरोप, दक्षिण एशिया और मध्य पूर्व जैसे व्यापार गलियारों में विभिन्न जटिल लॉजिस्टिक्स प्रोजेक्ट्स का सफल संचालन किया है।

सत्र के दौरान उन्होंने

विद्यार्थियों को निर्यात–आयात से जुड़ी प्रमुख जानकारियाँ प्रदान कीए जिनमें शामिल हैं।

वैश्विक व्यापार में लॉजिस्टिक्स की भूमिका एवं संबंधित हितधारकों (फॉरवर्डर्स, कस्टम ब्रोकर्स, ट्रांसपोर्ट कैरियर्स) की भागीदारी शिपिंग कंटेनर के प्रकार महत्वपूर्ण दस्तावेज़ जैसे बिल ऑफ लाडिंग, सी वेबिल, कॉमर्शियल इनवॉइस, सर्टिफिकेट ऑफ ओरिजिन एवं कस्टम्स डिक्लेरेशन इन्कोटर्म्स का परिचय और उनका व्यापार लागत और दायित्वों पर प्रभाव कोविड–19 के बाद व्यापार में आए परिवर्तन जैसे डिजिटलीकरण, नियरशोरिंग, और ग्रीन लॉजिस्टिक्स।

कार्यक्रम में यह भी बताया गया कि किस प्रकार एआई, ब्लॉकचेन, ई.डॉक्यूमेंट्स जैसे तकनीकी नवाचार अंतरराष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स को तेज़, पारदर्शी और सुरक्षित बना रहे हैं। उन्होंने यूएई से यूरोप तक रीयल–टाइम डिजिटल ट्रैकिंग का उदाहरण देते हुए दुबई कस्टम्स और मेर्स्क की तकनीकी पहल का उल्लेख किया।

अंत में, श्री बेग ने विद्यार्थियों को लॉजिस्टिक्स और सप्लाई चेन में उभरते करियर विकल्पों से अवगत कराया।

उन्होंने इंटरनशिप, प्रासंगिक प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम और डिजिटल कौशल विकसित करने पर जोर दिया। 'लॉजिस्टिक्स केवल वस्तुओं की आवाजाही नहीं है, यह सीमाओं के पार मूल्य की आवाजाही है। 'श्री एहतिशाम बेग'।

इस अवसर पर प्रबंधन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. तरुण श्याम, श्री रवि निषाद और अन्य वरिष्ठ शिक्षकों की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा को और बढ़ाया। डॉ. तरुण श्याम ने श्री बेग का आभार व्यक्त किया और कहा, यह व्याख्यान विद्यार्थियों को वैश्विक लॉजिस्टिक्स की वास्तविक समझ देने की दिशा में एक सराहनीय पहल है। ऐसे कार्यक्रम विद्यार्थियों को उद्योग के लिए तैयार करने में सहायक हैं।'

कार्यक्रम का समापन प्रश्नोत्तर सत्र के साथ हुआ, जहाँ विद्यार्थियों ने गहरी रुचि के साथ भाग लिया और वक्ता से व्यावहारिक जानकारी प्राप्त की।

## विशिष्ठ व्याख्यान एवं स्वास्थ्य परीक्षण

## गुरु गोरक्षनाथ चिकित्सा विज्ञान संस्थान

विशिष्ठ व्याख्यान के दौरान विद्यार्थियों संग एवं स्वास्थ्य परीक्षण करते डॉ. जी.एस. तोमर

दिनांकः 17 अप्रैल, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अन्तर्गत गुरु गोरक्षनाथ चिकित्सा विज्ञान संस्थान में विश्व लिवर दिवस की पूर्व संध्या पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया।

इसमें अपने उद्बोधन में विश्व आयुर्वेद मिशन के संस्थापक अध्यक्ष एवं पूर्व प्राचार्य राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय हण्डिया, प्रयागराज प्रो. (डॉ.) जी. एस. तोमर ने लिवर रोगों में आयुर्वेद की भूमिका' विषय पर विस्तृत उद्बोधन दिया। डॉ. तोमर ने बताया कि प्रत्येक वर्ष 19 अप्रैल को विश्व लिवर दिवस मनाया जाता है। प्रति वर्ष इसका एक थीम निर्धारित किया जाता है। इस वर्ष, 2025, विश्व लिवर दिवस की थीम है' भोजन ही औषधि है। यह थीम संपूर्ण खाद्य पदार्थों से भरपूर संतुलित आहार के माध्यम से लिवर के स्वास्थ्य को बनाए रखने और लिवर की बीमारियों को रोकने में पोषण की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देती है। उन्होंने बताया कि आचार्य कश्यप ने आहार को महाभैषज्य (आहार सभी औषधियों में सर्वोत्तम है) कहा है। आहार को 'महाभैषज्य' इसलिए कहा जाता है क्योंकि आयुर्वेद के अनुसार, यह सभी औषधियों में सबसे बेहतर है। यह स्वस्थ शरीर को बनाए रखने और रोगों को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसे 'श्रेष्ठ औषधि' भी माना जाता है क्योंकि उचित आहार के सेवन से कई बीमारियों को रोका या ठीक किया जा सकता है। आयुर्वेद में आहार, निद्रा एवं ब्रह्मचर्य तीन उपस्तंभ बताए गए हैं। इनमें आहार सबसे महत्वपूर्ण है। महर्षियों का मानना है कि यह शरीर आहार से ही निर्मित होता है तथा रोगों की उत्पत्ति भी मिथ्या आहार से ही होती है। अतः हमें हितकर आहार का ही सेवन करना चाहिए। चरक ने प्रकृति, करण, संयोग, राशि, काल, देश, उपयोक्ता एवं उपयोग संस्था नाम से आहार सम्बन्धी आठ नियमों का उल्लेख किया है। वहीं सुश्रुत ने बारह नियम बताए हैं। मोटे तौर पर हमें देश, ऋतु, काल एवं प्रकृति के अनुसार उचित मात्रा में काल भोजन करना चाहिए। लिवर या यकृत को वैज्ञानिकों ने जीवन रूपी पहिए की धुरी बताया है। यह शरीर की सबसे बड़ी ग्रंथि है जो एक्जोक्राइन, एण्डोक्राइन एवं रेग्युलेटरी तीनों प्रकार के कार्यों को करती है। इसके विकृत होने से शरीर का प्रत्येक अंग प्रभावित होता है। अतः स्वस्थ रहने के लिए हमें खानपान पर विशेष

ध्यान देना चाहिए। संतुलित एवं हितकारी भोजन से न केवल हम लिवर को स्वस्थ रख सकते हैं अपितु लिवर के रुग्ण होने पर भी इसे ठीक कर सकते हैं। अपने चालीस वर्षों से अधिक के शोध अनुभव के द्वारा तैयार की गई औषधि प्रवेकलिव को डॉ. तोमर ने हिपेटाइटिस बी तथा सी, लिवर सिरोसिस, फेटी लिवर एवं क्रॉनिक लिवर डिसीजेज में अत्यंत कारगर बताया।

व्याख्यान के पूर्व देवपूजन एवं प्रार्थना हुई। इसके बाद संस्थान के प्राचार्य प्रो. गिरिधर वेदान्तम ने अतिथि परिचय एवं स्वागत किया एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. विष्णु ने किया। डायबिटीज़ के रोगियों की बढ़ती हुई संख्या चिंताजनक डॉ. जी. एस. तोमर गोरखपुर महंत दिग्विजय नाथ आयुर्वेद चिकित्सालय आरोग्यधाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर में निःशुल्क चिकित्सा शिविर में डॉ. जी. एस. तोमर द्वारा शताधिक रोगियों को चिकित्सा परामर्श प्रदान किया। इनमें अधिकांश रोगी मधुमेह, गठिया, श्वास रोग एवं लिवर डिसीजेज के मिले। रोगियों को औषधियों के साथ–साथ खानपान एवं योगासनों की जानकारी भी प्रदान की गई।

## अतिथि व्याख्यान

## सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय

विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए डॉ. तरूण कुमार

दिनांकः 18 अप्रैल, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय में आज के परिप्रेक्ष्य में कैंसर जैसी गंभीर बिमारियों के समाधान के लिए औषधिओ के खोज में पशु कोशिका संवर्धन तकनीक की बढ़ती भूमिका और उसमे बढ़ते हुए रोजगार के संभावनाओं पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. तरुण कुमार उपाध्याय, आचार्य, जैव प्रौद्योगिकी विभाग, पारुल विश्वविद्यालय बड़ोदरा, गुजरात ने अपने उद्बोधन में पशु कोशिका संवर्धन का आधुनिक औषधियो की खोज एवं उसमे बढ़ती हुई रोजगार की संभावनाओं पर अपने छात्रों तथा संकाय के शिक्षको के साथ अपने विचार साझा किया। डॉ. उपाध्याय इस क्षेत्र में एक दशक से अधिक का अनुभव रखते है और उनके शोध ने आधुनिक दवा विकास की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। डॉ. उपाध्याय ने यह भी बताया की कैसे आज हम इस कोशिका संवर्धन की मदद से आने वाले समय में थ्रीडी प्रिंटिंग तकनीक की मदद से ख़राब हुए अंगो को प्रत्यारोपित कर सकते है। यह तकनीक महत्वपूर्ण इसीलिए है क्योंकि इसमें पशु कोशिका संवर्धन का उपयोग कर दवाओं को पहले से ही नियंत्रित वातावरण में परखा जा सकता है, जिससे जीवित पशुओं पर प्रयोग की निर्भरता एवं आवश्यकता कम हो जाती है। पारंपरिक तरीकों की तुलना में यह तकनीक दवाओं के असर को जल्दी और सटीक रूप से दर्शाती है। आज इस तकनीक का उपयोग वैज्ञानिक रिसर्च, वैक्सीन उत्पादन तथा कैंसर रिसर्च जैसे महत्वपूर्ण औषधियों की खोज के खोज में किया जा रहा है। मुख्य वक्ता को संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो.सुनील कुमार सिंह ने स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया।

व्याख्यान का धन्यवाद ज्ञापन बॉयोटेक्नॉलाजी विभागाध्यक्ष डॉ. अमित कुमार दुबे ने किया। व्याख्यान में डॉ. धिरेन्द्र कुमार सिंह, डॉ. पवन कुमार कनौजिया, डॉ. अवैधनाथ सिंह, डॉ. अंकिता मिश्रा, डॉ. कीर्ति कुमार यादव, डॉ. प्रेरणा अदिती, डॉ. किरन कुमार, डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, श्री धन्नजय पाण्डेय, डॉ. रश्मि झाँ, श्री अनिल कुमार पटेल, श्री जन्मेजय सोनी जी सहित सभी विभागों के छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे।

## शैक्षणिक भ्रमण

## फैकल्टी ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंसेस

शैक्षणिक भ्रमण के दौरान फार्मेसी के विद्यार्थी

दिनांकः 19 अप्रैल, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के फैकल्टी ऑफ फार्मास्यूटिकल साईंसेस के डी. फार्मा 2024–25 बैच के छात्रों ने गीडा औद्योगिक क्षेत्र स्थित बर्नेट फार्मास्यूटिकल प्राइवेट लिमिटेड में औद्योगिक भ्रमण किया।

इस शैक्षणिक भ्रमण का उद्देश्य छात्रों को उनके पाठ्यक्रम में पढ़ाए जा रहे सैद्धांतिक ज्ञान को वास्तविक औद्योगिक प्रक्रिया से जोड़ना था।

भ्रमण के दौरान छात्रों को फार्मास्युटिकल निर्माण, गुणवत्ता नियंत्रणए पैकेजिंग तथा ड्रग्स की जांच की आधुनिक तकनीकों से रूबरू कराया गया। प्लांट हेड श्री शुशील कुमार तथा उनके विशेषज्ञों ने उन्हें दवा निर्माण की प्रक्रिया, GMP (Good

Manufacturing Practices) तथा औद्योगिक सुरक्षा मानकों के बारे में भी विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

यह औद्योगिक भ्रमण छात्रों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हुआ, क्योंकि उन्होंने जो विषय कक्षा में सैद्धांतिक रूप से सीखे थे, उन्हें प्रत्यक्ष रूप में देखने और समझने का अवसर प्राप्त हुआ। छात्रों में भ्रमण को लेकर उत्साह और जिज्ञासा देखने को मिली।

फार्मेसी विभाग के प्राचार्य डॉ. शशिकांत सिंह जी ने इस औद्योगिक भ्रमण के आयोजन का सराहना करते हुए कहा किए ऐसी शैक्षणिक भ्रमण छात्रों के व्यावसायिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। यह शैक्षणिक भ्रमण श्री दिलीप कुमार मिश्रा के नेतृत्व में कराया गया।

इस प्रकार यह औद्योगिक भ्रमण छात्रों के लिए ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक सिद्ध हुआ।

## अतिथि व्याख्यान

## गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

व्याख्यान के दौरान विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए श्री अर्ल बर्त्रम कुचने

**दिनांकः 19 अप्रैल, 2025** को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज आयुर्वेद कॉलेज के द्वारा अतिथि व्याख्यान का आयोजन हुआ, व्याख्यान के लिए श्री अर्ल बर्त्रम कुचने, पूर्व सीओओ, इकोमोशन. आई सॉल्यूशन कंपनी, जर्मनी, आयुर्वेद. वैविक गुणवत्ता परिप्रेक्ष्य विषय पर बतौर वक्ता अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि उन्होंने एक वर्ष में 50 किलोग्राम वजन घटाया, केवल आयुर्वेद को अपनाकर।

इस दौरान उन्होंने हठ योग, अश्वगंधा और शिलाजीत जैसे आयुर्वेदिक हर्ब्स को अपने जीवन में शामिल किया। उन्होंने बताया कि पश्चिमी देश सुविधाजनक और वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित उत्पादों को अधिक प्राथमिकता देते हैं। वहां शिलाजीत जैसे हर्ब्स के एक्सट्रैक्ट को एंटी–एजिंग और एथलेटिक परफॉर्मेंस के लिए उपयोग किया जा रहा है। इसके विपरीत, आयुर्वेदिक उत्पादों को वहां अक्सर अंधविश्वास के रूप में देखा जाता है, क्योंकि उनके पीछे वैज्ञानिक शोध और गुणवत्ता मानकों की कमी है। इस समस्या को हल करने के लिए उन्होंने भारतीय गुणवत्ता बैज की परिकल्पना रखी, जो कि सरकार या निजी संगठनों द्वारा संचालित हो सकता है। इसका उद्देश्य होगा कि औषधीय घटकों की गुणवत्ता और प्रभावशीलता की पुष्टि करना, अनुसंधान आधारित उत्पादों को बढ़ावा देना एवं खराब गुणवत्ता और अधिक कीमत वाले उत्पादों को बाजार से बाहर करना।

वक्ता ने कहा, यह बैज केवल मार्केटिंग के लिए नहीं होगा, बल्कि गुणवत्ता सुधार की एक स्थायी पहल होगी जो आयुर्वेद को वैश्विक मंच पर मजबूत स्थान दिलाएगी। यह प्रस्ताव आयुर्वेद को परंपरा से निकालकर वैज्ञानिक और आधुनिक स्वास्थ्य प्रणाली में स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा सकता हैं।

इस व्याख्यान सत्र का धन्यवाद ज्ञापन आयुर्वेद संकाय के प्राचार्य एवं द्रव्यगुण विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. गिरिधर वेदांतम् जी ने किया। व्याख्यान सत्र में सम्बद्ध विश्वविद्यालय के आयुर्वेद विभाग संकाय के सभी आचार्य एवं छात्र–छात्रा उपस्थित थे।

## शुभाशीष

## सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय

राजेश्वर कुमार

सौम्या सिंह

अमित मल्ल

दिनांकः 22 अप्रैल, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर बालापार के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के एमएससी बॉयोटेक्नोलॉजी के दो विद्यार्थियों का चयन मल्टीनेशनल कंपनियों में हुआ है।

यह जानकारी संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह ने देते हुए बताया कि हर्ष का विषय है कि एमएससी बॉयोटेक्नोलॉजी के छात्र राजेश्वर कुमार का चयन सीरम इंस्टिट्यूट ऑफ़ फार्मेसी दिल्ली में 4.35 लाख के वार्षिक पैकेज पर हुआ है। साथ ही एमएससी बॉयोटेक्नोलॉजी के अमित मल्ल का चयन हिंदुस्तान यूनिलिवर लिमिटेड रुड़की में क्वालिटी कण्ट्रोल के पद पर 2.55 लाख वार्षिक पैकेज पर हुआ है। दोनों छात्र संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के बॉयोटेक्नोलॉजी विभाग के छात्र हैं।

बीएससी बॉयोटेक्नोलॉजी की छात्रा सौम्या सिंह ने आईआईटी जेम (IIT JAM-2025) किया क्वालीफाई महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय की बीएससी बॉयोटेक्नोलॉजी की छात्रा सौम्या सिंह का आईआईटी जेम 2025 में चयन हुआ है। अध्ययन के समय में सौम्या विश्वविद्यालय के विविध गतिविधियों में बढ़–चढ़कर प्रतिभाग करती रही हैं। सौम्या बी एससी बॉयोटेक्नोलॉजी के अंतिम वर्ष की छात्रा है।

अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह ने कहा कि बॉयोटेक्नोलॉजी, बॉयोकेमेस्ट्री, और माइक्रोबॉयोलॉजी में जॉब की अनंत संभावनाएं है। प्रो. सुनील सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय और विभाग के लिए यह गर्व का विषय है कि यहां के विद्यार्थी मल्टीनेशनल कंपनियों में चयनित हो रहे है इससे अन्य विद्यार्थियों को भी प्रेरणा मिलेगा। विद्यार्थियों के लिए विभाग द्वारा समय–समय पर कैरियर विशेषज्ञों को आमंत्रित कर विद्यार्थियों का ज्ञानार्जन कराया जाता है।

संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के विविध क्षेत्रों में फूड टेक्नोलॉजी, फार्मा इंडस्ट्री, रिसर्च एंड डेवलपमेंट, मेडिकल मार्केटिंग एवं फॉरेंसिक साइंस में भी जॉब की अनंत संभावनाएं है। विश्वविद्यालय और विभाग अपने विद्यार्थियों के प्लेसमेंट के लिए निरंतर कंपनियों के साथ सामंजस्य स्थापित कर ज्यादा से ज्यादा प्लेसमेंट कराने के लिए प्रयासरत है।

मल्टीनेशनल कंपनियों में छात्रों के चयन पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह और कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने शुभकामना दिया।

छात्रों के चयन पर संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के शिक्षक डॉ. अमित कुमार दुबे, डॉ. प्रेरणा अदिति, डॉ. धीरेंद्र सिंह, श्री धनंजय पाण्डेय ने बधाई दिया।

## कार्यपरिषद बैठक

## महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

कार्यपरिषद की 14वीं बैठक में उपस्थित पदाधिकारीगण

दिनांकः 27 अप्रैल, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर की कार्यपरिषद की 14वीं बैठक रविवार को कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह की अध्यक्षता में हुई जिसका संचालन कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने किया। कार्यपरिषद ने विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों में दर्जनभर से अधिक समयानुकूल नए पाठ्यक्रमों के संचालन पर मुहर लगाई।

कार्यपरिषद की बैठक में लिए गए निर्णयों की जानकारी देते हुए उप कुलसचिव (प्रशासन) श्रीकांत ने बताया कि कार्यपरिषद ने वर्तमान परिदृश्य में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय महत्व वाले कई पाठ्यक्रमों को शुरू करने के प्रस्ताव को सर्वसम्मति से अनुमति दे दी है। नए पाठ्यक्रमों में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संकाय के तहत सत्र 2025–26 से बैचलर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन (बीसीए), स्वास्थ्य एवं जीवन विज्ञान संकाय के अंतर्गत सत्र 2025–26 से एमएससी फोरेंसिक साइंस तथा बीएससी फोरेसिंक साइंस, मानविकी और प्राकृतिक विज्ञान संकाय के तहत सत्र 2026–27 से मास्टर ऑफ आर्टस इन इंग्लिश एण्ड

इकोनामिक्स प्रमुख रूप से शामिल हैं। इसके साथ ही वाणिज्य संकाय के प्रबंधन विभाग के तहत सत्र 2026–27 से एमबीए इन मार्केटिंग, एमबीए इन डिजिटल मार्केटिंग, एमबीए इन फाइनेंस, एमबीए इन ह्यूमन रिसोर्स, एमबीए इन फार्मेसी एडमिनिस्ट्रेशन, एमबीए इन हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन, एमबीए इन होटल मैनेजमेंट, एमबीए इन हॉस्पिटैलिटी एंड टूरिज्म, एमबीए इन फार्मा मार्केटिंग और एमबीए इन पेट्रोलियम मार्केटिंग जैसे विशिष्ट पाठ्यक्रमों पर भी कार्यपरिषद ने मुहर लगा दी है।

उप कुलसचिव ने बताया कि कार्यपरिषद ने संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अंतर्गत संचालित पाठ्यक्रमों को संरेखित करते हुये निर्णय लिया है कि बीएससी, एमएससी एवं पीएचडी इन बॉयोटेक्नोलॉजी, बीएससी, एमएससी एवं पीएचडी इन बॉयोकेमेस्ट्री तथा बीएससी, एमएससी एवं पीएचडी इन माइक्रोबॉयोलॉजी कोर्स स्वास्थ्य एवं जीवन विज्ञान संकाय के तहत चलाए जाएंगे। जबकि बीएससी, एमएससी एवं पीएचडी इन मेडिकल बायोकेमेस्ट्री और बीएससी, एमएससी और पीएचडी इन मेडिकल माइक्रोबॉयोलॉजी कोर्स श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हास्पिटल एण्ड रिसर्च सेंटर के अंतर्गत संचालित किए जाएंगे।

**नवीन सत्र में प्रवेश के लिए परीक्षा तिथियों का हुआ निर्धारण**

एमजीयूजी की कार्यपरिषद की बैठक में नवीन सत्र 2025–26 में विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए प्रवेश परीक्षा की तिथियों को भी अनुमोदित किया गया। बीएससी नर्सिंग, पोस्ट बेसिक बीएससी नर्सिंग तथा एमएससी नर्सिंग में प्रवेश हेतु प्रवेश परीक्षा 18 मई को होगी। इसी तरह बीएससी एवं एमएससी बॉयोटेक्नालाजी, बॉयोकेमेस्ट्री, माइक्रोबॉयोलाजी, मेडिकल बॉयोकेमेस्ट्री, मेडिकल माइक्रोबॉयोलाजी तथा बीएससी एग्रीकल्चर, डी. फार्मा एवं बी. फार्मा (एलोपैथिक) में प्रवेश हेतु प्रवेश परीक्षा 21 मई को आयोजित की जाएगी। एएनएम, एनपीसीसी, डिप्लोमा इन लैब टेक्निशियन, इमरजेंसी एण्ड ट्रामा केयर टेक्निशियन, आप्टोमेट्री, आर्थोपेडिक एण्ड प्लास्टर टेक्निशियन, डयलिसिस टेक्निशियन, एनेस्थिसिया एण्ड क्रिटिकल केयर टेक्निशियन तथा बीबीए लाजिस्टिक और पीएचडी के सभी पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षा 25 मई को कराई जाएगी।

**कार्यपरिषद की बैठक में ये रहे मौजूद** : मां विंध्यवासिनी राज्य विश्वविद्यालय मिर्जापुर की कुलपति प्रो. शोभा गौड़, प्रदेश के मुख्यमंत्री के सलाहकार डॉ. जी. एन. सिंह, अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान वाराणसी के निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह, एमपी शिक्षा परिषद के वरिष्ठ सदस्य रामजन्म सिंह, प्रमथनाथ मिश्रा, वरिष्ठ सदस्य, वरिष्ठ कैंसर सर्जन डॉ. सी. एम. सिन्हा, प्रदेश सरकार के प्रमुख सचिव के प्रतिनिधि संयुक्त सचिव प्रेम किशोर पांडेय, प्रिंसिपल, श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्रिंसिपल डॉ. अनुराग श्रीवास्तव, आयुर्वेद कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. गिरिधर वेदांतम, महायोगी गोरखनाथ अस्पताल के चिकित्सा निदेशक राजीव कुमार पाटनी, संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के डीन डॉ. सुनील कुमार, डीन संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान, फार्मास्युटिकल के प्रिंसिपल डॉ. एस. के. सिंह, प्रिंसिपल, डीन एग्रीकल्चर, डॉ. विमल कुमार दुबे, विश्वविद्यालय के आयुर्वेद कॉलेज में शरीर रचना विभाग की प्रोफेसर डॉ. मिनी के.वी. संहिता सिद्धांत के सहायक आचार्य, डॉ. साध्वी नंदन पांडेय, रामा विश्वविद्यालय, कानपुर में डीन अकादमिक डॉ. हरिओम शरण, डॉ. मधुसूदन पुरोहित, डॉ. प्रशांत सदाशिवमूर्ति, डॉ. रघु राम, वास्तुविद आशीष श्रीवास्तव।

## विश्व स्वास्थ्य दिवस : जागरूक कार्यक्रम

## श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेंटर

जागरूकता कार्यक्रम के दौरान एमबीबीएस के विद्यार्थीगण

**दिनांकः 07 अप्रैल, 2025।** विश्व स्वास्थ्य दिवस प्रत्येक वर्ष 7 अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य संगठन की स्थापना के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। यह एक वैश्विक पहल है जिसका उद्देश्य महत्वपूर्ण स्वास्थ्य मुद्दों की ओर ध्यान आकर्षित करना है। वर्ष 2025 की थीम 'स्वस्थ शुरुआत, आशापूर्ण भविष्य' थी, जो मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाओं की महत्ता को रेखांकित करती है ताकि जीवन की एक स्वस्थ शुरुआत सुनिश्चित की जा सके। जीवन के प्रारंभिक चरणः गर्भावस्था से लेकर शिशु अवस्था और बाल्यावस्था तक ऐसे महत्वपूर्ण अवसर होते हैं जो किसी व्यक्ति के जीवन भर की शारीरिक, मानसिक एवं संज्ञानात्मक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। गर्भावस्था पूर्व देखभाल, पोषण सहायता, सुरक्षित प्रसव, माताओं के मानसिक स्वास्थ्य का सहयोग, और प्रारंभिक टीकाकरण एवं देखभाल के माध्यम से हम एक मजबूत एवं सक्षम अगली पीढ़ी का निर्माण कर सकते हैं। इसी संदेश को ध्यान में रखते हुए, हमारे संस्थान ने 12 अप्रैल 2025 को जागरूकता और जन–सहभागिता को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की।

भाषण प्रतियोगिता 'पंचकर्म हॉल' में आयोजित की गई, जिसमें कई MBBS छात्रों ने मातृ और शिशु स्वास्थ्य से संबंधित विभिन्न विषयों पर प्रभावशाली भाषण दिए। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य आम समस्याओं, सरकारी पहलों तथा प्रत्येक माँ और बच्चे के लिए एक स्वस्थ शुरुआत सुनिश्चित करने में परिवार एवं समुदाय की भूमिका के बारे में जागरूकता बढ़ाना था। भाषण प्रतियोगिता के चर्चित विषयों में

शामिल थे। गर्भावस्था पूर्व देखभाल, गर्भावस्था के दौरान पारिवारिक समर्थन की भूमिका, प्रसव की कठिनाइयाँ, मातृत्व पोषण का महत्व, प्रसवोत्तर जटिलताएँ एवं अवसाद, गर्भवती महिलाओं और बच्चों के लिए सरकारी योजनाएँ, स्तनपान एवं टीकाकरण का महत्व, मातृत्व मानसिक स्वास्थ्य आदि। प्रतिभागियों का मूल्यांकन विषय–वस्तुएं स्पष्टता, प्रस्तुति कौशल और थीम से संबंधितता के आधार पर किया गया। शीर्ष तीन विजेताओ मे प्रथम पुरस्कारः सृजन सूर्यवंशी, द्वितीय पुरस्कारः सृष्टि जायसवाल, तृतीय पुरस्कारः अदिति झा रही।

उपरोक्त सन्दर्भ में जागरूकता अभियान/रैली का आयोजन महाराणा प्रताप प्रौद्योगिकी संस्थान (MPIT) कॉलेज परिसर में किया गया। इसका उद्देश्य कक्षा से बाहर जाकर स्वास्थ्य विषयों पर संदेश फैलाना और छात्रों एवं संकाय को सक्रिय रूप से स्वास्थ्य प्रचार में शामिल करना था। हमारे माननीय प्राचार्य डॉ. अनुराग श्रीवास्तव ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया, उपस्थित जनसमूह को संबोधित किया और एक जानकारीपूर्ण संगोष्ठी प्रस्तुत की। इसके बाद कई MBBS छात्र आगे आए और जनसमूह को विभिन्न विषयों पर जागरूक किया जैसेः गर्भावस्था पूर्व देखभाल, प्रसवोत्तर दीर्घकालिक स्वास्थ्य समस्याएँ, बाल विकास में परिवार की भूमिका, परिवार नियोजन की भूमिका, प्रसव की कठिनाइयाँ, बाल पोषण का महत्व आदि।

इस कार्यक्रम ने एक सशक्त दृश्य और मौखिक प्रभाव उत्पन्न किया, जिससे समुदाय के सदस्यों को उचित स्वास्थ्य देखभाल प्राप्त करने, सरकारी सेवाओं का उपयोग करने और महिलाओं एवं बच्चों के लिए एक सहयोगी वातावरण बढ़ावा देने हेतु प्रोत्साहित किया गया। विश्व स्वास्थ्य दिवस 2025 का यह उत्सव छात्रों के लिए एक जीवंत मंच सिद्ध हुआ, जहाँ उन्होंने सामाजिक महत्व के स्वास्थ्य मुद्दों पर अभिव्यक्ति एवं समर्थन प्रस्तुत किया।

इसने यह संदेश सुदृढ़ किया कि मातृ और शिशु स्वास्थ्य में निवेश करना, राष्ट्र के भविष्य में निवेश करने के समान है। छात्रों की उत्साही भागीदारी एवं सार्थक चर्चाओं ने यह सिद्ध किया कि हमारा संस्थान शैक्षणिक एवं सामुदायिक दोनों स्तरों पर स्वास्थ्य शिक्षा और जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है।

## पृथ्वी दिवस, मलेरिया दिवस : जागरूकता कार्यक्रम

## श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेंटर

व्याख्यान देते हुए डॉ. नितीश कुमार

दिनांकः 26 अप्रैल, 2025। श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में एमबीबीएस के विद्यार्थियों द्वारा पृथ्वी दिवस एवं मलेरिया दिवस के उपलक्ष्य में विभिन्न शैक्षणिक और जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन पंचकर्मा हॉल में किया गया। पृथ्वी दिवस (22 अप्रैल, 2025) का विषय 'हमारी शक्ति, हमारा ग्रह' हमें यह याद दिलाता है कि पृथ्वी को बचाने की जिम्मेदारी हम सभी की है। आज प्लास्टिक कचरा पृथ्वी के लिए एक गंभीर खतरा बन चुका है। प्लास्टिक के अत्यधिक उपयोग और उसके अपघटन में लगने वाले हजारों वर्षों के कारण भूमि, जल और वायु सभी प्रदूषित हो रहे हैं। प्लास्टिक के छोटे–छोटे कण (माइक्रोप्लास्टिक) अब हमारे खाद्य श्रृंखला में भी प्रवेश कर चुके हैं, जिससे मानव स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

इस वर्ष का थीम हमें इस ओर प्रेरित करता है कि हम अपनी शक्ति का प्रयोग करते हुए प्लास्टिक का उपयोग कम करें, पुनः उपयोग (reuse) और पुनर्चक्रण को बढ़ावा दें तथा नवीकरणीय और प्राकृतिक विकल्पों को अपनाएं। पृथ्वी दिवस पर लिया गया एक छोटा संकल्प : जैसे सिंगल यूज प्लास्टिक का त्याग करना भी पृथ्वी के भविष्य को सुरक्षित बनाने में बड़ी भूमिका निभा सकता है।

कार्यक्रम की शुरुआत 'प्लास्टिक और स्वास्थ्य' विषय पर डॉ. नितीश कुमार द्वारा दिये गये, सेमिनार से हुई। इस सेमिनार में प्लास्टिक प्रदूषण के मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों पर प्रकाश डाला गया तथा इसके समाधान हेतु प्लास्टिक के विकल्पों को अपनाने पर बल दिया गया।

इसके बाद एक प्रश्न मंच प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें पर्यावरणीय मुद्दों, प्लास्टिक के प्रभावों तथा स्वास्थ्य संबंधी सामान्य ज्ञान पर आधारित प्रश्न पूछे गए। प्रतिभागियों ने इसमें बढ़–चढ़ कर भाग लिया और अपनी जागरूकता का परिचय दिया। विश्व मलेरिया दिवस (25 अप्रैल, 2025) का उद्देश्य मलेरिया उन्मूलन के प्रयासों को गति देना है। यह विषय नवाचार, निवेश और सामूहिक प्रयासों के महत्व को रेखांकित करता है, ताकि इस घातक बीमारी पर प्रभावी नियंत्रण पाया जा सके। इस वर्ष विश्व मारिया दिवस का विषय है 'मलेरिया हमारे साथ समाप्त होता हैः पुनर्निवेश, पुनर्कल्पना, पुनर्जागृति।

छात्रों ने मलेरिया से संबंधित विभिन्न विषयों पर भाषण प्रस्तुत किए जैसे की, मलेरिया रोग पर व्याख्यान, मलेरिया की समस्या का विश्लेषण, मलेरिया नियंत्रण में सरकार की भूमिका, मलेरिया का निदान और उपचार, मलेरिया संचरण की रोकथाम, इत्यादि। इन प्रस्तुतियों ने मलेरिया की भयावहता, बचाव उपायों और सरकारी पहलों के महत्व को समझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम का समापन छात्रों द्वारा प्रस्तुत एक नाट्य प्रस्तुति के साथ हुआ, जिसमें मलेरिया बीमारी के एक छात्र के

जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को दर्शाया गया। इस प्रभावशाली नाटक ने समय पर रोकथाम और उपचार की आवश्यकता को खूबसूरती से उजागर किया।

पृथ्वी दिवस और विश्व मलेरिया दिवस 2025 के संयुक्त आयोजन ने प्रतिभागियों के बीच पर्यावरणीय और स्वास्थ्य संबंधी गंभीर मुद्दों के प्रति जागरूकता पैदा की। कार्यक्रम ने न केवल ज्ञानवर्धन किया बल्कि यह भी प्रेरित किया कि हम व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर इन समस्याओं के समाधान के लिए कदम उठाएं। इस आयोजन ने पर्यावरण संरक्षण और रोग उन्मूलन के प्रति सभी में नई चेतना और जिम्मेदारी की भावना जगाई। छात्रों की उत्साही भागीदारी एवं सार्थक चर्चाओं ने यह सिद्ध किया कि हमारा संस्थान शैक्षणिक एवं सामुदायिक दोनों स्तरों पर स्वास्थ्य शिक्षा और जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है।

धन्यवाद ज्ञापन डॉ. शशि भूषण ने दिया, आज के कार्यक्रम में डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. ओंकार नाथ तिवारी, डॉ. पूनम श्रीवास्तव, डॉ. गौरव यादव, डॉ. शालिनी, श्री अनिरुद्ध सेन आदि मौजूद रहें।

## शैक्षणिक भ्रमण

## सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय

आरएमआरसी में प्रो. (डॉ) हरि शंकर जोशी से ज्ञानार्जन करते विद्यार्थी

**दिनांकः 28 अप्रैल, 2025।** महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के एम.एस.सी. बॉयोटेक्नोलॉजी के छात्र–छात्राओं ने (आईसीएमआर) आरएमआरसी के विविध लैबों में जाकर स्वास्थ्य और सेवा से जुड़े उपकरणों का अध्ययन किया।

क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केंद्र (आरएमआरसी), गोरखपुर भारत सरकार के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग (डीएचआर) के अधीन भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद से कार्यरत संस्थान है।

आरएमआरसी के निदेशक प्रो. (डॉ) हरि शंकर जोशी ने विद्यार्थियों का ज्ञानार्जन करते हुए कहा कि स्वास्थ्य और विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान की असीम संभावना है। जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के विद्यार्थियों में अन्वेषकीय दृष्टि है। शोध ज्ञानार्जन के लिए छात्र क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केंद्र (आरएमआरसी) के संपर्क में है जहां वैज्ञानिको के दिशा निर्देशन में भविष्य के नवाचार को नई ऊर्जा मिलेगा ।

वैज्ञानिक डॉ. अशोक कुमार पाण्डेय ने कहा कि क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केंद्र का गठन 2008 में हुआ है। जैपनीज इनफ्लिटिस्ट के प्रकोप से इस अनुसंधान ने निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है।

वैज्ञानिक डॉ. राजीव सिंह और डॉ. बृज रंजन मिश्रा ने कहा कि कोविड महामारी के समय मोबाइल बी. एस.एल–3 लैब में 10 लाख सैंपल का परीक्षण किया गया। जिससे कोविड से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया। विद्यार्थियों ने लैब भ्रमण के दौरान, पीसीआर, रीयल–टाइम पीसीआर और ईएलआईएसए, फ्लोरोसेंस – एक्टिवेटेड सेल सॉर्टिंग, अल्ट्रासेंट्रीफ्यूज जैसी महत्वपूर्ण प्रयोगशाला तकनीकों के सिद्धांत, अनुप्रयोग और महत्व के बारे में गहन जानकारी प्राप्त किया। संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह और विभागाध्यक्ष डॉ. अमित कुमार दुबे जी के निर्देशन में शैक्षणिक भ्रमण किया।

प्रो. सुनील कुमार सिंह ने कहा कि भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद/क्षेत्रीय चिकित्सा अनुसंधान केंद्र (आईसीएमआर–आरएमआरसी )में विद्यार्थियों का शैक्षणिक भ्रमण अत्यंत ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक रहा है। जिसमें छात्रों को उन्नत प्रयोगशाला तकनीकों और अनुसंधान ढांचे का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त हुआ।

शैक्षणिक भ्रमण का नेतृत्व सहायक आचार्य डॉ. पवन कुमार कन्नौजिया ने किया। भ्रमण में विभिन्न बॉयोसेफ्टी लैबोरेटरीज़ का निरीक्षण, जहाँ उच्च जोखिम वाले संक्रामक एजेंटों को सख्त सुरक्षा प्रोटोकॉल के तहत संभाला जाता है।

छात्रों ने मोबाइल बॉयोसेफ्टी लैब का भी अवलोकन किया, जिसे क्षेत्रीय प्रकोपों के दौरान त्वरित परीक्षण के लिए तैयार किया गया है।

विद्यार्थियों ने वीडीएसएल का दौरा किया, जिसमें अत्याधुनिक मॉलिक्यूलर बॉयोलॉजी लैब और सेरोलॉजी लैब स्थित हैं, जहाँ संक्रामक रोगों के निदान और निगरानी का कार्य किया जाता है।

छात्रों ने मायकोलॉजी लैब का भी भ्रमण किया, जहाँ फंगल संक्रमणों पर अनुसंधान किया जाता है। इसके साथ ही, उन्होंने .20 डिग्री सेल्सियस और 80 डिग्री सेल्सियस तापमान पर संचालित होने वाले कोल्ड रूम्स का भी अवलोकन किया, जो जैविक नमूनों के सुरक्षित भंडारण के लिए आवश्यक हैं।

आरएमआरसी के प्रतिष्ठित वैज्ञानिक डॉ. अमन अग्रवाल, डॉ. नलिनी मिश्रा, डॉ. एस.पी. बहरा, डॉ. रोहित बेनीवाल ने विद्यार्थियों का ज्ञानार्जन किया। संवाद सत्र में अनुसंधान कार्यों में चल रही परियोजनाओं के साथ छात्रों को अनुसंधान क्षेत्र में करियर बनाने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव साझा दिया गया।

भ्रमण में प्रमुख रूप से अकांक्षा मद्धेशिया, अकांक्षा वर्मा, अंकिता सिंह, एकता सिंह, काजल, कनिष्का सिंह, शालिनी सिंह, उजमा सज्जाद, नेहा गुप्ता, प्रगति मिश्र, प्रवीण शर्मा, प्रिय दुबे
एरिया सिंह, सलोनी यादव, संजना यादव, श्वेता रंजन, सिद्धांत शर्मा, तनु त्रिपाठी, आरोही रावत, आंचल विश्वकर्मा, आस्था पटेल आदि उपस्थित रहीं।

## उपलब्धि

## सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय

**दिनांकः 30 अप्रैल, 2025।** महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर बालापार के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के बीएससी मेडिकल माइक्रोबॉयोलॉजी के विद्यार्थी भानु मिश्रा का मल्टीनेशनल कंपनी एमिल फार्मास्यूटिकल लिमिटेड में चयन हुआ है।

यह जानकारी संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के प्लेसमेंट एवं ट्रेनिंग सेल के प्रमुख श्री धनंजय पांडेय ने देते हुए बताया कि हर्ष का विषय है कि बीएससी मेडिकल माइक्रोबॉयोलॉजी के छात्र भानु

भानु मिश्रा

मिश्रा का चयन एमिल फार्मासूटिकल कंपनी में 3.50 लाख के वार्षिक पैकेज पर हुआ है।

संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह ने कहा कि बॉयोटेक्नोलॉजी, बॉयोकेमस्ट्री, और माइक्रोबॉयोलॉजी में जॉब की अनंत संभावनाएं है और विभाग के लिए यह गर्व का विषय है कि यहां के विद्यार्थी मल्टीनेशनल कंपनियों में चयनित हो रहे है इससे अन्य विद्यार्थियों को भी प्रेरणा मिलेगा। विद्यार्थियों के लिए विभाग द्वारा समय–समय पर कैरियर विशेषज्ञों को आमंत्रित कर विद्यार्थियों का ज्ञानार्जन कराया जाता है।

संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के विविध क्षेत्रों में फूड टेक्नोलॉजी, फार्मा इंडस्ट्री, रिसर्च एंड डेवलपमेंट, मेडिकल मार्केटिंग एवं फॉरेंसिक साइंस में भी जॉब की अनंत संभावनाएं है। विश्वविद्यालय और विभाग अपने विद्यार्थियों के प्लेसमेंट के लिए निरंतर कंपनियों के साथ सामंजस्य स्थापित कर ज्यादा से ज्यादा प्लेसमेंट कराने के लिए प्रयासरत है।

मल्टीनेशनल कंपनि में छात्रों के चयन पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह और कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने शुभकामना दिया।

## समाचार दर्पण

### एमजीयूजी में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आज से

गोरखपुर, २९ मार्च। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के तहत संचालित संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के तत्वावधान में सोसाइटी फॉर बायोटेक्नोलॉजिस्ट इंडिया (एसबीटीआई) के सहयोग से 30 मार्च से 1 अप्रैल तक संयोजित तीन दिवसीय अंतराष्ट्रीय सम्मेलन में आयुर्वेद एवं बायोमेडिकल विज्ञान में जैव प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग विषय पर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक अन्वेषकीय दृष्टि से मंथन करेंगे। इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन की जानकारी साझा करते हुए संयोजक और अधिष्ठाता संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय प्रो. (डॉ.) सुनील कुमार सिंह ने बताया कि 30 मार्च को उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि आईसीएमआर के पूर्व महानिदेशक और राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष पद्मश्री प्रो. बलराम भार्गव होंगे। सम्मेलन की अध्यक्षता यूपी के मुख्यमंत्री के शिक्षा सलाहकार और यूजीसी के पूर्व अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) धीरेंद्र पाल सिंह करेंगे। अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलपति प्रो. (डॉ.) सुरिंदर सिंह का भी पाथेय प्राप्त होगा। तीन दिवसीय सम्मेलन में देश-विदेश के वैज्ञानिक, शोधकर्ता और विशेषज्ञ भाग ले रहे हैं जो 'आयुर्वेद एवं बायोमेडिकल विज्ञान में जैव प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग% विषय पर नवीनतम अनुसंधान और प्रगति पर चर्चा करेंगे। विभिन्न तकनीकी सत्रों में देश विदेश के ख्यातिलब्ध वैज्ञानिकों के समक्ष शोधार्थी और युवा वैज्ञानिको को शोध प्रस्तुति,युवा वैज्ञानिक पुरस्कार प्रस्तुति, मौखिक प्रस्तुति,पोस्टर प्रस्तुति में समृद्ध शैक्षणिक आदान-प्रदान से सम्मेलन समृद्ध होगा।

आयोजन समिति के सचिव डॉ. अमित दुबे और डॉ. अनुपमा ओझा ने बताया कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में देश-विदेश के ख्यातिलब्ध वैज्ञानिकों को आध्यात्म, आयुर्वेद और विज्ञान के अद्भुत संयोग से युवा शोधार्थियों और विद्यार्थियों को आपस में साक्षात्कार करने का अवसर मिलेगा। उन्होंने बताया कि अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में कुल 210 शोध आलेख प्राप्त हुए हैं।

### युवाओं को उद्यमिता से जोड़ने में स्टार्टअप इंडिया की पहल महत्वपूर्णः प्रो. दिव्या

कौटिल्य का भारत

गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में गृह विज्ञान की अध्यक्ष प्रो. दिव्या रानी सिंह ने कहा कि युवाओं को उद्यमिता से जोड़कर उन्हें स्वावलंबी बनाने के लिए स्टार्टअप इंडिया एक महत्वपूर्ण पहल साबित हुई है। इस पहल से नवाचार और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिला है।

प्रो. दिव्या रानी शुक्रवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) में आयोजित राष्ट्रीय सेवा योजना (रासेयो) की माता शबरी इकाई, पारिजात इकाई एवं महंत अवेद्यनाथ इकाई के सात दिवसीय विशेष शिविर के पांचवें दिन के बौद्धिक सत्र को मुख्य वक्ता के रूप में संबोधित कर रही थीं। उन्होंने अपने व्याख्यान में बताया कि कैसे स्टार्टअप इंडिया के अंतर्गत मिलने वाले समर्थन और संसाधन, उद्यमियों को वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा करने के लिए प्रेरित करते हैं। उन्होंने कहा कि इस पहल के माध्यम से न केवल रोजगार के नए अवसर सृजित हो रहे हैं बल्कि देश की अर्थव्यवस्था में भी नई ऊर्जा का संचार हो रहा है। नवाचार और डिजिटल क्रांति के इस दौर में स्टार्टअप इंडिया, युवा शक्ति को प्रोत्साहित करते हुए देश के समग्र विकास में एक महत्वपूर्ण कड़ी सिद्ध हो रही है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए पैरामेडिकल विभाग के अध्यक्ष डॉ.रोहित श्रीवास्तव ने व्यक्तित्व विकास के विविध आयामों से स्वयंसेवकों को परिचित कराया। आभार ज्ञापन करते हुए रासेयो के कार्यक्रम समन्वयक डॉ.अखिलेश कुमार दुबे ने कहा कि आज का व्याख्यान स्वयंसेवकों को सामाजिक चेतना, नेतृत्व क्षमता एवं सेवा भावना के महत्व को समझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इस अवसर पर डॉ. अभिषेक कुमार सिंह, डॉ. आयुष कुमार पाठक, जयशंकर पाण्डेय, रवि यादव सहित सभी स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

### एमजीयूजी में आयुर्वेद और बायोटेक्नोलॉजी के अनुप्रयोग पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का समापन

#### आयुर्वेद के सदियों पुराने ज्ञान को बॉयोटेक से जोड़कर होगा स्वास्थ्य चुनौतियों के समाधान : प्रो. सुरिंदर

(ग्राम स्वराज्य) संवाददाता

गोरखपुर, 1 अप्रैल। राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान (एनबीआरआई) के निदेशक डॉ. अजीत कुमार शासने ने कहा कि आयुर्वेद और जैव प्रौद्योगिकी के सामंजस्य से समग्र स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन आएगा। आयुर्वेद विश्व की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति है। आज के दौर में इसे जैव प्रौद्योगिकी से समन्वित किया जाना समय की मांग है। आयुर्वेद में जैव प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग से वैश्विक चिकित्सा सेवा क्षेत्र को नई और सही राह दिखाई जा सकती है।

डॉ. शासने मंगलवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) द्वारा संचालित संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के तत्वावधान में सोसाइटी फॉर बायोटेक्नोलॉजिस्ट इंडिया (एसबीटीआई) के सहयोग से आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के समापन समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। 'आयुर्वेद एवं बायोमेडिकल विज्ञान में जैव प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग' विषयक सम्मेलन के समारोप में डॉ. शासने ने कहा कि आयुर्वेद ने लंबे कालखंड से स्वास्थ्य सेवा की है उसकी उपादेयता हमेशा प्रासंगिक है। एसबीटीआई के अध्यक्ष प्रो. एडथिल विजयन ने कहा कि यह सम्मेलन समूचे स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए मील का पत्थर साबित होगा। कोलंबो विश्वविद्यालय की प्रो. सुमादी डिसिल्वा ने कहा इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन ने जैव प्रौद्योगिकी विज्ञान और आयुर्वेद को सेतु के रूप में जोड़ा है। इस समन्वय से स्वास्थ्य सेवा तो मजबूत होगा ही, रोजगार के नए अवसर भी सृजित होंगे।

**तकनीकी सत्रों में हुआ विचार विनिमय**

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के तीसरे दिन तकनीकी सत्रों में आयुर्वेद और जैव प्रौद्योगिकी के विभिन्न पहलुओं पर विषय विशेषज्ञों ने विचार विनिमय किया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कनिका मलिक ने कहा कि जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नवाचारों का संरक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण है। बायोटेक्नोलॉजी चिकित्सा, कृषि, उद्योग, और पर्यावरण संरक्षण जैसे कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में क्रांतिकारी बदलाव ला चुका है। प्रो. उमेश यादव ने कोरोना जैसे संक्रमण के रोकथाम में कारगर औषधियों की जानकारी दी।

स्वागत एमजीयूजी में संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह और आभार ज्ञापन डॉ. अनुपमा ओझा ने किया। इस अवसर पर आयोजन समिति के सचिव डॉ. अमित दुबे, डॉ. धीरेन्द्र सिंह, डॉ. पवन कुमार कनौजिया, डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव, डॉ.अंकिता, डॉ.कीर्ति यादव, डॉ. अखिलेश कुमार दुबे, डॉ. प्रेरणा अदिति, डॉ. किरन कुमार ए., डॉ.आशुतोष सहित सभी विभागों के शिक्षक और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

**अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में इन्हें मिला अवार्ड**

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में एसबीटीआई की सचिव डॉ अजू टी.आर. ने यंग साइंटिस्ट अवार्ड की घोषणा की। इसमें केएपीएल अवॉर्ड एमजीयूजी की डॉ. रश्मि शाही, आईबीएस अवार्ड एमजीयूजी के डॉ. मात्य सिंह,सीवी जैकब अवॉर्ड एमजीयूजी की अंजली राय, केएन नरसिंहा अवॉर्ड एमिटी यूनिवर्सिटी नोएडा के बी. बंदोपाध्याय और कुनथ फार्मास्युटिकल अवॉर्ड यूएसए की पार्वती राजेश को दिया गया। इसी क्रम में प्रो एडथिल विजयन अवार्ड श्रीलंका के डॉ. मध्यमची प्रदीप को तथा ओरल प्रेसेंटेशन में प्रथम पुरस्कार नव्या अग्रवाल, द्वितीय आकांक्षा गुप्ता, तृतीय पुरस्कार पूजा दुबे को दिया गया। पोस्टर प्रस्तुति में प्रथम पुरस्कार शिवम पाण्डेय, द्वितीय पुरस्कार अनुप्रिया वेलु और तृतीय पुरस्कार नेहा श्रीनिवास को प्राप्त हुआ।

### आयुर्वेद और जैव प्रौद्योगिकी के सामंजस्य से आएगा अभूतपूर्व परिवर्तन : डॉ. शासने

- एमजीयूजी में आयुर्वेद और बायोटेक्नोलॉजी के अनुप्रयोग पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का समापन
- आयुर्वेद के सदियों पुराने ज्ञान को बॉयोटेक से जोड़कर होगा स्वास्थ्य चुनौतियों के समाधान : प्रो. सुरिंदर

### आयुर्वेद का जैव प्रौद्योगिकी से समन्वय समय की मांग

- एमजीयूजी में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का समापन
- आयुर्वेद को बायोटेक से जोड़कर स्वास्थ्य चुनौतियों से निपटेंगे : प्रो. सुरिंदर

**तकनीकी सत्रों में हुआ विचार विनिमय**

**अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में इन्हें मिला अवार्ड**

### आयुर्वेद में जैव प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग से आएगा अभूतपूर्व परिवर्तन : डॉ. शासने

**गोरखनाथ विवि**

- गोरखनाथ विवि तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का हुआ समापन
- आयुर्वेद के ज्ञान को बॉयोटेक से जोड़ने से होगा चुनौतियों का समाधान

गोरखपुर, कार्यालय संवाददाता। राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान (एनबीआरआई) के निदेशक डॉ. अजीत कुमार शासने ने कहा कि आयुर्वेद और जैव प्रौद्योगिकी के सामंजस्य से समग्र स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन आएगा। आयुर्वेद विश्व की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति है। आज के दौर में इसे जैव प्रौद्योगिकी से समन्वित किया जाना समय की मांग है। आयुर्वेद में जैव प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग से वैश्विक चिकित्सा सेवा क्षेत्र को नई और सही राह दिखाई जा सकती है।

डॉ. शासने मंगलवार को महायोगी गोरखना विवि (एमजीयूजी) की ओर से संचालित संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय की ओर से सोसाइटी फॉर बायोटेक्नोलॉजिस्ट इंडिया (एसबीटीआई) के सहयोग से अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के समापन समारोह में मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। कहा कि आयुर्वेद ने लंबे कालखंड से स्वास्थ्य सेवा की है, उसकी उपयोगिता हमेशा प्रासंगिक है। ऐसे में स्वास्थ्य क्षेत्र को सुदृढ़ करने के लिए आयुर्वेद और जैव प्रौद्योगिकी को साथ-साथ आगे बढ़ना होगा। अध्यक्षता करते हुए एमजीयूजी के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह ने कहा कि जैव प्रौद्योगिकी और आयुर्वेद का समागम स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में एक शक्तिशाली बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है। आयुर्वेद के सदियों पुराने ज्ञान का सम्मान करके और इसे बायोटेक की प्रगति के साथ जोड़कर आधुनिक स्वास्थ्य चुनौतियों के लिए प्राकृतिक समाधान का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। कहा कि आयुर्वेद और बायोमेडिकल साइंस में बायोटेक्नोलॉजी के अनुप्रयोग पर आयोजित यह अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन नवाचार और अनुसंधान को बढ़ावा देगा।

### आयुर्वेद और जैव प्रौद्योगिकी के सामंजस्य से आएगा अभूतपूर्व परिवर्तन - डॉ. शासने

### आयुर्वेद और जैव प्रौद्योगिकी के सामंजस्य से होगा अभूतपूर्व परिवर्तन -डॉ. शासने

- एमजीयूजी में आयुर्वेद और बायोटेक्नोलॉजी के अनुप्रयोग पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का समापन

## समाचार दर्पण

# गोरखनाथ विश्वविद्यालय में प्रवेश को 30 अप्रैल तक भरें फार्म

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर • जागरण

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए प्रवेश प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। 15 मार्च से आनलाइन आवेदन शुरू हो चुके हैं। अंतिम तिथि 30 अप्रैल को निर्धारित की गई है। आवेदन फार्म विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट www.mgug.ac.in के माध्यम से भरे जा रहे हैं।

प्रवेश परीक्षा 18, 21 और 25 मई को विश्वविद्यालय परिसर में स्थित विभिन्न संकायों में होगी। प्रवेश परीक्षा का परिणाम दो जून को विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट पर जारी किया जाएगा। मेरिट के आधार पर प्रवेश पांच जून से 20 जून तक लिया जायेगा। नए सत्र की कक्षाएं 15 जुलाई से संचालित की जाएंगी।

उप कुलसचिव श्रीकांत ने बताया कि गोरखनाथ विश्वविद्यालय में एमबीबीएस और बीएएमएस सहित कुल 28 पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। विगत 15 वर्षों से नर्सिंग शिक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर पूर्वांचल के विद्यार्थियों को राष्ट्रीय स्तर पर एक नई पहचान प्रदान करने के साथ वर्ष 2022 से विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अंतर्गत बायोटेक्नोलाजी, बायोकेमेस्ट्री, माइक्रोबायोलाजी, मेडिकल माइक्रोबायोलाजी, मेडिकल बायोकेमेस्ट्री के स्नातक व परास्नातक पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। फार्मेसी संकाय के अंतर्गत डीफार्म व बीफार्म, कृषि संकाय के अंतर्गत बीएससी (कृषि) स्नातक, नर्सिंग और पैरामेडिकल संकाय के अंतर्गत बीएससी (नर्सिंग), एएनएम, जीएनएम, नर्स प्रैक्टिशनर क्रिटिकल केयर (एनपीसीसी) एमएससी (नर्सिंग) व पोस्ट बेसिक बीएससी नर्सिंग और पैरामेडिकल संकाय के अंतर्गत छह विभिन्न पाठ्यक्रम लैब टेक्नीशियन, आप्टोमेट्री, एनेस्थीसिया, आर्थोपेडिक, इमरजेंसी एंड ट्रामा व डायलिसिस में डिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। गत वर्ष से विश्वविद्यालय ने वाणिज्य संकाय के अंतर्गत बीबीए लाजिस्टिक्स पाठ्यक्रम का संचालन प्रारंभ किया है।

# एमजीयूजी में सत्र 2025-26 के लिए प्रवेश प्रक्रिया शुरू

- 15 मार्च से जारी ऑनलाइन प्रवेश फार्म भरने की अंतिम तिथि 30 अप्रैल
- नर्सिंग और पैरामेडिकल समेत अनेक रोजगारपरक पाठ्यक्रमों में प्रवेश का विकल्प

**गोरखपुर मेल संवाददाता**

गोरखपुर। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के क्षेत्र में कम समय में ही सुदृढ़ पहचान बनाने वाले महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) आरोग्यधाम में विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश की प्रक्रिया 15 मार्च से शुरू हो चुकी है। विश्वविद्यालय के संचालित पाठ्यक्रमों के लिए प्रवेश आवेदन पत्र विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट ६६६.ॅ.ल्ल के माध्यम से भरे जा रहे हैं। प्रवेश फार्म भरने की अंतिम तिथि 30 अप्रैल है। प्रवेश परीक्षा 18, 21 और 25 मई को विश्वविद्यालय परिसर में स्थित विभिन्न संकायों में होगी। प्रवेश परीक्षा का परिणाम 2 जून को विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट पर प्रकाशित किया जायेगा। मेरिट के आधार पर प्रवेश 5 जून से 20 जून तक लिया जायेगा और नए सत्र की कक्षाएं 15 जुलाई से संचालित की जायेंगी। यह जानकारी एमजीयूजी के उप कुलसचिव श्रीकांत ने दी। उन्होंने बताया कि वर्तमान में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में एमबीबीएस और बीएएमएस सहित कुल 28 पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैंकविगत 15 वर्षों से नर्सिंग शिक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर पूर्वांचल के विद्यार्थियों को राष्ट्रीय स्तर पर एक नई पहचान प्रदान करने के साथ वर्ष 2022 से विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अंतर्गत बायोटेक्नोलॉजी, बायोकेमेस्ट्री, माइक्रोबायोलॉजी, मेडिकल माइक्रोबायोलॉजी, मेडिकल बायोकेमेस्ट्री के स्नातक व परास्नातक पाठ्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। फार्मेसी संकाय के अंतर्गत डी फार्मा व बी फार्मा, कृषि संकाय के अंतर्गत बीएससी (कृषि) स्नातक, नर्सिंग और पैरामेडिकल संकाय के अंतर्गत बीएससी (नर्सिंग), एएनएम, जीएनएम, नर्स प्रैक्टिशनर क्रिटिकल केयर (एनपीसीसी) एमएससी (नर्सिंग) व पोस्ट बेसिक बीएससी नर्सिंग और पैरामेडिकल संकाय के अंतर्गत 6 विभिन्न पाठ्यक्रम लैब टेक्नीशियन, ऑप्टोमेट्री, एनेस्थीसिया, ऑर्थोपेडिक, इमरजेंसी एंड ट्रॉमा व डायलिसिस में डिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। गत वर्ष विश्वविद्यालय ने वाणिज्य संकाय के अंतर्गत बीबीए लॉजिस्टिक्स पाठ्यक्रम का संचालन प्रारंभ किया है।

# महायोगी गोरखनाथ विवि में प्रवेश प्रक्रिया प्रारम्भ

- 15 मार्च से जारी ऑनलाइन प्रवेश फार्म भरने की अंतिम तिथि 30 अप्रैल
- नर्सिंग, पैरामेडिकल समेत कई रोजगारपरक कोर्स में प्रवेश का विकल्प

गोरखपुर, कार्यालय संवाददाता। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के क्षेत्र में कम समय में ही सुदृढ़ पहचान बनाने वाले महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) आरोग्यधाम में विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश की प्रक्रिया 15 मार्च से शुरू हो चुकी है।

विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के लिए प्रवेश आवेदन पत्र विश्वविद्यालय की वेबसाइट **www.mgug.ac.in** पर भरे जा रहे हैं। प्रवेश फार्म भरने की अंतिम तिथि 30 अप्रैल है। प्रवेश परीक्षा 18, 21 और 25 मई को विश्वविद्यालय परिसर में स्थित विभिन्न संकायों में होगी। प्रवेश परीक्षा का परिणाम दो जून को विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर प्रकाशित किया जाएगा। मेरिट के आधार पर प्रवेश पांच जून से 20 जून तक लिया जाएगा और नए सत्र की कक्षाएं 15 जुलाई से संचालित की जाएंगी।

यह जानकारी एमजीयूजी के उप कुलसचिव श्रीकांत ने दी। बताया कि वर्तमान में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में एमबीबीएस और बीएएमएस सहित कुल 28 पाठ्यक्रम संचालित हैं। 15 वर्षों से नर्सिंग शिक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के साथ वर्ष 2022 से विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अंतर्गत बायोटेक्नोलॉजी, बायोकेमेस्ट्री, माइक्रो बायोलॉजी, मेडिकल माइक्रो बायोलॉजी, मेडिकल बायोकेमेस्ट्री के स्नातक व परास्नातक पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं।

फार्मेसी संकाय के अंतर्गत डी फार्मा व बीफार्मा, कृषि संकाय के अंतर्गत बीएससी (कृषि) स्नातक, नर्सिंग और पैरामेडिकल संकाय के अंतर्गत बीएससी (नर्सिंग), एएनएम, जीएनएम, नर्स प्रैक्टिशनर क्रिटिकल केयर (एनपीसीसी) एमएससी (नर्सिंग) व पोस्ट बेसिक बीएससी नर्सिंग और पैरामेडिकल संकाय के अंतर्गत 6 विभिन्न पाठ्यक्रम लैब टेक्नीशियन, ऑप्टोमेट्री, एनेस्थीसिया, ऑर्थोपेडिक, इमरजेंसी एंड ट्रॉमा व डायलिसिस में डिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। गत वर्ष विश्वविद्यालय ने वाणिज्य संकाय के अंतर्गत बीबीए लॉजिस्टिक्स पाठ्यक्रम का संचालन प्रारंभ किया है।

# एमजीयूजी में सत्र 2025-26 के लिए प्रवेश प्रक्रिया शुरू

- ऑनलाइन प्रवेश फार्म भरने की अंतिम तिथि 30 अप्रैल
- नर्सिंग और पैरामेडिकल समेत अनेक रोजगारपरक पाठ्यक्रमों में प्रवेश का विकल्प
- वर्तमान में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में एमबीबीएस और बीएएमएस सहित कुल 28 पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं : कुलसचिव

**नव अमृत प्रभात संवाददाता**

गोरखपुर। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के क्षेत्र में कम समय में ही सुदृढ़ पहचान बनाने वाले महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) आरोग्यधाम में विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश की प्रक्रिया 15 मार्च से शुरू हो चुकी है। विश्वविद्यालय के संचालित पाठ्यक्रमों के लिए प्रवेश आवेदन पत्र विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट ६६६.ॅ.ल्ल के माध्यम से भरे जा रहे हैं। प्रवेश फार्म भरने की अंतिम तिथि 30 अप्रैल है। प्रवेश परीक्षा 18, 21 और 25 मई को विश्वविद्यालय परिसर में स्थित विभिन्न संकायों में होगी। प्रवेश परीक्षा का परिणाम 2 जून को विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट पर प्रकाशित किया जायेगा। मेरिट के आधार पर प्रवेश 5 जून से 20 जून तक लिया जायेगा और नए सत्र की कक्षाएं 15 जुलाई से संचालित की जायेंगी। यह जानकारी एमजीयूजी के उप कुलसचिव श्रीकांत ने दी। उन्होंने बताया कि वर्तमान में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में एमबीबीएस और बीएएमएस सहित कुल 28 पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैंकविगत 15 वर्षों से नर्सिंग शिक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर पूर्वांचल के विद्यार्थियों को राष्ट्रीय स्तर पर एक नई पहचान प्रदान करने के साथ वर्ष 2022 से विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अंतर्गत बायोटेक्नोलॉजी, बायोकेमेस्ट्री, माइक्रोबायोलॉजी, मेडिकल माइक्रोबायोलॉजी, मेडिकल बायोकेमेस्ट्री के स्नातक व परास्नातक पाठ्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। फार्मेसी संकाय के अंतर्गत डी फार्मा व बी फार्मा, कृषि संकाय के अंतर्गत बीएससी (कृषि) स्नातक, नर्सिंग और पैरामेडिकल संकाय के अंतर्गत बीएससी (नर्सिंग), एएनएम, जीएनएम, नर्स प्रैक्टिशनर क्रिटिकल केयर (एनपीसीसी) एमएससी (नर्सिंग) व पोस्ट बेसिक बीएससी नर्सिंग और पैरामेडिकल संकाय के अंतर्गत 6 विभिन्न पाठ्यक्रम लैब टेक्नीशियन, ऑप्टोमेट्री, एनेस्थीसिया, ऑर्थोपेडिक, इमरजेंसी एंड ट्रॉमा व डायलिसिस में डिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। गत वर्ष विश्वविद्यालय ने वाणिज्य संकाय के अंतर्गत बीबीए लॉजिस्टिक्स पाठ्यक्रम का संचालन प्रारंभ किया है।

# एमजीयूजी में सत्र 2025–26 के लिए प्रवेश प्रक्रिया शुरू

## 15 मार्च से जारी ऑनलाइन प्रवेश फार्म भरने की अंतिम तिथि 30 अप्रैल

## नर्सिंग और पैरामेडिकल समेत अनेक रोजगारपरक पाठ्यक्रमों में प्रवेश का विकल्प

ग्राम स्वराज्य (संवाददाता)

गोरखपुर, 3 अप्रैल। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के क्षेत्र में कम समय में ही सुदृढ़ पहचान बनाने वाले महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) आरोग्यधाम में विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश की प्रक्रिया 15 मार्च से शुरू हो चुकी है। विश्वविद्यालय के संचालित पाठ्यक्रमों के लिए प्रवेश आवेदन पत्र विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट www.mgug.ac.in के माध्यम से भरे जा रहे हैं। प्रवेश फार्म भरने की अंतिम तिथि 30 अप्रैल है। प्रवेश परीक्षा 18, 21 और 25 मई को विश्वविद्यालय परिसर में स्थित विभिन्न संकायों में होगी। प्रवेश परीक्षा का परिणाम 2 जून को विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट पर प्रकाशित किया जायेगा। मेरिट के आधार पर प्रवेश 5 जून से 20 जून तक लिया जायेगा और नए सत्र की कक्षाएं 15 जुलाई से संचालित की जायेंगी। यह जानकारी एमजीयूजी के उप कुलसचिव श्रीकांत ने दी। उन्होंने बताया कि वर्तमान में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में एमबीबीएस और बीएएमएस सहित कुल 28 पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। विगत 15 वर्षों से नर्सिंग शिक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर पूर्वांचल के विद्यार्थियों को राष्ट्रीय स्तर पर एक नई पहचान प्रदान करने के साथ वर्ष 2022 से विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अंतर्गत बायोटेक्नोलॉजी, बायोकेमेस्ट्री, माइक्रोबायोलॉजी, मेडिकल माइक्रो बायोलॉजी, मेडिकल बायोकेमेस्ट्री के स्नातक व परास्नातक पाठ्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। फार्मेसी संकाय के अंतर्गत डी फार्मा व बी फार्मा, कृषि संकाय के अंतर्गत बीएससी (कृषि) स्नातक, नर्सिंग और पैरामेडिकल संकाय के अंतर्गत बीएससी (नर्सिंग), एएनएम, जीएनएम, नर्स प्रैक्टिशनर क्रिटिकल केयर (एनपीसीसी) एमएससी (नर्सिंग) व पोस्ट बेसिक बीएससी नर्सिंग और पैरामेडिकल संकाय के अंतर्गत 6 विभिन्न पाठ्यक्रम लैब टेक्नीशियन, ऑप्टोमेट्री, एनेस्थीसिया, ऑर्थोपेडिक, इमरजेंसी एंड ट्रॉमा व डायलिसिस में डिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। गत वर्ष विश्वविद्यालय ने वाणिज्य संकाय के अंतर्गत बीबीए लॉजिस्टिक्स पाठ्यक्रम का संचालन प्रारंभ किया है।

# आरोग्य पथ

मासिक ई-पत्रिका


## समाचार दर्पण

### उच्च शिक्षण संस्थानों के लिए रोल मॉडल बने एमजीयूजी : सीएम योगी'

☞महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय का निरीक्षण किया कुलाधिपति ने

☞अकादमिक कार्यों और भावी कार्ययोजना की समीक्षा कर दिए जरूरी निर्देश

'विश्वविद्यालय में जारी निर्माण कार्यों का जायजा लिया सीएम ने'

### उच्च शिक्षण संस्थानों के लिए रोल मॉडल बने एमजीयूजी : सीएम

»महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय का निरीक्षण किया कुलाधिपति ने,अकादमिक कार्यों और भावी कार्ययोजना की समीक्षा कर दिए जरूरी निर्देश

स्वतंत्र चेतना

गोरखपुर। मुख्यमंत्री एवं महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ ने विश्वविद्यालय के फैकल्टी का आह्वान किया है कि वे समयानुकूल शिक्षण पद्धतियों को अपनाते हुए विद्यार्थियों के भविष्य को स्वर्णिम बनाने के लिए पूर्ण मनोयोग से जुट जाएं। इस विश्वविद्यालय में संसाधनों की कोई कमी नहीं है। स्थापना के अल्प समय में ही यह रोजगारपरक शिक्षण के एक प्रमुख केंद्र के रूप में प्रतिष्ठित हुआ है। अब लक्ष्य यह होना चाहिए कि यह विश्वविद्यालय प्रदेश और देश के उच्च शिक्षण संस्थानों के लिए रोल मॉडल बने। कुलाधिपति योगी रविवार शाम एमजीयूजी का निरीक्षण करने के बाद विश्वविद्यालय प्रशासन और फैकल्टी के साथ वर्तमान व्यवस्थाओं और भावी कार्ययोजना की समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने ने कहा कि एमजीयूजी का अकादमिक इंफ्रास्ट्रक्चर विश्व स्तरीय स्वरूप में विकसित हो रहा है। अकादमिक इंफ्रास्ट्रक्चर के अलावा 1475 सीट का आडिटोरिम बन कर लगभग तैयार है। इसके साथ ही 9500 की क्षमता का स्टेडियम भी बनना है। सीएम योगी ने इस बात पर प्रसन्नता जताई कि 28 अगस्त 2021 को तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के हाथों उद्घाटित इस विश्वविद्यालय ने चार साल से भी कम समय में एमबीबीएस और बीएएमएस जैसे महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम शुरू कर खुद को एक प्रतिमान के रूप मे स्थापित किया है। इसके नर्सिंग कॉलेज की ख्याति पहले से ही है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रावधानों को भी अपनाने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री एवं एमजीयूजी के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ ने वर्तमान शैक्षणिक सत्र की प्रवेश योजना की जानकारी ली और अबतक विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध सुविधाओं की भी समीक्षा की। इस अवसर पर एमजीयूजी से संबद्ध के गोरखनाथ चिकित्सालय बालापार के निदेशक डॉ. रोहित पाटनी, नर्सिंग कॉलेज की प्राचार्या डॉ. डीएस अजीथा, संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता डॉ. सुनील कुमार सिंह, फार्मेसी संकाय के अधिष्ठाता डॉ. शशिकांत सिंह आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

**विश्वविद्यालय में जारी निर्माण कार्यों का सीएम ने लिया जायजा**

अकादमिक कार्यों और भावी कार्ययोजना की समीक्षा करने के साथ ही सीएम योगी ने महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में जारी निर्माण कार्यों का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने निर्माण कार्य की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने और तय समय पर कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए।

### महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय का कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ ने किया निरीक्षण, विवि प्रशासन के साथ बैठक में सीएम बोले

### संस्थानों के लिए रोल मॉडल बने गोरखनाथ विवि

सीएम आज 13 परियोजनाओं का करेंगे लोकार्पण-शिलान्यास

### उच्च शिक्षण संस्थानों के लिए रोल मॉडल बने एमजीयूजी: योगी

**महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय का निरीक्षण किया कुलाधिपति ने, अकादमिक कार्यों और भावी कार्ययोजना की समीक्षा कर दिए जरूरी निर्देश**

गोरखपुर (स्वरूप ब्यूरो)। मुख्यमंत्री एवं महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ ने विश्वविद्यालय के फैकल्टी का आह्वान किया है कि वे समयानुकूल शिक्षण पद्धतियों को अपनाते हुए विद्यार्थियों के भविष्य को स्वर्णिम बनाने के लिए पूर्ण मनोयोग से जुट जाएं। इस विश्वविद्यालय में संसाधनों की कोई कमी नहीं है। स्थापना के अल्प समय में ही यह रोजगारपरक शिक्षण के एक प्रमुख केंद्र के रूप में प्रतिष्ठित हुआ है। अब लक्ष्य यह होना चाहिए कि यह विश्वविद्यालय प्रदेश और देश के उच्च शिक्षण संस्थानों के लिए रोल मॉडल बने। कुलाधिपति योगी रविवार शाम एमजीयूजी का निरीक्षण करने के बाद विश्वविद्यालय प्रशासन और फैकल्टी के साथ वर्तमान व्यवस्थाओं और भावी कार्ययोजना की समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने ने कहा कि एमजीयूजी का अकादमिक इंफ्रास्ट्रक्चर विश्व स्तरीय स्वरूप में विकसित हो रहा है। अकादमिक इंफ्रास्ट्रक्चर के अलावा 1475 सीट का आडिटोरिम बन कर लगभग तैयार है। इसके साथ ही 9500 की क्षमता का स्टेडियम भी बनना है। सीएम योगी ने इस बात पर प्रसन्नता जताई कि 28 अगस्त 2021 को तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के हाथों उद्घाटित इस विश्वविद्यालय ने चार साल से भी कम समय में एमबीबीएस और बीएएमएस जैसे महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम शुरू कर खुद को एक

प्रतिमान के रूप में स्थापित किया है। इसके नर्सिंग कॉलेज की ख्याति पहले से ही है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रावधानों को भी अपनाने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। समीक्षा के दौरान गोरखनाथ मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. अनुराग श्रीवास्तव ने बताया कि विश्वविद्यालय में मेडिकल साइंस, नर्सिंग, पैरामेडिकल, एग्रीकल्चर, एलॉयड हेल्थ साइंसेज और फार्मेसी से संबंधित डिप्लोमा से लेकर मास्टर तक के दो दर्जन पाठ्यक्रम संचालित हैं। साथ ही बीबीए लॉजिस्टिक का कोर्स भी शुरू हो चुका है। गत सत्र से 100 सीटों की क्षमता से एमबीबीएस कोर्स शुरू हो गया है। एलॉयड हेल्थ साइंस में माइक्रोबायोलॉजी, बायो टेक्नोलॉजी, बायो केमिस्ट्री जैसे पाठ्यक्रम के साथ ही यहां के सभी पाठ्यक्रम रोजगारपरक हैं और उनकी बहुत मांग है।

### शिक्षण संस्थानों के लिए रोल माडल बने गोरखनाथ विश्वविद्यालय : योगी

**मुख्यमंत्री ने विश्वविद्यालय के निर्माण कार्य व व्यवस्था का किया निरीक्षण, अकादमिक कार्यों की समीक्षा कर दिए जरूरी निर्देश**

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में निर्माण कार्यों का निरीक्षण करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ • सौ. विश्वविद्यालय

## समाचार दर्पण

### एआई के प्रयोग से निरंतर उन्नत हो रहा कृषि क्षेत्रः चतुर्वेदी

**गोरखपुर।(स्पष्ट आवाज)।** महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के अंतर्गत संचालित कृषि संकाय में शुक्रवार को 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस या एआई) का परिचय एवं कृषि में इसके अनुप्रयोग' विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित महाराणा प्रताप इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के सहायक आचार्य सच्चिदानंद चतुर्वेदी ने कहा कि आज के दौर में एआई के प्रयोग से कृषि क्षेत्र निरंतर स्मार्ट उन्नत हो रहा है। श्री चतुर्वेदी ने कहा कि एआई के इस्तेमाल से सटीक खेती की जा रही है। सेंसर और ड्रोन का उपयोग करके मिट्टी की गुणवत्ता, नमी और पोषक तत्वों का विश्लेषण किया जाता है। इससे उर्वरक, पानी और बीजों का सही मात्रा में उपयोग संभव हो पाता है। फसलों में लगने वाले रोगों और कीटों का शुरुआती चरण में पता लगाकर समय रहते उनका उपचार किया जा सकता है। साथ ही एआई आधारित मशीनें और रोबोट्स खेतों में बोआई, कटाई और सिंचाई जैसे कार्यों को तेजी और कुशलता से पूरा कर रहे हैं। इस अवसर पर महाराणा प्रताप इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के सहायक आचार्य दर्शन श्रीवास्तव ने कहा कि एआईमौसम का सटीक पूर्वानुमान देकर किसानों को प्राकृतिक आपदाओं से बचने में मदद करता है, और बाजार में फसल के मूल्य का पूर्वानुमान लगाकर उन्हें सही समय पर बेचने का अवसर भी देता है। एआई कृषि को अधिक लाभदायक, टिकाऊ और भविष्य के लिए तैयार बना रहा है। एमजीयूजी कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दुबे ने अतिथि वक्ताओं को अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन छात्रा प्रगति सिंह एवं आभार ज्ञापन संजना गुप्ता ने किया। इस अवसर पर कृषि संकाय के डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ. आयुष कुमार पाठक, डॉ. शाश्वती प्रेमकुमारी, डॉ. नवनीत सिंह सहित सभी विद्यार्थी उपस्थित रहे।

### एआई के प्रयोग से निरंतर उन्नत हो रहा कृषि क्षेत्र : चतुर्वेदी

#### एमजीयूजी के कृषि संकाय में अतिथि व्याख्यान का आयोजन

**संवाददाता**

गोरखपुर, 11 अप्रैल। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के अंतर्गत संचालित कृषि संकाय में शुक्रवार को ह्यकृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस या एआई) का परिचय एवं कृषि में इसके अनुप्रयोगह्न विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित महाराणा प्रताप इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के सहायक आचार्य सच्चिदानंद चतुर्वेदी ने कहा कि आज के दौर में एआई के प्रयोग से कृषि क्षेत्र निरंतर स्मार्ट उन्नत हो रहा है। श्री चतुर्वेदी ने कहा कि एआई के इस्तेमाल से सटीक खेती की जा रही है। सेंसर और ड्रोन का उपयोग करके मिट्टी की गुणवत्ता, नमी और पोषक तत्वों का विश्लेषण किया जाता है। इससे उर्वरक, पानी और बीजों का सही मात्रा में उपयोग संभव हो पाता है। फसलों में लगने वाले रोगों और कीटों का शुरूआती चरण में पता लगाकर समय रहते उनका उपचार किया जा सकता है। साथ ही एआई आधारित मशीनें और रोबोट्स खेतों में बोआई, कटाई और सिंचाई जैसे कार्यों को तेजी और कुशलता से पूरा कर रहे हैं इस अवसर पर महाराणा प्रताप इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के सहायक आचार्य दर्शन श्रीवास्तव ने कहा कि एआईमौसम का सटीक पूवार्नुमान देकर किसानों को प्राकृतिक आपदाओं से बचने में मदद करता है, और बाजार में फसल के मूल्य का पूवार्नुमान लगाकर उन्हें सही समय पर बेचने का अवसर भी देता है। एआई कृषि को अधिक लाभदायक, टिकाऊ और भविष्य के लिए तैयार बना रहा है। एमजीयूजी कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दुबे ने अतिथि वक्ताओं को अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन छात्रा प्रगति सिंह एवं आभार ज्ञापन संजना गुप्ता ने किया। इस अवसर पर कृषि संकाय के डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ. आयुष कुमार पाठक, डॉ. शाश्वती प्रेमकुमारी, डॉ. नवनीत सिंह सहित सभी विद्यार्थी उपस्थित रहे।

### कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रयोग से निरंतर उन्नत हो रहा कृषि क्षेत्र : चतुर्वेदी

स्वतंत्र चेतना

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंतर्गत संचालित कृषि संकाय में शुक्रवार को ह्यकृत्रिम बुद्धिमत्ता का परिचय एवं कृषि में इसके अनुप्रयोग विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित महाराणा प्रताप इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के सहायक आचार्य सच्चिदानंद चतुर्वेदी ने कहा कि आज के दौर में एआई के प्रयोग से कृषि क्षेत्र निरंतर स्मार्ट उन्नत हो रहा है। श्री चतुर्वेदी ने कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस्तेमाल से सटीक खेती की जा रही है। सेंसर और ड्रोन का उपयोग करके मिट्टी की गुणवत्ता, नमी और पोषक तत्वों का विश्लेषण किया जाता है। इससे उर्वरक, पानी और बीजों का सही मात्रा में उपयोग संभव हो पाता है। फसलों में लगने वाले रोगों और कीटों का शुरूआती चरण में पता लगाकर समय रहते उनका उपचार किया जा सकता है। साथ ही कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित मशीनें और रोबोट्स खेतों में बोआई, कटाई और सिंचाई जैसे कार्यों को तेजी और कुशलता से पूरा कर रहे हैं।

महाराणा प्रताप इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के सहायक आचार्य दर्शन श्रीवास्तव ने कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता मौसम का सटीक पूवर्नुमान देकर किसानो को प्राकृतिक आपदाओं से बचने में मदद करता है, और बाजार में फसल के मूल्य का पूवार्नुमान लगाकर उन्हें सही समय पर बेचने का अवसर भी देता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता कृषि को अधिक लाभदायक, टिकाऊ और भविष्य के लिए तैयार बना रहा है। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दुबे ने अतिथि वक्ताओं को अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन छात्रा प्रगति सिंह एवं आभार ज्ञापन संजना गुप्ता ने किया इस अवसर पर कृषि संकाय के डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ. आयुष कुमार पाठक, डॉ. शाश्वती प्रेमकुमारी, डॉ. नवनीत सिंह सहित सभी विद्यार्थी उपस्थित रहे।

»महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कृषि संकाय में अतिथि व्याख्यान का आयोजन

### एआइ के प्रयोग से निरंतर उन्नत हो रहा कृषि क्षेत्र

- एमजीयूजी के कृषि संकाय में अतिथि व्याख्यान का हुआ आयोजन
- मौसम का पूर्वानुमान देकर किसानों को प्राकृतिक आपदाओं से बचने में मदद करता है एआइ : दर्शन

गोरखपुरः महाराणा प्रताप इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलाजी के सहायक आचार्य सच्चिदानंद चतुर्वेदी ने कहा कि आज के दौर में एआइ के प्रयोग से कृषि क्षेत्र निरंतर स्मार्ट उन्नत हो रहा है। एआइ के इस्तेमाल से सटीक खेती की जा रही है। सेंसर और ड्रोन का उपयोग करके मिट्टी की गुणवत्ता, नमी व पोषक तत्वों का विश्लेषण किया जाता है। इससे उर्वरक, पानी और बीजों का सही मात्रा में उपयोग संभव हो पाता है।

वह शुक्रवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के अंतर्गत संचालित कृषि संकाय में 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस या एआइ) का परिचय एवं कृषि में इसके अनुप्रयोग' विषय पर आयोजित अतिथि व्याख्यान को बतौर मुख्य वक्ता संबोधित कर रहे थे। महाराणा प्रताप इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलाजी के सहायक आचार्य दर्शन श्रीवास्तव ने कहा कि एआइ मौसम का सटीक पूर्वानुमान देकर किसानों को प्राकृतिक आपदाओं से बचने में मदद करता है, और बाजार में फसल के मूल्य का पूर्वानुमान लगाकर उन्हें सही समय पर बेचने का अवसर भी देता है। एमजीयूजी कृषि संकाय के अधिष्ठाता डा.विमल कुमार दुबे ने अतिथि वक्ताओं को अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया। संचालन छात्रा प्रगति सिंह एवं आभार ज्ञापन संजना गुप्ता ने किया। इस दौरान कृषि संकाय के डा.कुलदीप सिंह, डा.आयुष कुमार पाठक, डा.शाश्वती प्रेम कुमारी तथा डा.नवनीत सिंह समेत सभी विद्यार्थी मौजूद रहे।

### एआई के प्रयोग से निरंतर उन्नत हो रहा कृषि क्षेत्र -चतुर्वेदी

गोरखपुर, ११ अप्रैल। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के अंतर्गत संचालित कृषि संकाय में शुक्रवार को 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस या एआई) का परिचय एवं कृषि में इसके अनुप्रयोग' विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित महाराणा प्रताप इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के सहायक आचार्य सच्चिदानंद चतुर्वेदी ने कहा कि आज के दौर में एआई के प्रयोग से कृषि क्षेत्र निरंतर स्मार्ट उन्नत हो रहा है।

श्री चतुर्वेदी ने कहा कि एआई के इस्तेमाल से सटीक खेती की जा रही है। सेंसर और ड्रोन का उपयोग करके मिट्टी की गुणवत्ता, नमी और पोषक तत्वों का विश्लेषण किया जाता है। इससे उर्वरक, पानी और बीजों का सही मात्रा में उपयोग संभव हो पाता है। फसलों में लगने वाले रोगों और कीटों का शुरुआती चरण में पता लगाकर समय रहते उनका उपचार किया जा सकता है। साथ ही एआई आधारित मशीनें और रोबोट्स खेतों में बोआई, कटाई और सिंचाई जैसे कार्यों को तेजी और कुशलता से पूरा कर रहे हैं इस अवसर पर महाराणा प्रताप इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के सहायक आचार्य दर्शन श्रीवास्तव ने कहा कि एआईमौसम का सटीक पूर्वानुमान देकर किसानों को प्राकृतिक आपदाओं से बचने में मदद करता है, और बाजार में फसल के मूल्य का पूर्वानुमान लगाकर उन्हें सही समय पर बेचने का अवसर भी देता है। एआई कृषि को अधिक लाभदायक, टिकाऊ और भविष्य के लिए तैयार बना रहा है। एमजीयूजी कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दुबे ने अतिथि वक्ताओं को अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन छात्रा प्रगति सिंह एवं आभार ज्ञापन संजना गुप्ता ने किया। इस अवसर पर कृषि संकाय के डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ. आयुष कुमार पाठक, डॉ. शाश्वती प्रेमकुमारी, डॉ. नवनीत सिंह सहित सभी विद्यार्थी उपस्थित रहे।

❖एमजीयूजी के कृषि संकाय में अतिथि व्याख्यान का आयोजन

## समाचार दर्पण

### सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास के लिए सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण जरूरी-डॉ. शशिकांत

गोरखपुर, १२ अप्रैल। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के फार्मेसी संकाय में उन्नति फाउंडेशन के सहयोग से आयोजित 30 दिवसीय सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन हुआ।

❖ एमजीयूजी में 30 दिवसीय सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित फार्मेसी संकाय के अधिष्ठाता डॉ. शशिकांत सिंह ने कहा कि सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास के लिए सॉफ्ट स्किल को विकसित करना जरूरी है।डॉ. सिंह ने कहा कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम विद्यार्थियों के संप्रेषण कौशल, आत्मविश्वास, नेतृत्व गुण और पेशेवर शिष्टाचार को निखारने के उद्देश्य से आयोजित किया गया। पूरे प्रशिक्षण के दौरान विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया और आज के समारोह में उन्होंने अपनी क्षमता का उत्कृष्ट प्रदर्शन अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुत किया। केवल 30 दिनों में विद्यार्थियों में जो परिवर्तन देखा गया, वह अत्यंत प्रेरणादायक है। सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षक शिवानंद त्रिपाठी और कक्षा समन्वयक श्रेया मद्धेशिया ने भी विचार व्यक्त किए इस अवसर पर कई विद्यार्थियों ने प्रशिक्षण से जुड़े अपने अनुभव साझा किए जबकि कई विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन अनामिका पांडेय, अमन यादव, आदर्श कुमार, सुभाषचंद यादव ने तथा आभार ज्ञापन अजय यादव और अंकिता ने किया। इस अवसर पर फार्मेसी संकाय के शिक्षकगण जूही तिवारी, नंदिनी जायसवाल, श्रेया मद्धेशिया, प्रवीन कुमार सिंह, डॉ. अभिषेक कुमार सिंह, डॉ. अमित उपाध्याय सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

### सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास के लिए सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण जरूरी : डॉ. शशिकांत

○ उन्नति फाउंडेशन के सहयोग से एमजीयूजी में 30 दिवसीय सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन

**नव अमृत प्रभात संवाददाता**

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के फार्मेसी संकाय में उन्नति फाउंडेशन के सहयोग से आयोजित 30 दिवसीय सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन

शनिवार को हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित फार्मेसी संकाय के अधिष्ठाता डॉ. शशिकांत सिंह ने कहा कि सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास के लिए सॉफ्ट स्किल को विकसित करना जरूरी है। डॉ. सिंह ने कहा कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम विद्यार्थियों के संप्रेषण कौशल, आत्मविश्वास, नेतृत्व गुण और पेशेवर शिष्टाचार को निखारने के उद्देश्य से आयोजित किया गया। पूरे प्रशिक्षण के दौरान विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया और आज के समारोह में उन्होंने अपनी क्षमता का उत्कृष्ट प्रदर्शन अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुत किया। केवल 30 दिनों में विद्यार्थियों में जो परिवर्तन देखा गया, वह अत्यंत प्रेरणादायक है। सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षक शिवानंद त्रिपाठी और कक्षा समन्वयक श्रेया मद्धेशिया ने भी विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर कई विद्यार्थियों ने प्रशिक्षण से जुड़े अपने अनुभव साझा किए जबकि कई विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन अनामिका पांडेय, अमन यादव, आदर्श कुमार, सुभाषचंद यादव ने तथा आभार ज्ञापन अजय यादव और अंकिता ने किया। इस अवसर पर फार्मेसी संकाय के शिक्षकगण जूही तिवारी, नंदिनी जायसवाल, श्रेया मद्धेशिया, प्रवीन कुमार सिंह, डॉ. अभिषेक कुमार सिंह, डॉ. अमित उपाध्याय सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

### सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास के लिए सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण जरूरी : डॉ. शशिकांत'

**एमजीयूजी में 30 दिवसीय सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन**

**संवाददाता**

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय

गोरखपुर (एमजीयूजी) के फार्मेसी संकाय में उन्नति फाउंडेशन के सहयोग से आयोजित 30 दिवसीय सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन शनिवार को हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित फार्मेसी संकाय के अधिष्ठाता डॉ. शशिकांत सिंह ने कहा कि सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास के लिए सॉफ्ट स्किल को विकसित करना जरूरी है। डॉ. सिंह ने कहा कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम विद्यार्थियों के संप्रेषण कौशल, आत्मविश्वास, नेतृत्व गुण और पेशेवर शिष्टाचार को निखारने के उद्देश्य से आयोजित किया गया। पूरे प्रशिक्षण के दौरान विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया और आज के समारोह में उन्होंने अपनी क्षमता का उत्कृष्ट प्रदर्शन अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुत किया। केवल 30 दिनों में विद्यार्थियों में जो परिवर्तन देखा गया, वह अत्यंत प्रेरणादायक है। सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षक शिवानंद त्रिपाठी और कक्षा समन्वयक श्रेया मद्धेशिया ने भी विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर कई विद्यार्थियों ने प्रशिक्षण से जुड़े अपने अनुभव साझा किए जबकि कई विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन अनामिका पांडेय, अमन यादव, आदर्श कुमार, सुभाषचंद यादव ने तथा आभार ज्ञापन अजय यादव और अंकिता ने किया। इस अवसर पर फार्मेसी संकाय के शिक्षकगण जूही तिवारी, नंदिनी जायसवाल, श्रेया मद्धेशिया, प्रवीन कुमार सिंह, डॉ. अभिषेक कुमार सिंह, डॉ. अमित उपाध्याय सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

### एमजीयूजी में 30 दिवसीय सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन

**सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास के लिए सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण जरूरी : डॉ. शशिकांत**

**(संवाददाता)**

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के फार्मेसी संकाय में उन्नति फाउंडेशन के सहयोग से आयोजित 30

दिवसीय सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन शनिवार को हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित फार्मेसी संकाय के अधिष्ठाता डॉ. शशिकांत सिंह ने कहा कि सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास के लिए सॉफ्ट स्किल को विकसित करना जरूरी है। डॉ. सिंह ने कहा कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम विद्यार्थियों के संप्रेषण कौशल, आत्मविश्वास, नेतृत्व गुण और पेशेवर शिष्टाचार को निखारने के उद्देश्य से आयोजित किया गया। पूरे प्रशिक्षण के दौरान विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया और आज के समारोह में उन्होंने अपनी क्षमता का उत्कृष्ट प्रदर्शन अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुत किया। केवल 30 दिनों में विद्यार्थियों में जो परिवर्तन देखा गया, वह अत्यंत प्रेरणादायक है। सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षक शिवानंद त्रिपाठी और कक्षा समन्वयक श्रेया मद्धेशिया ने भी विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर कई विद्यार्थियों ने प्रशिक्षण से जुड़े अपने अनुभव साझा किए जबकि कई विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन अनामिका पांडेय, अमन यादव, आदर्श कुमार, सुभाषचंद यादव ने तथा आभार ज्ञापन अजय यादव और अंकिता ने किया। इस अवसर पर फार्मेसी संकाय के शिक्षकगण जूही तिवारी, नंदिनी जायसवाल, श्रेया मद्धेशिया, प्रवीन कुमार सिंह, डॉ. अभिषेक कुमार सिंह, डॉ. अमित उपाध्याय सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

### सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास को सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण जरूरी

गोरखपुर (एसएनबी)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के फार्मेसी संकाय में उन्नति फाउंडेशन के सहयोग से आयोजित 30 दिवसीय सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन शनिवार को हुआ। इस अवसर

■ एमजीयूजी में एक माह के साफ्ट स्किल प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन

■ छात्रों ने सीखे गये स्किल का किया उत्कृष्ट प्रदर्शन

पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित फार्मेसी संकाय के अधिष्ठाता डॉ. शशिकांत सिंह ने कहा कि सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास के लिए साफ्ट स्किल को विकसित करना जरूरी है।

डॉ. सिंह ने कहा कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम विद्यार्थियों के संप्रेषण कौशल, आत्मविश्वास, नेतृत्व गुण को निखारने के उद्देश्य से आयोजित किया गया। पूरे

महायोगी गोरखपुर विश्वविद्यालय एमजीयूजी के फार्मेसी संकाय में साफ्ट स्किल प्रशिक्षण के समापन अवसर पर उपस्थित प्रतिभागी। फोटो : एसएनबी

प्रशिक्षण के दौरान विद्यार्थियों ने जो कुछ सीखा उस क्षमता का प्रदर्शन अंग्रेजी भाषा में आज प्रस्तुत किया। केवल 30 दिनों में विद्यार्थियों में जो परिवर्तन देखा गया, वह अत्यंत प्रेरणादायक है।

सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षक शिवानंद त्रिपाठी और कक्षा समन्वयक श्रेया मद्धेशिया ने भी विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर कई विद्यार्थियों ने प्रशिक्षण से जुड़े अपने अनुभव साझा किए जबकि कई विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर फार्मेसी संकाय के शिक्षकों सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

### व्यक्तित्व विकास के लिए स्किल प्रशिक्षण जरूरी

**गोरखनाथ विवि**

गोरखपुर, वरिष्ठ संवाददाता। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के फार्मेसी संकाय में आयोजित 30 दिवसीय सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन शनिवार को हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित फार्मेसी संकाय के अधिष्ठाता डॉ. शशिकांत सिंह ने कहा कि सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास के लिए सॉफ्ट स्किल को विकसित करना जरूरी है।

डॉ. सिंह ने कहा कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम विद्यार्थियों के संप्रेषण कौशल, आत्मविश्वास, नेतृत्व गुण और पेशेवर शिष्टाचार को निखारने के उद्देश्य से आयोजित किया गया। पूरे प्रशिक्षण के दौरान विद्यार्थियों ने विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया। आज के समारोह में उन्होंने अपनी क्षमता का उत्कृष्ट प्रदर्शन अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुत किया। सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षक शिवानंद त्रिपाठी और कक्षा समन्वयक श्रेया मद्धेशिया ने भी विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर कई विद्यार्थियों ने प्रशिक्षण से जुड़े अपने अनुभव साझा किए। विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। संचालन अनामिका पांडेय, अमन यादव, आदर्श कुमार, सुभाष चंद और आभार ज्ञापन अजय यादव व अंकिता ने किया।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में शनिवार को आयोजित कार्यक्रम में मौजूद प्रतिभागी।

## समाचार दर्पण

# सैंपलिंग डिजाइन से सुनिश्चित होती है अध्ययन की सटीकता

आनलाइन ब्याख्यान को संबोधित करते डा. विकास कुमार रूप • जागरण

जासं, गोरखपुरः महायोगी गोरक्षनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के वाणिज्य संकाय के प्रबंधन विभाग द्वारा रिसर्च मेथडोलाजी विषय पर आनलाइन विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मारवाड़ी विश्वविद्यालय, राजकोट, गुजरात के एसोसिएट प्रोफेसर डा. विकास कुमार रूप मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे।

मंगलवार को आयोजित कार्यक्रम के दौरान डा. विकास कुमार रूप ने लाजिस्टिक्स के संदर्भ में सैंपलिंग एवं सैंपलिंग डिजाइन विषय पर छात्रों का मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा कि लाजिस्टिक्स में सैंपलिंग का मतलब एक बड़ी आबादी या उत्पाद के एक छोटे से हिस्से को लेकर उस पूरे के बारे में जानकारी प्राप्त करना है। सैंपलिंग डिजाइन इस बात को तय करता है कि यह छोटा हिस्सा कैसे चुना जाएगा। एक सुव्यवस्थित सैंपलिंग डिजाइन लाजिस्टिक्स अध्ययनों में सटीकता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करता है।

उन्होंने प्रायिकता एवं अप्रायिकता सैंपलिंग के विभिन्न प्रकारों की विस्तार से व्याख्या की और बताया कि ये विधियां डाटा संग्रहण, निर्णय-निर्माण एवं लाजिस्टिक्स आपरेशंस रिसर्च में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस मौके पर प्रबंधन विभागाध्यक्ष डा. तरुण श्याम, रवि निषाद सहित कई संकाय सदस्य और बड़ी संख्या में बीबीए (आनर्स) इन लाजिस्टिक्स के छात्र शामिल हुए।

# एमजीयूजी में रिसर्च मेथडोलॉजी पर ऑनलाइन विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन

**संवाददाता**

गोरखपुर। महायोगी गोरक्षनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के वाणिज्य संकाय के प्रबंधन विभाग द्वारा रिसर्च मेथडोलॉजी विषय पर ऑनलाइन विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मारवाड़ी विश्वविद्यालय, राजकोट, गुजरात के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. विकास कुमार रूप मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। डॉ. रूप ने लॉजिस्टिक्स के संदर्भ में सैम्पलिंग एवं सैम्पलिंग डिजाइन विषय पर छात्रों का मार्गदर्शन किया। डॉ. रूप ने यह स्पष्ट किया कि एक सुव्यवस्थित सैम्पलिंग डिजाइन किस प्रकार लॉजिस्टिक्स अध्ययनों में सटीकता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करता है। उन्होंने वास्तविक

लॉजिस्टिक्स परिदृश्यों से उदाहरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि प्रभावशाली सैम्पलिंग रणनीति कैसे सप्लाई चेन प्रदर्शन को अनुकूलित कर सकती है, लागत में कमी ला सकती है और संचालन की दक्षता में वृद्धि कर सकती है। उन्होंने प्रायिकता एवं अप्रायिकता सैम्पलिंग के विभिन्न प्रकारों की विस्तार से व्याख्या की और बताया कि ये विधियाँ डाटा संग्रहण, निर्णय-निर्माण एवं लॉजिस्टिक्स ऑपरेशन्स रिसर्च में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस अवसर पर प्रबंधन विभागाध्यक्ष डॉ. तरुण श्याम, रवि निषाद सहित कई संकाय सदस्य और बड़ी संख्या में बीबीए (ऑनर्स) इन लॉजिस्टिक्स के छात्र शामिल हुए।

# प्रभावशाली सैम्पलिंग रणनीति लागत में ला सकती है कमी

गोरखपुर(एसएनबी)। महायोगी गोरक्षनाथ विवि (एमजीयूजी) के वाणिज्य संकाय के प्रबंधन विभाग द्वारा रिसर्च मेथाडोलॉजी विषय पर आनलाइन विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस

- एमजीयूजी के प्रबंधन विभा ने आयोजित किया विशेषज्ञ व्याख्यान
- लॉजिस्टिक्स के संदर्भ में सैम्पलिंग मामलों पर किया गया मार्गदर्शन

अवसर पर मारवाड़ी विवि, राजकोट, गुजरात के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. विकास कुमार रूप मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे।

डॉ.रूप ने लॉजिस्टिक्स के संदर्भ में सैम्पलिंग एवं सैम्पलिंग डिजाइन विषय पर छात्रों का मार्गदर्शन किया। डॉ. रूप ने यह स्पष्ट किया कि एक सुव्यवस्थित सैम्पलिंग डिजाइन किस प्रकार लॉजिस्टिक्स अध्ययनों में सटीकता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करता है। उन्होंने वास्तविक लॉजिस्टिक्स परिदृश्यों से उदाहरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि प्रभावशाली सैम्पलिंग रणनीति कैसे सप्लाई चेन प्रदर्शन को अनुकूलित कर सकती है, लागत में कमी ला सकती है और संचालन की दक्षता में वृद्धि कर सकती है। उन्होंने प्रायिकता एवं अप्रायिकता सैम्पलिंग के विभिन्न प्रकारों की विस्तार से व्याख्या की और बताया कि ये विधियां डाटा संग्रहण, निर्णय-निर्माण एवं लॉजिस्टिक्स ऑपरेशन्स रिसर्च में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस अवसर पर प्रबंधन विभागाध्यक्ष डॉ. तरुण श्याम, रवि निषाद सहित कई संकाय सदस्य और बड़ी संख्या में बीबीए (ऑनर्स) इन लॉजिस्टिक्स के छात्र शामिल हुए।

# रिसर्च मेथडोलॉजी पर ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन

गोरखपुर। महायोगी गोरक्षनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के वाणिज्य संकाय के प्रबंधन विभाग द्वारा रिसर्च मेथडोलॉजी विषय पर ऑनलाइन विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मारवाड़ी विश्वविद्यालय, राजकोट, गुजरात के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. विकास कुमार रूप मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे।

डॉ. रूप ने लॉजिस्टिक्स के संदर्भ में सैम्पलिंग एवं सैम्पलिंग डिजाइन विषय पर छात्रों का मार्गदर्शन किया। डॉ. रूप ने यह स्पष्ट किया कि एक सुव्यवस्थित सैम्पलिंग डिजाइन किस प्रकार लॉजिस्टिक्स अध्ययनों में सटीकता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करता है। उन्होंने वास्तविक लॉजिस्टिक्स परिदृश्यों से उदाहरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि प्रभावशाली सैम्पलिंग रणनीति कैसे सप्लाई चेन प्रदर्शन को अनुकूलित कर सकती है, लागत में कमी ला सकती है और संचालन की दक्षता में वृद्धि कर सकती है। उन्होंने प्रायिकता एवं अप्रायिकता सैम्पलिंग के विभिन्न प्रकारों की विस्तार से व्याख्या की और बताया कि ये विधियाँ डाटा संग्रहण, निर्णय-निर्माण एवं लॉजिस्टिक्स ऑपरेशन्स रिसर्च में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस अवसर पर प्रबंधन विभागाध्यक्ष डॉ. तरुण श्याम, रवि निषाद सहित कई संकाय सदस्य और बड़ी संख्या में बीबीए (ऑनर्स) इन लॉजिस्टिक्स के छात्र शामिल हुए।


# सैंपलिंग डिजाइन से सुनिश्चित होती है अध्ययन की सटीकता

आनलाइन ब्याख्यान को संबोधित करते डा. विकास कुमार रूप • जागरण

जासं, गोरखपुरः महायोगी गोरक्षनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के वाणिज्य संकाय के प्रबंधन विभाग द्वारा रिसर्च मेथडोलाजी विषय पर आनलाइन विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मारवाड़ी विश्वविद्यालय, राजकोट, गुजरात के एसोसिएट प्रोफेसर डा. विकास कुमार रूप मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे।

मंगलवार को आयोजित कार्यक्रम के दौरान डा. विकास कुमार रूप ने लाजिस्टिक्स के संदर्भ में सैंपलिंग एवं सैंपलिंग डिजाइन विषय पर छात्रों का मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा कि लाजिस्टिक्स में सैंपलिंग का मतलब एक बड़ी आबादी या उत्पाद के एक छोटे से हिस्से को लेकर उस पूरे के बारे में जानकारी प्राप्त करना है। सैंपलिंग डिजाइन इस बात को तय करता है कि यह छोटा हिस्सा कैसे चुना जाएगा। एक सुव्यवस्थित सैंपलिंग डिजाइन लाजिस्टिक्स अध्ययनों में सटीकता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करता है।

उन्होंने प्रायिकता एवं अप्रायिकता सैंपलिंग के विभिन्न प्रकारों की विस्तार से व्याख्या की और बताया कि ये विधियां डाटा संग्रहण, निर्णय-निर्माण एवं लाजिस्टिक्स आपरेशंस रिसर्च में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस मौके पर प्रबंधन विभागाध्यक्ष डा. तरुण श्याम, रवि निषाद सहित कई संकाय सदस्य और बड़ी संख्या में बीबीए (आनर्स) इन लाजिस्टिक्स के छात्र शामिल हुए।


# एमजीयूजी में रिसर्च मेथडोलॉजी पर ऑनलाइन विशेषज्ञ व्याख्यान का हुआ आयोजन

ग्राम स्वराज्य (संवाददाता)

गोरखपुर। महायोगी गोरक्षनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के वाणिज्य संकाय के प्रबंधन विभाग द्वारा रिसर्च मेथडोलॉजी विषय पर ऑनलाइन विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मारवाड़ी विश्वविद्यालय, राजकोट, गुजरात के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. विकास कुमार रूप मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। डॉ. रूप ने लॉजिस्टिक्स के संदर्भ में सैम्पलिंग एवं सैम्पलिंग डिज़ाइन विषय पर छात्रों का मार्गदर्शन किया। डॉ. रूप ने यह स्पष्ट किया कि एक सुव्यवस्थित सैम्पलिंग डिज़ाइन किस प्रकार लॉजिस्टिक्स अध्ययनों में सटीकता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करता है। उन्होंने

वास्तविक लॉजिस्टिक्स परिदृश्यों से उदाहरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि प्रभावशाली सैम्पलिंग रणनीति कैसे सप्लाई चेन प्रदर्शन को अनुकूलित कर सकती है, लागत में कमी ला सकती है और संचालन की दक्षता में वृद्धि कर सकती है। उन्होंने प्रायिकता एवं अप्रायिकता सैम्पलिंग के विभिन्न प्रकारों की विस्तार से व्याख्या की और बताया कि ये विधियाँ डाटा संग्रहण, निर्णय-निर्माण एवं लॉजिस्टिक्स ऑपरेशन्स रिसर्च में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस अवसर पर प्रबंधन विभागाध्यक्ष डॉ. तरुण श्याम, रवि निषाद सहित कई संकाय सदस्य और बड़ी संख्या में बीबीए (ऑनर्स) इन लॉजिस्टिक्स के छात्र शामिल हुए।

## समाचार दर्पण

### रिसर्च मेथडोलॉजी पर ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन

गोरखपुर। महायोगी गोरक्षनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के वाणिज्य संकाय के प्रबंधन विभाग द्वारा रिसर्च मेथडोलॉजी विषय पर ऑनलाइन विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मारवाड़ी विश्वविद्यालय, राजकोट, गुजरात के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. विकास कुमार रूप मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे।

डॉ. रूप ने लॉजिस्टिक्स के संदर्भ में सैम्पलिंग एवं सैम्पलिंग डिजाइन विषय पर छात्रों का मार्गदर्शन किया। डॉ. रूप ने यह स्पष्ट किया कि एक सुव्यवस्थित सैम्पलिंग डिजाइन किस प्रकार लॉजिस्टिक्स अध्ययनों में सटीकता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करता है। उन्होंने वास्तविक लॉजिस्टिक्स परिदृश्यों से उदाहरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि प्रभावशाली सैम्पलिंग रणनीति कैसे सप्लाई चेन प्रदर्शन को अनुकूलित कर सकती है, लागत में कमी ला सकती है और संचालन की दक्षता में वृद्धि कर सकती है। उन्होंने प्रायिकता एवं अप्रायिकता सैम्पलिंग के विभिन्न प्रकारों की विस्तार से व्याख्या की और बताया कि ये विधियाँ डाटा संग्रहण, निर्णय-निर्माण एवं लॉजिस्टिक्स ऑपरेशन्स रिसर्च में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस अवसर पर प्रबंधन विभागाध्यक्ष डॉ. तरुण श्याम, रवि निषाद सहित कई संकाय सदस्य और बड़ी संख्या में बीबीए (ऑनर्स) इन लॉजिस्टिक्स के छात्र शामिल हुए।

### एमजीयूजी में रिसर्च मेथडोलॉजी पर ऑनलाइन विशेषज्ञ व्याख्यान का हुआ आयोजन

ग्राम स्वराज्य (संवाददाता)

गोरखपुर। महायोगी गोरक्षनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के वाणिज्य संकाय के प्रबंधन विभाग द्वारा रिसर्च मेथडोलॉजी विषय पर ऑनलाइन विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मारवाड़ी विश्वविद्यालय, राजकोट, गुजरात के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. विकास कुमार रूप मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। डॉ. रूप ने लॉजिस्टिक्स के संदर्भ में सैम्पलिंग एवं सैम्पलिंग डिज़ाइन विषय पर छात्रों का मार्गदर्शन किया। डॉ. रूप ने यह स्पष्ट किया कि एक सुव्यवस्थित सैम्पलिंग डिज़ाइन किस प्रकार लॉजिस्टिक्स अध्ययनों में सटीकता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करता है। उन्होंने वास्तविक लॉजिस्टिक्स परिदृश्यों से उदाहरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि प्रभावशाली सैम्पलिंग रणनीति कैसे सप्लाई चेन प्रदर्शन को अनुकूलित कर सकती है, लागत में कमी ला सकती है और संचालन की दक्षता में वृद्धि कर सकती है। उन्होंने प्रायिकता एवं अप्रायिकता सैम्पलिंग के विभिन्न प्रकारों की विस्तार से व्याख्या की और बताया कि ये विधियाँ डाटा संग्रहण, निर्णय-निर्माण एवं लॉजिस्टिक्स ऑपरेशन्स रिसर्च में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस अवसर पर प्रबंधन विभागाध्यक्ष डॉ. तरुण श्याम, रवि निषाद सहित कई संकाय सदस्य और बड़ी संख्या में बीबीए (ऑनर्स) इन लॉजिस्टिक्स के छात्र शामिल हुए।

### प्रभावशाली सैम्पलिंग रणनीति लागत में ला सकती है कमी

गोरखपुर(एसएनबी)। महायोगी गोरक्षनाथ विवि (एमजीयूजी) के वाणिज्य संकाय के प्रबंधन विभाग द्वारा रिसर्च मेथाडोलॉजी विषय पर आनलाइन विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मारवाड़ी विवि, राजकोट, गुजरात के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. विकास कुमार रूप मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे।

- एमजीयूजी के प्रबंधन विभा ने आयोजित किया विशेषज्ञ व्याख्यान
- लॉजिस्टिक्स के संदर्भ में सैम्पलिंग मामलों पर किया गया मार्गदर्शन

डॉ.रूप ने लॉजिस्टिक्स के संदर्भ में सैम्पलिंग एवं सैम्पलिंग डिजाइन विषय पर छात्रों का मार्गदर्शन किया। डॉ. रूप ने यह स्पष्ट किया कि एक सुव्यवस्थित सैम्पलिंग डिजाइन किस प्रकार लॉजिस्टिक्स अध्ययनों में सटीकता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करता है। उन्होंने वास्तविक लॉजिस्टिक्स परिदृश्यों से उदाहरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि प्रभावशाली सैम्पलिंग रणनीति कैसे सप्लाई चेन प्रदर्शन को अनुकूलित कर सकती है, लागत में कमी ला सकती है और संचालन की दक्षता में वृद्धि कर सकती है। उन्होंने प्रायिकता एवं अप्रायिकता सैम्पलिंग के विभिन्न प्रकारों की विस्तार से व्याख्या की और बताया कि ये विधियां डाटा संग्रहण, निर्णय-निर्माण एवं लॉजिस्टिक्स ऑपरेशन्स रिसर्च में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस अवसर पर प्रबंधन विभागाध्यक्ष डॉ. तरुण श्याम, रवि निषाद सहित कई संकाय सदस्य और बड़ी संख्या में बीबीए (ऑनर्स) इन लॉजिस्टिक्स के छात्र शामिल हुए।

### एमजीयूजी में रिसर्च मेथडोलॉजी पर ऑनलाइन विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन

संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरक्षनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के वाणिज्य संकाय के प्रबंधन विभाग द्वारा रिसर्च मेथडोलॉजी विषय पर ऑनलाइन विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मारवाड़ी विश्वविद्यालय, राजकोट, गुजरात के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. विकास कुमार रूप मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। डॉ. रूप ने लॉजिस्टिक्स के संदर्भ में सैम्पलिंग एवं सैम्पलिंग डिजाइन विषय पर छात्रों का मार्गदर्शन किया। डॉ. रूप ने यह स्पष्ट किया कि एक सुव्यवस्थित सैम्पलिंग डिजाइन किस प्रकार लॉजिस्टिक्स अध्ययनों में सटीकता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करता है। उन्होंने वास्तविक लॉजिस्टिक्स परिदृश्यों से उदाहरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि प्रभावशाली सैम्पलिंग रणनीति कैसे सप्लाई चेन प्रदर्शन को अनुकूलित कर सकती है, लागत में कमी ला सकती है और संचालन की दक्षता में वृद्धि कर सकती है। उन्होंने प्रायिकता एवं अप्रायिकता सैम्पलिंग के विभिन्न प्रकारों की विस्तार से व्याख्या की और बताया कि ये विधियाँ डाटा संग्रहण, निर्णय-निर्माण एवं लॉजिस्टिक्स ऑपरेशन्स रिसर्च में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस अवसर पर प्रबंधन विभागाध्यक्ष डॉ. तरुण श्याम, रवि निषाद सहित कई संकाय सदस्य और बड़ी संख्या में बीबीए (ऑनर्स) इन लॉजिस्टिक्स के छात्र शामिल हुए।

### एमजीयूजी में रिसर्च मेथडोलॉजी पर ऑनलाइन विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन'

संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरक्षनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के वाणिज्य संकाय के प्रबंधन विभाग द्वारा रिसर्च मेथडोलॉजी विषय पर ऑनलाइन विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मारवाड़ी विश्वविद्यालय, राजकोट, गुजरात के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. विकास कुमार रूप मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। डॉ. रूप ने लॉजिस्टिक्स के संदर्भ में सैम्पलिंग एवं सैम्पलिंग डिजाइन विषय पर छात्रों का मार्गदर्शन किया। डॉ. रूप ने यह स्पष्ट किया कि एक सुव्यवस्थित सैम्पलिंग डिजाइन किस प्रकार लॉजिस्टिक्स अध्ययनों में सटीकता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करता है। उन्होंने वास्तविक लॉजिस्टिक्स परिदृश्यों से उदाहरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि प्रभावशाली सैम्पलिंग रणनीति कैसे सप्लाई चेन प्रदर्शन को अनुकूलित कर सकती है, लागत में कमी ला सकती है और संचालन की दक्षता में वृद्धि कर सकती है। उन्होंने प्रायिकता एवं अप्रायिकता सैम्पलिंग के विभिन्न प्रकारों की विस्तार से व्याख्या की और बताया कि ये विधियाँ डाटा संग्रहण, निर्णय–निर्माण एवं लॉजिस्टिक्स ऑपरेशन्स रिसर्च मेमहत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस अवसर पर प्रबंधन विभागाध्यक्ष डॉ. तरुण श्याम, रवि निषाद सहित कई संकाय सदस्य और बडी संख्या में बीबीए (ऑनर्स) इन लॉजिस्टिक्स के छात्र शामिल हुए।

## समाचार दर्पण

# एमजीयूजी में विश्व लिवर दिवस की पूर्व संध्या पर विशेष व्याख्यान का आयोजन

**निशुल्क शिविर में सौ से अधिक रोगियों को परामर्श दिया प्रो. तोमर ने**

महंत दिग्विजयनाथ आयुर्वेद चिकित्सालय आरोग्यधाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर में निशुल्क चिकित्सा शिविर में प्रो. जीएस तोमर द्वारा सौ से अधिक रोगियों को चिकित्सा परामर्श प्रदान किया। इनमें अधिकांश रोगी मधुमेह, गठिया, श्वास रोग एवं लिवर से जुड़ी बीमारियों के मिले। रोगियों को औषधियों के साथ खान पान एवं योगासनों की जानकारी भी प्रदान की गई।

**संतुलित आहार से स्वस्थ रहेगा लिवर : प्रो. जीएस तोमर**
**लिवर की बीमारियों को रोकने में पोषण की महत्वपूर्ण भूमिका : प्रो. जीएस तोमर**

गोरखपुर (गो०मे०सं०)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के गुरु गोरक्षनाथ चिकित्सा विज्ञान संस्थान में विश्व लिवर दिवस की पूर्व संध्या पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता, विश्व आयुर्वेद मिशन के संस्थापक अध्यक्ष एवं पूर्व प्राचार्य राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय हंडिया, प्रयागराज प्रो. (डॉ) जीएस तोमर ने लिवर रोगों में आयुर्वेद की भूमिका विषय पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि स्वस्थ रहने के लिए हमें खान पान पर विशेष ध्यान देना चाहिए। संतुलित एवं हितकारी भोजन से न केवल हम लिवर को स्वस्थ रख सकते हैं अपितु लिवर के रुग्ण होने पर भी इसे ठीक कर सकते हैं । डॉ. तोमर ने बताया कि प्रत्येक वर्ष 19 अप्रैल को विश्व लिवर दिवस मनाया जाता है । प्रति वर्ष इसका एक थीम निर्धारित किया जाता है । इस वर्ष, 2025, विश्व लिवर दिवस की थीम है, भोजन ही औषधि है। यह थीम संपूर्ण खाद्य पदार्थों से भरपूर संतुलित आहार के माध्यम से लिवर के स्वास्थ्य को बनाए रखने और लिवर की बीमारियों को रोकने में पोषण की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देती है। उन्होंने बताया कि आचार्य कश्यप ने आहार को महाभैषज्य (आहार सभी औषधियों में सर्वोत्तम है) कहा है। आहार को महाभैषज्य इसलिए कहा जाता है क्योंकि आयुर्वेद के अनुसार, यह सभी औषधियों में सबसे बेहतर है। यह स्वस्थ शरीर को बनाए रखने और रोगों को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसे श्रेष्ठ औषधि भी माना जाता है क्योंकि उचित आहार के सेवन से कई बीमारियों को रोका या ठीक किया जा सकता है। प्रो. तोमर ने कहा कि आयुर्वेद में आहार, निद्रा एवं ब्रह्मचर्य तीन उपस्तंभ बताए गए हैं। इनमें आहार सबसे महत्वपूर्ण है। महर्षियों का मानना है कि यह शरीर आहार से ही निर्मित होता है तथा रोगों की उत्पत्ति भी मिथ्या आहार से ही होती है। अतः हमें हितकर आहार का ही सेवन करना चाहिए । चरक ने प्रकृति, करण, संयोग, राशि, काल, देश, उपयोक्ता एवं उपयोगसंस्था नाम से आहार सम्बन्धी आठ नियमों का उल्लेख किया है । वहीं सुश्रुत ने बारह नियम बताए हैं । मोटे तौर पर हमें देश, ऋतु, काल एवं प्रकृति के अनुसार उचित मात्रा में काल भोजन करना चाहिए । लिवर या यकृत को वैज्ञानिकों ने जीवन रूपी पहिए की धुरी बताया है । यह शरीर की सबसे बड़ी ग्रंथि है जो एक्जोक्राइन, एण्डोक्राइन एवं रेग्युलेटरी तीनों प्रकार के कार्यों को करती है। इसके विकृत होने से शरीर का प्रत्येक अंग प्रभावित होता है। अपने चालीस वर्षों से अधिक के शोध अनुभव के द्वारा तैयार की गई औषधि प्रवेकलिव को डॉ तोमर ने हिपेटाइटिस बी तथा सी, लिवर सिरोसिस, फैटी लिवर एवं क्रानिक लिवर डिसीजेज में अत्यंत कारगर बताया। व्याख्यान के पूर्व दैवपूजन एवं प्रार्थना हुई । इसके बाद संस्थान के प्राचार्य प्रो गिरिधर वेदान्तम ने अतिथि परिचय एवं स्वागत किया एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ विष्णु ने किया।

# कोशिका संवर्धन तकनीकी से संभव होगा खराब अंगों का इलाज

**गोरखपुर(एसएनबी)** ।महायोगी गोरखनाथ विवि (एमजीयूजी) के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय में गंभीर बीमारियों के निदान हेतु औषधियों की खोज में पशु कोशिका संवर्धन तकनीक की बढ़ती भूमिका और उसमें रोजगार की संभावनाओं पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में पारूल विवि, बड़ोदरा गुजरात मे जैव प्रौद्योगिकी विभाग के आचार्य डा. तरुण कुमार उपाध्याय उपस्थित रहे।

**■ एमजीयूजी के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय में व्याख्यान आयोजित**

डा. उपाध्याय ने कहा कि कोशिका संवर्धन की मदद से आने वाले समय में थ्रीडी प्रिंटिंग तकनीक से खराब हुए अंगो को प्रत्यारोपित कर सकते है। यह तकनीक महत्वपूर्ण इसीलिए है क्योंकि इसमें पशु कोशिका संवर्धन का उपयोग कर दवाओं को पहले से ही नियंत्रित वातावरण में परखा जा सकता है, जिससे जीवित पशुओं पर प्रयोग की निर्भरता एवं आवश्यकता कम हो जाती है। पारंपरिक तरीकों की तुलना में यह तकनीक दवाओं के असर को जल्दी और सटीक रूप से दर्शाती है। आज इस तकनीक का उपयोग वैज्ञानिक रिसर्च, वैक्सीन उत्पादन तथा कैंसर रिसर्च जैसे महत्वपूर्ण औषधियों की खोज के खोज में किया जा रहा है। मुख्य वक्ता को संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह ने स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। धन्यवाद ज्ञापन बायोटेक्नोलाजी विभागाध्यक्ष डा. अमित कुमार दुबे ने किया।

## संतुलित आहार से स्वस्थ रहेगा लिवर : प्रो. जीएस तोमर

'एमजीयूजी में विश्व लिवर दिवस की पूर्व संध्या पर विशेष व्याख्यान का आयोजन'
'लिवर की बीमारियों को रोकने में पोषण की महत्वपूर्ण भूमिका : प्रो. जीएस तोमर'

# संतुलित आहार से स्वस्थ रहेगा लिवर : प्रो. जीएस तोमर

## एमजीयूजी में विश्व लिवर दिवस की पूर्व संध्या पर विशेष व्याख्यान का आयोजन

## लिवर की बीमारियों को रोकने में पोषण की महत्वपूर्ण भूमिका : प्रो. जीएस तोमर

ग्राम स्वराज्य संवाददाता

**गोरखपुर**। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के गुरु गोरक्षनाथ चिकित्सा विज्ञान संस्थान में विश्व लिवर दिवस की पूर्व संध्या पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता, विश्व आयुर्वेद मिशन के संस्थापक अध्यक्ष एवं पूर्व प्राचार्य राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय हंडिया, प्रयागराज प्रो. (डॉ) जीएस तोमर ने लिवर रोगों में आयुर्वेद की भूमिका विषय पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि स्वस्थ रहने के लिए हमें खान पान पर विशेष ध्यान देना चाहिए। संतुलित एवं हितकारी भोजन से न केवल हम लिवर को स्वस्थ रख सकते हैं अपितु लिवर के रुग्ण होने पर भी इसे ठीक कर सकते हैं।

डॉ. तोमर ने बताया कि प्रत्येक वर्ष 19 अप्रैल को विश्व लिवर दिवस मनाया जाता है । प्रति वर्ष इसका एक थीम निर्धारित किया जाता है । इस वर्ष, 2025, विश्व लिवर दिवस की थीम है, भोजन ही औषधि है। यह थीम संपूर्ण खाद्य पदार्थों से भरपूर संतुलित आहार के माध्यम से लिवर के स्वास्थ्य को बनाए रखने और लिवर की बीमारियों को रोकने में पोषण की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देती है। उन्होंने बताया कि आचार्य कश्यप ने आहार को महाभैषज्य (आहार सभी औषधियों में सर्वोत्तम है) कहा है। आहार को महाभैषज्य इसलिए कहा जाता है क्योंकि आयुर्वेद के अनुसार, यह सभी औषधियों में सबसे बेहतर है। यह स्वस्थ शरीर को बनाए रखने और रोगों को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसे श्रेष्ठ औषधि भी माना जाता है क्योंकि उचित आहार के सेवन से कई बीमारियों को रोका या ठीक किया जा सकता है।

**निशुल्क शिविर में सौ से अधिक रोगियों को परामर्श दिया प्रो. तोमर ने**

महंत दिग्विजयनाथ आयुर्वेद चिकित्सालय आरोग्यधाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर में निशुल्क चिकित्सा शिविर में प्रो. जीएस तोमर द्वारा सौ से अधिक रोगियों को चिकित्सा परामर्श प्रदान किया। इनमें अधिकांश रोगी मधुमेह, गठिया, श्वास रोग एवं लिवर से जुड़ी बीमारियों के मिले। रोगियों को औषधियों के साथ खान पान एवं योगासनों की जानकारी भी प्रदान की गई।

प्रो. तोमर ने कहा कि आयुर्वेद में आहार, निद्रा एवं ब्रह्मचर्य तीन उपस्तंभ बताए गए हैं। इनमें आहार सबसे महत्वपूर्ण है। महर्षियों का मानना है कि यह शरीर आहार से ही निर्मित होता है तथा रोगों की उत्पत्ति भी मिथ्या आहार से ही होती है। अतः हमें हितकर आहार का ही सेवन करना चाहिए । चरक ने प्रकृति, करण, संयोग, राशि, काल, देश, उपयोक्ता एवं उपयोगसंस्था नाम से आहार सम्बन्धी आठ नियमों का उल्लेख किया है । वहीं सुश्रुत ने बारह नियम बताए हैं । मोटे तौर पर हमें देश, ऋतु, काल एवं प्रकृति के अनुसार उचित मात्रा में काल भोजन करना चाहिए । लिवर या यकृत को वैज्ञानिकों ने जीवन रूपी पहिए की धुरी बताया है । यह शरीर की सबसे बड़ी ग्रंथि है जो एक्जोक्राइन, एण्डोक्राइन एवं रेग्युलेटरी तीनों प्रकार के कार्यों को करती है। इसके विकृत होने से शरीर का प्रत्येक अंग प्रभावित होता है।

अपने चालीस वर्षों से अधिक के शोध अनुभव के द्वारा तैयार की गई औषधि प्रवेकलिव को डॉ तोमर ने हिपेटाइटिस बी तथा सी, लिवर सिरोसिस, फैटी लिवर एवं क्रानिक लिवर डिसीजेज में अत्यंत कारगर बताया। व्याख्यान के पूर्व दैवपूजन एवं प्रार्थना हुई । इसके बाद संस्थान के प्राचार्य प्रो गिरिधर वेदान्तम ने अतिथि परिचय एवं स्वागत किया एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ विष्णु ने किया ।

# कोशिका संवर्धन तकनीकी से संभव होगा खराब अंगों का इलाज : डॉ. उपाध्याय

## एमजीयूजी के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय में व्याख्यान का आयोजन

संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय में गंभीर बीमारियों के निदान हेतु औषधियों की खोज में पशु कोशिका संवर्धन तकनीक की बढ़ती भूमिका और उसमें रोजगार की संभावनाओं पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में पारूल विश्वविद्यालय, बड़ोदरा गुजरात मे जैव प्रौद्योगिकी विभाग के आचार्य डॉ. तरुण कुमार उपाध्याय उपस्थित रहे। डॉ. उपाध्याय ने कहा कि कोशिका संवर्धन की मदद से आने वाले समय में थ्रीडी प्रिंटिंग तकनीक से खराब हुए अंगो को प्रत्यारोपित कर सकते हैं। यह तकनीक महत्वपूर्ण इसीलिए है क्योंकि इसमें पशु कोशिका संवर्धन का उपयोग कर दवाओं को पहले से ही नियंत्रित वातावरण में परखा जा सकता है, जिससे जीवित पशुओं पर प्रयोग की निर्भरता एवं आवश्यकता कम हो जाती है। पारंपरिक तरीकों की तुलना में यह तकनीक दवाओं के असर को जल्दी और सटीक रूप से दर्शाती है। आज इस तकनीक का उपयोग वैज्ञानिक रिसर्च, वैक्सीन उत्पादन तथा कैंसर रिसर्च जैसे महत्वपूर्ण औषधियों की खोज के खोज में किया जा रहा है। मुख्य वक्ता को संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह ने स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। धन्यवाद ज्ञापन बायोटेक्नोलाजी विभागाध्यक्ष डॉ. अमित कुमार दुबे ने किया। इस अवसर पर डॉ. वीरेंद्र कुमार सिंह, डॉ. पवन कुमार कनौजिया, डॉ. अवेधनाथ सिंह, डॉ. अंकिता मिश्रा, डॉ. कीर्ति कुमार यादव, डॉ. प्रेरणा अदिति, डॉ. किरन कुमार ए., डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, धनंजय पाण्डेय, डॉ. रश्मि झा, अनिल कुमार पटेल, जन्मेजय सोनी सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

# 'कोशिका संवर्धन तकनीकी से संभव होगा खराब अंगों का इलाज : डॉ. उपाध्याय'

## 'एमजीयूजी के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय में व्याख्यान का आयोजन'

संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय मे गंभीर बीमारियों के निदान हेतु औषधियों की खोज मे पशु कोशिका संवर्धन तकनीक की बढ़ती भूमिका और उसमें रोजगार की संभावनाओं पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता के रूप मे पारूल विश्वविद्यालय, बड़ोदरा गुजरात मे जैव प्रौद्योगिकी विभाग के आचार्य डॉ. तरुण कुमार उपाध्याय उपस्थित रहे। डॉ. उपाध्याय ने कहा कि कोशिका संवर्धन की मदद से आने वाले समय में थ्रीडी प्रिंटिंग तकनीक से खराब हुए अंगो को प्रत्यारोपित कर सकते है। यह तकनीक महत्वपूर्ण इसीलिए है क्योंकि इसमे पशु कोशिका संवर्धन का उपयोग कर दवाओं को पहले से ही नियंत्रित वातावरण मे परखा जा सकता है, जिससे जीवित पशुओं पर प्रयोग की निर्भरता एवं आवश्यकता कम हो जाती है। पारंपरिक तरीकों की तुलना मे यह तकनीक दवाओं के असर को जल्दी और सटीक रूप से दर्शाती है। आज इस तकनीक का उपयोग वैज्ञानिक रिसर्च, वैक्सीन उत्पादन तथा कैंसर रिसर्च जैसे महत्वपूर्ण औषधियों की खोज के खोज में किया जा रहा है। मुख्य वक्ता को संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह ने स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। धन्यवाद ज्ञापन बायोटेक्नॉलाजी विभागाध्यक्ष डॉ. अमित कुमार दुबे ने किया। इस अवसर पर डॉ. वीरेंद्र कुमार सिंह, डॉ. पवन कुमार कनौजिया, डॉ. अवेधनाथ सिंह, डॉ. अंकिता मिश्रा, डॉ. कीर्ति कुमार यादव, डॉ. प्रेरणा अदिति, डॉ. किरन कुमार ए., डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, धनंजय पाण्डेय, डॉ. रश्मि झा, अनिल कुमार पटेल, जन्मेजय सोनी सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

## समाचार दर्पण

## एमजीयूजी के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय में व्याख्यान का आयोजन

### कोशिका संवर्धन तकनीकी से संभव होगा खराब अंगों का इलाज : डॉ. उपाध्याय

गोरखपुर ? (गो०मे०सं०)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय में गंभीर बीमारियों के निदान हेतु औषधियों की खोज में पशु कोशिका संवर्धन तकनीक की बढ़ती भूमिका और उसमें रोजगार की संभावनाओं पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में पारुल विश्वविद्यालय, बड़ोदरा गुजरात मे जैव प्रौद्योगिकी विभाग के आचार्य डॉ. तरुण कुमार उपाध्याय उपस्थित रहे। डॉ. उपाध्याय ने कहा कि कोशिका संवर्धन की मदद से आने वाले समय में थ्रीडी प्रिंटिंग तकनीक से खराब हुए अंगो को प्रत्यारोपित कर सकते है। यह तकनीक महत्वपूर्ण इसीलिए है क्योंकि इसमें पशु कोशिका संवर्धन का उपयोग कर दवाओं को पहले से ही नियंत्रित वातावरण में परखा जा सकता है, जिससे जीवित पशुओं पर प्रयोग की निर्भरता एवं आवश्यकता कम हो जाती है। पारंपरिक तरीकों की तुलना में यह तकनीक दवाओं के असर को जल्दी और सटीक रूप से दशार्ती है। आज इस तकनीक का उपयोग वैज्ञानिक रिसर्च, वैक्सीन उत्पादन तथा कैंसर रिसर्च जैसे महत्वपूर्ण औषधियों की खोज के खोज में किया जा रहा है। मुख्य वक्ता को संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह ने स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। धन्यबाद ज्ञापन बायोटेक्नॉलाजी विभागाध्यक्ष डॉ. अमित कुमार दुबे ने किया। इस अवसर पर डॉ. धीरेंद्र कुमार सिंह, डॉ. पवन कुमार कनौजिया, डॉ. अवेद्यनाथ सिंह, डॉ. अंकिता मिश्रा, डॉ. कीर्ति कुमार यादव, डॉ. प्रेरणा अदिती, डॉ. किरन कुमार ए., डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, धनंजय पाण्डेय, डॉ. रश्मि झा, अनिल कुमार पटेल, जन्मेजय सोनी सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

### अध्यक्ष चौधरी राघवेंद्र की ताजपोशी को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई टली, सोमवार को होगी जिरह

प्रयागराज (संवाददाता)। कायस्थ पाठशाला (केपी) ट्रस्ट के अध्यक्ष चौधरी राघवेंद्र नाथ सिंह की ताजपोशी को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई शुक्रवार को टल गई है। अब सुनवाई सोमवार को होगी कायस्थ पाठशाला (केपी) ट्रस्ट के अध्यक्ष चौधरी राघवेंद्र नाथ सिंह की ताजपोशी को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई शुक्रवार को टल गई है। अब सुनवाई सोमवार को होगी। एशिया के सबसे बड़े शैक्षणिक ट्रस्ट कायस्थ पाठशाला के अध्यक्ष पद पर एसडीएम के आदेश से पुनर्मतगणना कराए जाने के बाद निर्वाचित अध्यक्ष का प्रमाण पत्र निरस्त कर दूसरे की ताजपोशी के मामले पर शुक्रवार को हाईकोर्ट में लंबी बहस चली।

## आयुर्वेद उत्पादों को मिल सकती है वैश्विक ख्याति : प्रो. बर्त्रम

गोरखपुर(एसएनबी)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) में शनिवार को 'आयुर्वेद: वैश्विक गुणवत्ता के परिप्रेक्ष्य में' विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में इकोमोशन एआई सॉल्यूशन कंपनी, जर्मनी के पूर्व सीओओ अर्ल बर्त्रम कुचने उपस्थित रहे।

श्री बर्त्रम ने कहा कि पश्चिमी देश सुविधाजनक और वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित उत्पादों को अधिक प्राथमिकता देते हैं। वहां शिलाजीत जैसे हर्ब्स के एक्सट्रैक्ट को एंटी-एजिंग और एथलेटिक परफॉर्मेंस के लिए उपयोग किया जा रहा है। उन्होंने आयुर्वेद के उत्पादों की वैश्विक स्तर पर शोध वैज्ञानिकता और गुणवत्ता मानकों पर संशय को दूर करने के लिए भारतीय गुणवत्ता बैज की परिकल्पना रखी, जो सरकार या निजी संगठनों द्वारा संचालित हो सकता है। उन्होंने कहा कि यह बैज केवल मार्केटिंग के लिए नहीं होगा, बल्कि गुणवत्ता सुधार की एक स्थायी पहल होगी जो आयुर्वेद को वैश्विक मंच पर मजबूत स्थान दिलाएगी। यह प्रस्ताव आयुर्वेद को परंपरा से निकालकर वैज्ञानिक और आधुनिक स्वास्थ्य प्रणाली में स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा सकता है। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद को अपनाकर उन्होंने एक वर्ष में 50 किलोग्राम वजन घटाया। इस दौरान उन्होंने हठ योग, अश्वगंधा और शिलाजीत जैसे आयुर्वेदिक हर्ब्स को अपने जीवन में शामिल किया। व्याख्यान के समापन पर आभार ज्ञापन आयुर्वेद संकाय के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम ने किया। इस अवसर पर आयुर्वेद कालेज के सभी आचार्य एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

**■ एमजीयूजी के आयुर्वेद कॉलेज में जर्मनी से आए अर्ल बर्त्रम का व्याख्यान**

महायोगी गोरखनाथ विवि. आयुर्वेद कॉलेज में आयोजित व्याख्यान में सम्बोधित करते मुख्यवक्ता जर्मनी के अर्ल बर्त्रम कुचने। फोटो : एसएनबी

## आयुर्वेदिक उत्पादों को मिल सकती है वैश्विक ख्याति : अर्ल बर्त्रम कुचने

गोरखपुर : महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कालेज) में शनिवार को अतिथि व्याख्यान आयोजित किया गया। विषय था- 'आयुर्वेद : वैश्विक गुणवत्ता के परिप्रेक्ष्य में'।

मुख्य वक्ता जर्मनी के विज्ञानी अर्ल बर्त्रम कुचने ने कहा कि पश्चिमी देश सुविधाजनक और विज्ञानी रूप से प्रमाणित उत्पादों को अधिक प्राथमिकता देते हैं। भारतीय आयुर्वेदिक उत्पादों को भी वैश्विक ख्याति मिल सकती है, इसके लिए उसकी गुणवत्ता को परख कर संशय को दूर करना होगा। इस दौरान उन्होंने हठ योग, अश्वगंधा और शिलाजीत जैसे आयुर्वेदिक औषधियों को अपने जीवन में शामिल किया। आयुर्वेद संकाय के प्राचार्य डा. गिरिधर वेदांतम ने आभार प्रकट किया। विज्ञप्ति

## भारतीय गुणवत्ता बैज से आयुर्वेद उत्पादों को मिल सकती है वैश्विक ख्याति

### एमजीयूजी के आयुर्वेद कॉलेज में जर्मनी से आए अर्ल बर्त्रम का व्याख्यान

गोरखपुर (गो०मे०सं०)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) में शनिवार को ह्यआयुर्वेद : वैश्विक गुणवत्ता के परिप्रेक्ष्य मेंह्न विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में इकोमोशन एआई सॉल्यूशन कंपनी, जर्मनी के पूर्व सीओओ अर्ल बर्त्रम कुचने उपस्थित रहे। अपने संबोधन में अर्ल बर्त्रम ने कहा कि पश्चिमी देश सुविधाजनक और वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित उत्पादों को अधिक प्राथमिकता देते हैं। वहां शिलाजीत जैसे हर्ब्स के एक्सट्रैक्ट को एंटी-एजिंग और एथलेटिक परफॉर्मेंस के लिए उपयोग किया जा रहा है। उन्होंने आयुर्वेद के उत्पादों की वैश्विक स्तर पर शोध वैज्ञानिकता और गुणवत्ता मानकों पर संशय को दूर करने के लिए भारतीय गुणवत्ता बैज की परिकल्पना रखी, जो सरकार या निजी संगठनों द्वारा संचालित हो सकता है। उन्होंने कहा कि यह बैज केवल मार्केटिंग के लिए नहीं होगा, बल्कि गुणवत्ता सुधार की एक स्थायी पहल होगी जो आयुर्वेद को वैश्विक मंच पर मजबूत स्थान दिलाएगी। यह प्रस्ताव आयुर्वेद को परंपरा से निकालकर वैज्ञानिक और आधुनिक स्वास्थ्य प्रणाली में स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा सकता है। अपने अनुभव साझा करते हुए उन्होंने कहा कि आयुर्वेद को अपनाकर उन्होंने एक वर्ष में 50 किलोग्राम वजन घटाया। इस दौरान उन्होंने हठ योग, अश्वगंधा और शिलाजीत जैसे आयुर्वेदिक हर्ब्स को अपने जीवन में शामिल किया। व्याख्यान के समापन पर आभार ज्ञापन आयुर्वेद संकाय के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम ने किया। इस अवसर पर आयुर्वेद कॉलेज के सभी आचार्य एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

## भारतीय गुणवत्ता बैज से आयुर्वेद उत्पादों को मिल सकती है वैश्विक ख्याति'

### एमजीयूजी के आयुर्वेद कॉलेज में जर्मनी से आए अर्ल बर्त्रम का व्याख्यान

संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) में शनिवार को आयुर्वेद रू वैश्विक गुणवत्ता के परिप्रेक्ष्य में विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में इकोमोशन एआई सॉल्यूशन कंपनी, जर्मनी के पूर्व सीओओ अर्ल बर्त्रम कुचने उपस्थित रहे।

अपने संबोधन के श्री अर्ल बर्त्रम ने कहा कि पश्चिमी देश सुविधाजनक और वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित उत्पादों को अधिक प्राथमिकता देते हैं। वहां शिलाजीत जैसे हर्ब्स के एक्सट्रैक्ट को एंटी-एजिंग और एथलेटिक परफॉर्मेंस के लिए उपयोग किया जा रहा है। उन्होंने आयुर्वेद के उत्पादों की वैश्विक स्तर पर शोध वैज्ञानिकता और गुणवत्ता मानकों पर संशय को दूर करने के लिए भारतीय गुणवत्ता बैज की परिकल्पना रखी, जो सरकार या निजी संगठनों द्वारा संचालित हो सकता है। उन्होंने कहा कि यह बैज केवल मार्केटिंग के लिए नहीं होगा, बल्कि गुणवत्ता सुधार की एक स्थायी पहल होगी जो आयुर्वेद को वैश्विक मंच पर मजबूत स्थान दिलाएगी। यह प्रस्ताव आयुर्वेद को परंपरा से निकालकर वैज्ञानिक और आधुनिक स्वास्थ्य प्रणाली में स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा सकता है।

अपने अनुभव साझा करते हुए उन्होंने कहा कि आयुर्वेद को अपनाकर उन्होंने एक वर्ष में 50 किलोग्राम वजन घटाया। इस दौरान उन्होंने हठ योग, अश्वगंधा और शिलाजीत जैसे आयुर्वेदिक हर्ब्स को अपने जीवन में शामिल किया। व्याख्यान के समापन पर आभार ज्ञापन आयुर्वेद संकाय के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम ने किया। इस अवसर पर आयुर्वेद कॉलेज के सभी आचार्य एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

## समाचार दर्पण

### एमएनसी में चयनित हुए एमजीयूजी के दो विद्यार्थी

**संबद्ध स्वास्थ्य संकाय के विद्यार्थी हैं दोनों, एक छात्रा ने आईआईटी जेम क्वालीफाई किया**

**दो छात्रों के एमएनसी में चयन होने पर विश्वविद्यालय में हर्ष का माहौल है : प्रो. सुनील कुमार सिंह**

**नव अमृत प्रभात संवाददाता**

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के एमएससी बायोटेक्नोलॉजी के दो विद्यार्थियों का चयन मल्टीनेशनल कंपनियों (एमएनसी) में हुआ है। एमएससी बायोटेक्नोलॉजी के छात्र राजेश्वर कुमार का चयन सीरम इंस्टिट्यूट ऑफ फार्मेसी दिल्ली में 4.35 लाख रुपये के वार्षिक पैकेज पर जबकि अमित मल्ल का चयन हिंदुस्तान यूनिलिवर लिमिटेड रुड़की में क्वालिटी कण्ट्रोलर के पद पर 2.55 लाख वार्षिक पैकेज पर हुआ है। संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह ने बताया कि दो छात्रों के एमएनसी में चयन होने पर विश्वविद्यालय में हर्ष का माहौल है। विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों के प्लेसमेंट के लिए निरंतर कंपनियों के साथ सामंजस्य स्थापित कर ज्यादा से ज्यादा प्लेसमेंट कराने के लिए प्रयासरत है। उन्होंने बताया कि उपलब्धियों के क्रम में ही संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय की बीएससी बायोटेक्नोलॉजी अंतिम वर्ष की छात्रा सौम्या सिंह ने आईआईटी जेम ( क्वल खअर-2025) क्वालीफाई किया है। मल्टीनेशनल कंपनियों में छात्रों के चयन और एक छात्रा के आईआईटी जेम क्वालीफाई करने पर गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह, कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव सहित समूचे विश्वविद्यालय परिसर ने बधाई दी है।

राजेश्वर कुमार
एम एस सी
बायोटेक्नोलॉजी
4.35 लाख CTC
सीरम इंस्टिट्यूट
ऑफ़ फार्मेसी

अमित मल्ल
एम एस सी
बायोटेक्नोलॉजी
2.55 लाख CTC
हिंदुस्तान यूनिलिवर
लिमिटेड रुड़की

सौम्या सिंह
बी.एस.सी.
बायोटेक्नोलॉजी
आईआईटी जेम
(IIT JAM-2025)

### एमएनसी में चयनित हुए एमजीयूजी के दो विद्यार्थी

गोरखपुर (एसएनबी)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) से संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के एमएससी बायोटेक्नॉलाजी के दो विद्यार्थियों का चयन मल्टीनेशनल कंपनियों (एमएनसी) में हुआ है।

एमएससी बायोटेक्नॉलाजी के छात्र राजेश्वर कुमार का चयन सीरम इंस्टिट्यूट ऑफ फार्मेसी दिल्ली में 4.35 लाख रुपये के वार्षिक पैकेज पर जबकि अमित मल्ल का चयन हिंदुस्तान यूनिलिवर लिमिटेड रुड़की में क्वालिटी कण्ट्रोलर के पद पर 2.55 लाख वार्षिक पैकेज पर हुआ है।

संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह ने बताया कि दो छात्रों के एमएनसी में चयन होने पर विश्वविद्यालय में हर्ष का माहौल है। विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों के प्लेसमेंट के लिए निरंतर कंपनियों के साथ सामंजस्य स्थापित कर ज्यादा से ज्यादा प्लेसमेंट कराने के लिए प्रयासरत है। उन्होंने बताया कि उपलब्धियों के क्रम में ही संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय की बीएससी बायोटेक्नोलॉजी अंतिम वर्ष की छात्रा सौम्या सिंह ने आईआईटी जेम-2025 क्वालीफाई किया है।

■ संबद्ध स्वास्थ्य संकाय के विद्यार्थी हैं दोनों

■ एक छात्रा ने आईआईटी जेम क्वालीफाई किया

मल्टीनेशनल कंपनियों में छात्रों के चयन और एक छात्रा के आईआईटी जेम क्वालीफाई करने पर गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह, कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव सहित समूचे विश्वविद्यालय परिसर ने बधाई दी है।

### एमएनसी में चयनित हुए एमजीयूजी के दो विद्यार्थी

गोरखपुर (विधान केसरी)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर एमजीयूजी के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के एमएससी बायोटेक्नोलॉजी के दो विद्यार्थियों का चयन मल्टीनेशनल कंपनियों एमएनसी में हुआ है। एमएससी बायोटेक्नोलॉजी के छात्र राजेश्वर कुमार का चयन सीरम इंस्टिट्यूट ऑफ फार्मेसी दिल्ली में 4.35 लाख रुपये के वार्षिक पैकेज पर जबकि अमित मल्ल का चयन हिंदुस्तान यूनिलिवर लिमिटेड रुड़की में क्वालिटी कण्ट्रोलर के पद पर 2.55 लाख वार्षिक पैकेज पर हुआ है। संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह ने बताया कि दो छात्रों के एमएनसी में चयन होने पर विश्वविद्यालय में हर्ष का माहौल है। विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों के प्लेसमेंट के लिए निरंतर कंपनियों के साथ सामंजस्य स्थापित कर ज्यादा से ज्यादा प्लेसमेंट कराने के लिए प्रयासरत है। उन्होंने बताया कि उपलब्धियों के क्रम में ही संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय की बीएससी बायो टेक्नोलॉजी अंतिम वर्ष की छात्रा सौम्या सिंह ने आईआईटी जेम क्वालीफाई किया है। मल्टीनेशनल कंपनियों में छात्रों के चयन और एक छात्रा के आईआईटी जेम क्वालीफाई करने पर गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह, कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव सहित समूचे विश्वविद्यालय परिसर ने बधाई दी है।

### 'एमएनसी में चयनित हुए एमजीयूजी के दो विद्यार्थी'

**'संब) स्वास्थ्य संकाय के विद्यार्थी हैं दोनों, एक छात्रा ने आईआईटी जेम क्वालीफाई किया'**

**संवाददाता**

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के एमएससी बायोटेक्नोलॉजी के दो विद्यार्थियों का चयन मल्टीनेशनल कंपनियों (एमएनसी) में हुआ है। एमएससी बायोटेक्नोलॉजी के छात्र राजेश्वर कुमार का चयन सीरम इंस्टिट्यूट ऑफ फार्मेसी दिल्ली में 4.35 लाख रुपये के वार्षिक पैकेज पर जबकि अमित मल्ल का चयन हिंदुस्तान यूनिलिवर लिमिटेड रुड़की में क्वालिटी कण्ट्रोलर के पद पर 2.55 लाख वार्षिक पैकेज पर हुआ है। संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह ने बताया कि दो छात्रों के एमएनसी में चयन होने पर विश्वविद्यालय में हर्ष का माहौल है। विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों के प्लेसमेंट के लिए निरंतर कंपनियों के साथ सामंजस्य स्थापित कर ज्यादा से ज्यादा प्लेसमेंट कराने के लिए प्रयासरत है। उन्होंने बताया कि उपलब्धियों के क्रम में ही संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय की बीएससी बायोटेक्नोलॉजी अंतिम वर्ष की छात्रा सौम्या सिंह ने आईआईटी जेम ( प्प्ज़ श्र ाड–2025) क्वालीफाई किया है। मल्टीनेशनल कंपनियों में छात्रों के चयन और एक छात्रा के आईआईटी जेम क्वालीफाई करने पर गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह, कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव सहित समूचे विश्वविद्यालय परिसर ने बधाई दी है।

राजेश्वर कुमार
एम एस सी
बायोटेक्नोलॉजी
4.35 लाख CTC
सीरम इंस्टिट्यूट
ऑफ़ फार्मेसी
दिल्ली

अमित मल्ल
एम एस सी
बायोटेक्नोलॉजी
2.55 लाख CTC
हिंदुस्तान यूनिलिवर
लिमिटेड रुड़की

सौम्या सिंह
बी.एस.सी.
बायोटेक्नोलॉजी
आईआईटी जेम
(IIT JAM-2025)

### एमएनसी में चयनित हुए एमजीयूजी के दो विद्यार्थी

**संबद्ध स्वास्थ्य संकाय के विद्यार्थी हैं दोनों, एक छात्रा ने आईआईटी जेम क्वालीफाई किया**

अमित मल्ल

सौम्या सिंह

राजेश्वर कुमार

### दो छात्रों के एमएनसी में चयन होने पर विश्वविद्यालय में हर्ष का माहौल है : प्रो. सुनील कुमार सिंह

राजेश्वर कुमार
एम एस सी
बायोटेक्नोलॉजी
4.35 लाख CTC
सीरम इंस्टिट्यूट
ऑफ़ फार्मेसी
दिल्ली

अमित मल्ल
एम एस सी
बायोटेक्नोलॉजी
2.55 लाख CTC
हिंदुस्तान यूनिलिवर
लिमिटेड रुड़की

सौम्या सिंह
बी.एस.सी.
बायोटेक्नोलॉजी
आईआईटी जेम
(IIT JAM-2025)

○ एमएनसी में चयनित हुए एमजीयूजी के दो विद्यार्थी

○ इसके साथ ही एक छात्रा ने किया आईआईटी जेम क्वालीफाई

### एमएनसी में चयनित हुए एमजीयूजी के दो विद्यार्थी

गोरखपुर, 22 अप्रैल। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के एमएससी बायोटेक्नोलॉजी के दो विद्यार्थियों का चयन मल्टीनेशनल कंपनियों (एमएनसी) में हुआ है। एमएससी बायोटेक्नोलॉजी के छात्र राजेश्वर कुमार का चयन सीरम इंस्टिट्यूट ऑफ फार्मेसी दिल्ली में 4.35 लाख रुपये के वार्षिक पैकेज पर जबकि अमित मल्ल का चयन हिंदुस्तान यूनिलिवर लिमिटेड रुड़की में क्वालिटी कण्ट्रोलर के पद पर 2.55 लाख वार्षिक पैकेज पर हुआ है।

संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह ने बताया कि दो छात्रों के एमएनसी में चयन होने पर विश्वविद्यालय में हर्ष का माहौल है। विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों के प्लेसमेंट के लिए निरंतर कंपनियों के साथ सामंजस्य स्थापित कर ज्यादा से ज्यादा प्लेसमेंट कराने के लिए प्रयासरत है। उन्होंने बताया कि उपलब्धियों के क्रम में ही संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय की बीएससी बायोटेक्नोलॉजी अंतिम वर्ष की छात्रा सौम्या सिंह ने आईआईटी जेम क्वालीफाई किया है।

मल्टीनेशनल कंपनियों में छात्रों के चयन और एक छात्रा के आईआईटी जेम क्वालीफाई करने पर गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह, कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव सहित समूचे विश्वविद्यालय परिसर ने बधाई दी है।

### एमएनसी में चयनित हुए एमजीयूजी के दो विद्यार्थी

**संबद्ध स्वास्थ्य संकाय के विद्यार्थी हैं दोनों, एक छात्रा ने आईआईटी जेम क्वालीफाई किया**

अमित मल्ल
एम एस सी
बायोटेक्नोलॉजी
2.55 लाख CTC
हिंदुस्तान यूनिलिवर
लिमिटेड रुड़की

राजेश्वर कुमार
एम एस सी
बायोटेक्नोलॉजी
4.35 लाख CTC
सीरम इंस्टिट्यूट
ऑफ़ फार्मेसी
दिल्ली

**कौटिल्य का भारत**

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के एमएससी बायोटेक्नोलॉजी के दो विद्यार्थियों का चयन मल्टीनेशनल कंपनियों (एमएनसी) में हुआ है। एमएससी बायोटेक्नोलॉजी के छात्र राजेश्वर कुमार का चयन सीरम इंस्टिट्यूट ऑफ फार्मेसी दिल्ली में 4.35 लाख रुपये के वार्षिक पैकेज पर जबकि अमित मल्ल का चयन हिंदुस्तान यूनिलिवर लिमिटेड रुड़की में क्वालिटी कण्ट्रोलर के पद पर 2.55 लाख वार्षिक पैकेज पर हुआ है। संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह ने बताया कि दो छात्रों के एमएनसी में चयन होने पर विश्वविद्यालय में हर्ष का माहौल है। विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों के प्लेसमेंट के लिए निरंतर कंपनियों के साथ सामंजस्य स्थापित कर ज्यादा से ज्यादा प्लेसमेंट कराने के लिए प्रयासरत है। उन्होंने बताया कि उपलब्धियों के क्रम में ही संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय की बीएससी बायोटेक्नोलॉजी अंतिम वर्ष की छात्रा सौम्या सिंह ने आईआईटी जेम ( आईआईटी जेएम-2025) क्वालीफाई किया है। मल्टीनेशनल कंपनियों में छात्रों के चयन और एक छात्रा के आईआईटी जेम क्वालीफाई करने पर गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह, कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव सहित समूचे विश्वविद्यालय परिसर ने बधाई दी है।

# आरोग्य पथ
मासिक ई-पत्रिका


## समाचार दर्पण

## एमजीयूजी में चलेंगे बीसीए, बीएससी और एमएससी फोरेंसिक साइंस के कोर्स

- एमबीए में कई विशिष्ट कोर्स चलाने की अनुमति भी दी कार्यपरिषद ने
- कार्यपरिषद की बैठक में दर्जनभर से अधिक नए पाठ्यक्रमों के संचालन को मिली मंजूरी

गोरखपुर (गो०मै०सं०)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय

गोरखपुर (एमजीयूजी) की कार्यपरिषद की 14वीं बैठक रविवार को कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह की अध्यक्षता में हुई जिसका संचालन कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने किया। कार्यपरिषद ने विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों में दर्जनभर से अधिक समयानुकूल नए पाठ्यक्रमों के संचालन पर मुहर लगाई। कार्यपरिषद की बैठक में लिए गए निर्णयों की जानकारी देते हुए उप कुलसचिव (प्रशासन) श्रीकांत ने बताया कि कार्यपरिषद ने वर्तमान परिदृश्य में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय महत्व वाले कई पाठ्यक्रमों को शुरू करने के प्रस्ताव को सर्वसम्मति से अनुमति दे दी है। नए पाठ्यक्रमों में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संकाय के तहत सत्र 2025-26 से बैचलर आफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन (बीसीए), स्वास्थ्य एवं जीवन विज्ञान संकाय के अंतर्गत सत्र 2025-26 से एमएससी फोरेंसिक साइंस तथा बीएससी फोरेंसिक साइंस, मानविकी और प्राकृतिक विज्ञान संकाय के तहत सत्र 2026-27 से मास्टर ऑफ आर्टस इन इंग्लिश एण्ड इकोनामिक्स प्रमुख रूप से शामिल हैं। इसके साथ ही वाणिज्य संकाय के प्रबंधन विभाग के तहत सत्र 2026-27 से एमबीए इन मार्केटिंग, एमबीए इन डिजिटल मार्केटिंग, एमबीए इन फाइनेंस, एमबीए इन ह्यूमन रिसोर्स, एमबीए इन फार्मेसी एडमिनिस्ट्रेशन, एमबीए इन हास्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन, एमबीए इन होटल मैनेजमेंट, एमबीए इन हॉस्पिटैलिटी एंड टूरिज्म, एमबीए इन फार्मा मार्केटिंग और एमबीए इन पेट्रोलियम मार्केटिंग जैसे विशिष्ट पाठ्यक्रमों पर भी कार्यपरिषद ने मुहर लगा दी है। उप कुलसचिव ने बताया कि कार्यपरिषद ने संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अंतर्गत संचालित पाठ्यक्रमों को संरक्षित करते हुये निर्णय लिया है कि बीएससी, एमएससी एवं पीएचडी इन बायोटेक्नोलॉजी, बीएससी, एमएससी एवं पीएचडी इन बायोकेमेस्ट्री तथा बीएससी, एमएससी एवं पीएचडी इन माइक्रोबायोलॉजी कोर्स स्वास्थ्य एवं जीवन विज्ञान संकाय के तहत चलाए जाएंगे। जबकि बीएससी, एमएससी एवं पीएचडी इन मेडिकल बायोकेमेस्ट्री और बीएससी, एमएससी और पीएचडी इन मेडिकल माइक्रोबायोलॉजी कोर्स श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कालेज हास्पिटल एण्ड रिसर्च सेंटर के अंतर्गत संचालित किए जाएंगे।

**नवीन सत्र में प्रवेश के लिए परीक्षा तिथियों का हुआ निर्धारण**

एमजीयूजी की कार्यपरिषद की बैठक में नवीन सत्र 2025-26 में विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए प्रवेश परीक्षा की तिथियों को भी अनुमोदित किया गया। बीएससी नर्सिंग, पोस्ट बेसिक बीएससी नर्सिंग तथा एमएससी नर्सिंग में प्रवेश हेतु प्रवेश परीक्षा 18 मई को होगी। इसी तरह बीएससी एवं एमएससी बायोटेक्नालाजी, बायोकेमेस्ट्री, माइक्रोबायोलाजी, मेडिकल बायोकेमेस्ट्री, मेडिकल माइक्रोबायोलाजी तथा बीएससी एग्रीकल्चर, डी.फार्मा एवं बी.फार्मा (एलोपैथिक) में प्रवेश हेतु प्रवेश परीक्षा 21 मई को आयोजित की जाएगी। एएनएम, एनपीसीसी, डिप्लोमा इन लैब टेक्निशियन, इमरजेंसी एण्ड ट्रामा केयर टेक्निशियन, आप्टोमेट्री, आर्थोपेडिक एण्ड प्लास्टर टेक्निशियन, डायलिसिस टेक्निशियन, एनेस्थिसिया एण्ड क्रिटिकल केयर टेक्निशियन तथा बीबीए लाजिस्टिक और पीएचडी के सभी पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षा 25 मई को कराई जाएगी।

**कार्यपरिषद की बैठक में ये रहे मौजूद**

मां विंध्यवासिनी राज्य विश्वविद्यालय मिर्जापुर की कुलपति प्रो. शोभा गौड़, प्रदेश के मुख्यमंत्री के सलाहकार डॉ. जीएन सिंह, अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान वाराणसी के निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह, एमपी शिक्षा परिषद के वरिष्ठ सदस्य रामजन्म सिंह, प्रमथनाथ मिश्र, वरिष्ठ सदस्य, वरिष्ठ कैंसर सर्जन डॉ. सी.एम. सिन्हा, प्रदेश सरकार के प्रमुख सचिव के प्रतिनिधि संयुक्त सचिव प्रेम किशोर पांडेय, प्रिंसिपल, श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्रिंसिपल डॉ. अनुराग श्रीवास्तव, आयुर्वेद कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. गिरिधर वेदांतम, महायोगी गोरखनाथ अस्पताल के चिकित्सा निदेशक राजीव कुमार पाटनी, संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के डीन डॉ. सुनील कुमार, डीन संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान, फार्मास्युटिकल के प्रिंसिपल डॉ. एस.के. सिंह, प्रिंसिपल, डीन एग्रीकल्चर डॉ. विमल कुमार दुबे, विश्वविद्यालय के आयुर्वेद कॉलेज में शरीर रचना विभाग की प्रोफेसर डॉ. मिनी केवी, संहिता सिद्धांत के सहायक आचार्य, डॉ. साध्वी नंदन पांडेय, रामा विश्वविद्यालय, कानपुर में डीन अकादमिक डॉ. हरिओम शरण, डॉ. मधुसूदन पुरोहित, डॉ. प्रशांत सदाशिवमूर्ति, डॉ. रघु राम, वास्तुविद आशीष श्रीवास्तव।

## मगोवि में बीसीए व फोरेंसिक साइंस के पाठ्यक्रम

कार्य परिषद की बैठक में दर्जन से **अधिक पाठ्यक्रमों** को मंजूरी, एमबीए में कई विशिष्ट कोर्स को भी स्वीकृति

जागरण संवाददाता, गोरखपुर: महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर की कार्यपरिषद की 14वीं बैठक रविवार को कुलपति डा. सुरिंदर सिंह की अध्यक्षता में हुई, जिसका संचालन कुलसचिव डा. प्रदीप कुमार राव ने किया। कार्यपरिषद ने विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों में दर्जनभर से अधिक नए रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के संचालन पर मुहर लगाई। कार्यपरिषद की बैठक में लिए गए निर्णयों की जानकारी देते हुए उप कुलसचिव (प्रशासन) श्रीकांत ने बताया कि वर्तमान परिदृश्य में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय महत्व वाले कई पाठ्यक्रमों को शुरू करने के प्रस्ताव को सर्वसम्मति से अनुमति मिल गई है।

नए पाठ्यक्रमों में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संकाय के तहत सत्र 2025-26 से बैचलर आफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन (बीसीए), स्वास्थ्य एवं जीवन विज्ञान संकाय के अंतर्गत सत्र 2025-26 से एमएससी फोरेंसिक साइंस तथा बीएससी फोरेंसिक साइंस, मानविकी और प्राकृतिक विज्ञान संकाय के तहत सत्र 2026-27 से मास्टर आफ आर्टस इन इंग्लिश एंड इकोनामिक्स प्रमुख रूप से शामिल हैं। इसके साथ ही वाणिज्य संकाय के प्रबंधन विभाग के तहत सत्र 2026-27 से एमबीए इन मार्केटिंग, एमबीए इन डिजिटल मार्केटिंग, एमबीए इन फाइनेंस, एमबीए इन ह्यूमन रिसोर्स, एमबीए इन फार्मेसी एडमिनिस्ट्रेशन, एमबीए इन हास्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन, एमबीए इन होटल मैनेजमेंट, एमबीए इन हास्पिटैलिटी एंड टूरिज्म, एमबीए इन फार्मा मार्केटिंग और एमबीए इन पेट्रोलियम मार्केटिंग जैसे विशिष्ट पाठ्यक्रमों पर भी कार्यपरिषद ने मुहर लगा दी है।

उप कुलसचिव ने बताया कि कार्यपरिषद ने संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अंतर्गत संचालित पाठ्यक्रमों को लेकर भी निर्णय लिया है। इस निर्णय में बीएससी, एमएससी एवं पीएचडी इन बायोटेक्नोलॉजी, बीएससी, एमएससी एवं पीएचडी इन बायोकेमेस्ट्री तथा बीएससी, एमएससी एवं पीएचडी इन माइक्रोबायोलाजी कोर्स स्वास्थ्य एवं जीवन विज्ञान संकाय के तहत चलाए जाएंगे, जबकि बीएससी, एमएससी एवं पीएचडी इन मेडिकल बायोकेमेस्ट्री और बीएससी, एमएससी और पीएचडी इन मेडिकल माइक्रोबायोलाजी कोर्स श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कालेज हास्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के अंतर्गत संचालित किए जाएंगे।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में आयोजित कार्य परिषद की बैठक में अध्यक्ष व सदस्य • जागरण

### नवीन सत्र में प्रवेश के लिए परीक्षा तिथि तय

कार्यपरिषद की बैठक में नवीन सत्र विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए प्रवेश परीक्षा की तिथियों को भी अनुमोदित किया गया।

बीएससी नर्सिंग, पोस्ट बेसिक बीएससी नर्सिंग तथा एमएससी नर्सिंग में प्रवेश हेतु प्रवेश परीक्षा 18 मई को होगी। इसी तरह बीएससी एवं एमएससी बायोटेक्नालाजी, बायोकेमेस्ट्री, माइक्रोबायोलाजी, मेडिकल बायोकेमेस्ट्री, मेडिकल माइक्रोबायोलाजी तथा बीएससी एग्रीकल्चर, डीफार्मा एवं बीफार्मा (एलोपैथिक) में प्रवेश हेतु प्रवेश परीक्षा 21 मई को आयोजित की जाएगी। एएनएम, एनपीसीसी, डिप्लोमा इन लैब टेक्निशियन, इमरजेंसी एण्ड ट्रामा केयर टेक्निशियन, आप्टोमेट्री, आर्थोपेडिक एण्ड प्लास्टर टेक्निशियन, डायलिसिस टेक्निशियन, एनेस्थिसिया एण्ड क्रिटिकल केयर टेक्निशियन तथा बीबीए लाजिस्टिक और पीएचडी के सभी पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षा 25 मई को कराई जाएगी।

**बैठक में ये रहे मौजूद**

मां विंध्यवासिनी राज्य विश्वविद्यालय मिर्जापुर की कुलपति प्रो. शोभा गौड़, मुख्यमंत्री के सलाहकार डा. जीएन सिंह, अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान वाराणसी के निदेशक डा. सुधांशु सिंह, एमपी शिक्षा परिषद के वरिष्ठ सदस्य रामजन्म सिंह, प्रमथनाथ मिश्र, डा. सीएम सिन्हा, प्रमुख सचिव के प्रतिनिधि संयुक्त सचिव प्रेम किशोर पांडेय, मेडिकल कालेज के प्राचार्य डा. अनुराग श्रीवास्तव, आयुर्वेद कालेज के प्राचार्य डा. गिरिधर वेदांतम, गोरखनाथ अस्पताल के चिकित्सा निदेशक राजीव कुमार पाटनी, डा. सुनील कुमार, डा. एसके सिंह, डा. विमल कुमार दुबे, डा. मिनी केवी, डा. साध्वी नंदन पांडेय, डा. हरिओम शरण, डा. मधुसूदन पुरोहित, डा. प्रशांत सदाशिवमूर्ति, डा. रघुराम, वास्तुविद व आशीष श्रीवास्तव।

## एमजीयूजी में चलेंगे बीसीए, बीएससी और एमएससी फोरेंसिक साइंस के कोर्स

गोरखपुर, २७ अप्रैल। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) की कार्यपरिषद की 14वीं बैठक रविवार को कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह की अध्यक्षता में हुई जिसका संचालन कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने किया। कार्यपरिषद ने विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों में दर्जनभर से अधिक समयानुकूल नए पाठ्यक्रमों के संचालन पर मुहर लगाई।

कार्यपरिषद की बैठक में लिए गए निर्णयों की जानकारी देते हुए उप कुलसचिव (प्रशासन) श्रीकांत ने बताया कि कार्यपरिषद ने वर्तमान परिदृश्य में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय महत्व वाले कई पाठ्यक्रमों को शुरू करने के प्रस्ताव को सर्वसम्मति से अनुमति दे दी है। नए पाठ्यक्रमों में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संकाय के तहत सत्र 2025-26 से बैचलर आफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन (बीसीए), स्वास्थ्य एवं जीवन विज्ञान संकाय के अंतर्गत सत्र 2025-26 से एमएससी फोरेंसिक साइंस तथा बीएससी फोरेंसिक साइंस, मानविकी और प्राकृतिक विज्ञान संकाय के तहत सत्र 2026-27 से मास्टर ऑफ आर्टस इन इंग्लिश एण्ड इकोनामिक्स प्रमुख रूप से शामिल हैं। इसके साथ ही वाणिज्य संकाय के प्रबंधन विभाग के तहत सत्र 2026-27 से एमबीए इन मार्केटिंग, एमबीए इन डिजिटल मार्केटिंग, एमबीए इन फाइनेंस, एमबीए इन ह्यूमन रिसोर्स, एमबीए इन फार्मेसी एडमिनिस्ट्रेशन, एमबीए इन हास्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन, एमबीए इन होटल मैनेजमेंट, एमबीए इन हॉस्पिटैलिटी एंड टूरिज्म, एमबीए इन फार्मा मार्केटिंग और एमबीए इन पेट्रोलियम मार्केटिंग जैसे विशिष्ट पाठ्यक्रमों पर भी कार्यपरिषद ने मुहर लगा दी है। उप कुलसचिव ने बताया कि कार्यपरिषद ने संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अंतर्गत संचालित पाठ्यक्रमों को संरक्षित करते हुये निर्णय लिया है कि बीएससी, एमएससी एवं पीएचडी इन बायोटेक्नोलॉजी, बीएससी, एमएससी एवं पीएचडी इन बायोकेमेस्ट्री तथा बीएससी, एमएससी एवं पीएचडी इन माइक्रोबायोलॉजी कोर्स स्वास्थ्य एवं जीवन विज्ञान संकाय के तहत चलाए जाएंगे।

## एमजीयूजी में चलेंगे बीसीए, बीएससी और एमएससी फोरेंसिक साइंस के कोर्स

गोरखपुर। (स्पष्ट आवाज)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) की कार्यपरिषद की 14वीं बैठक रविवार को कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह की अध्यक्षता में हुई जिसका संचालन कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने किया। कार्यपरिषद ने विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों में दर्जनभर से अधिक समयानुकूल नए पाठ्यक्रमों के संचालन पर मुहर लगाई।

कार्यपरिषद की बैठक में लिए गए निर्णयों की जानकारी देते हुए उप कुलसचिव (प्रशासन) श्रीकांत ने बताया कि कार्यपरिषद ने वर्तमान परिदृश्य में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय महत्व वाले कई पाठ्यक्रमों को शुरू करने के प्रस्ताव को सर्वसम्मति से अनुमति दे दी है। नए पाठ्यक्रमों में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संकाय के तहत सत्र 2025-26 से बैचलर आफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन (बीसीए), स्वास्थ्य एवं जीवन विज्ञान संकाय के अंतर्गत सत्र 2025-26 से एमएससी फोरेंसिक साइंस तथा बीएससी फोरेंसिक साइंस, मानविकी और प्राकृतिक विज्ञान संकाय के तहत सत्र 2026-27 से मास्टर ऑफ आर्टस इन इंग्लिश एण्ड इकोनामिक्स प्रमुख रूप से शामिल है। उप कुलसचिव ने बताया कि कार्यपरिषद ने संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अंतर्गत संचालित पाठ्यक्रमों को संरक्षित करते हुये निर्णय लिया है कि बीएससी, एमएससी एवं पीएचडी इन बायोटेक्नोलॉजी, बीएससी, एमएससी एवं पीएचडी इन बायोकेमेस्ट्री तथा बीएससी, एमएससी एवं पीएचडी इन माइक्रोबायोलॉजी कोर्स स्वास्थ्य एवं जीवन विज्ञान संकाय के तहत चलाए जाएगे। जबकि बीएससी, एमएससी एवं पीएचडी इन मेडिकल बायोकेमेस्ट्री और बीएससी, एमएससी और पीएचडी इन मेडिकल माइक्रोबायोलॉजी कोर्स श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कालेज हास्पिटल एण्ड रिसर्च सेंटर के अंतर्गत संचालित किए जाएगे।

**नवीन सत्र में प्रवेश के लिए परीक्षा तिथियों का हुआ निर्धारण**

एमजीयूजी को कार्यपरिषद की बैठक में नवीन सत्र 2025-26 में विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए प्रवेश परीक्षा की तिथियों को भी अनुमोदित किया गया। बीएससी नर्सिंग, पोस्ट बेसिक बीएससी नर्सिंग तथा एमएससी नर्सिंग में प्रवेश हेतु प्रवेश परीक्षा 18 मई को होगी। इसी तरह बीएससी एवं एम एस सी बायोटेक्नालाजी, बायोकेमेस्ट्री, माइक्रोबायोलाजी, मेडिकल बायोकेमेस्ट्री, मेडिकल माइक्रोबायोलाजी तथा बीएससी एग्रीकल्चर, डी.फार्मा एवं बी.फार्मा में प्रवेश हेतु प्रवेश परीक्षा 21 मई को आयोजित की जाएगी। एएनएम, एनपीसीसी, डिप्लोमा इन लैब टेक्निशियन, इमरजेंसी एण्ड ट्रामा केयर टेक्निशियन, आप्टोमेट्री, आर्थोपेडिक एण्ड प्लास्टर टेक्निशियन, डयलिसिस टेक्निशियन, एनेस्थिसिया एण्ड क्रिटिकल केयर टेक्निशियन तथा बीबीए लाजिस्टिक और पीएचडी के सभी पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षा 25 मई को कराई जाएगी।

## नये पाठ्यक्रमों को चलाने की मिली मंजूरी

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विवि गोरखपुर (एमजीयूजी) की कार्यपरिषद की 14वीं बैठक रविवार को कुलपति डा. सुरिंदर सिंह की अध्यक्षता में हुई जिसका संचालन कुलसचिव डा. प्रदीप कुमार राव ने किया। कार्यपरिषद ने विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों में दर्जनभर से अधिक समयानुकूल नए पाठ्यक्रमों के संचालन पर मुहर लगाई।

कार्य परिषद की बैठक में लिए गए निर्णयों की जानकारी देते हुए उप कुलसचिव (प्रशासन) श्रीकांत ने बताया कि कार्यपरिषद ने वर्तमान परिदृश्य में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय महत्व वाले कई पाठ्यक्रमों को शुरू करने के प्रस्ताव को सर्वसम्मति से अनुमति दे दी है। नए पाठ्यक्रमों में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संकाय के तहत सत्र 2025-26 से बैचलर आफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन (बीसीए), स्वास्थ्य एवं जीवन विज्ञान संकाय के अंतर्गत सत्र 2025-26 से एमएससी फोरेंसिक साइंस तथा बीएससी फोरेंसिक साइंस, मानविकी और प्राकृतिक विज्ञान संकाय के तहत सत्र 2026-27 से मास्टर आफ आर्टस इन इंग्लिश एण्ड इकोनामिक्स प्रमुख रूप से शामिल हैं। इसके साथ ही वाणिज्य संकाय के प्रबंधन विभाग के तहत सत्र 2026-27 से एमबीए इन मार्केटिंग, एमबीए इन डिजिटल मार्केटिंग, एमबीए इन फाइनेंस, एमबीए इन ह्यूमन रिसोर्स, एमबीए इन फार्मेसी एडमिनिस्ट्रेशन, एमबीए इन हास्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन, एमबीए इन होटल मैनेजमेंट, एमबीए इन हस्पिटैलिटी एंड टूरिज्म, एमबीए इन फार्मा मार्केटिंग और एमबीए इन पेट्रोलियम मार्केटिंग जैसे विशिष्ट पाठ्यक्रमों पर भी कार्यपरिषद ने मुहर लगा दी है। उप कुलसचिव ने बताया कि कार्यपरिषद ने संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अंतर्गत संचालित पाठ्यक्रमों को संरक्षित करते हुये निर्णय लिया है कि बीएससी, एमएससी एवं पीएचडी इन बायोटेक्नोलाजी, बीएससी, एमएससी एवं पीएचडी इन बायोकेमेस्ट्री तथा बीएससी, एमएससी एवं पीएचडी इन माइक्रोबायोलाजी कोर्स स्वास्थ्य एवं जीवन विज्ञान संकाय के तहत चलाए जाएंगे। जबकि बीएससी, एमएससी एवं पीएचडी इन मेडिकल बायोकेमेस्ट्री और बीएससी, एमएससी और

**कार्यपरिषद की बैठक**

- एमजीयूजी में चलेंगे बीसीए, बीएससी व एमएससी फोरेंसिक साइंस के कोर्स
- एमबीए में कई विशिष्ट कोर्स चलाने की अनुमति भी दी कार्य परिषद ने

पीएचडी इन मेडिकल माइक्रोबायोलजी कोर्स श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कालेज हास्पिटल एण्ड रिसर्च सेंटर के अंतर्गत संचालित किए जाएंगे। एमजीयूजी की कार्यपरिषद की बैठक में नवीन सत्र 2025-26 में विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए प्रवेश परीक्षा की तिथियों को भी अनुमोदित किया गया। बीएससी नर्सिंग, पोस्ट बेसिक बीएससी नर्सिंग तथा एमएससी नर्सिंग में प्रवेश हेतु प्रवेश परीक्षा 18 मई को होगी। इसी तरह बीएससी एवं एमएससी बायोटेक्नोलाजी, बायोकेमेस्ट्री, माइक्रोबायोलाजी, मेडिकल बायोकेमेस्ट्री, मेडिकल माइक्रोबायोलाजी तथा बीएससी एग्रीकल्चर, डी. फार्मा एवं बी. फार्मा (एलोपैथिक) में प्रवेश हेतु प्रवेश परीक्षा 21 मई को आयोजित की जाएगी। एएनएम, एनपीसीसी, डिप्लोमा इन लैब टेक्निशियन, इमरजेंसी एण्ड ट्रामा केयर टेक्नीशियन, आप्टोमेट्री, आर्थोपेडिक एण्ड प्लास्टर टेक्नीशियन, डायलिसिस टेक्नीशियन, एनेस्थिसिया एण्ड क्रिटिकल केयर टेक्नीशियन तथा बीबीए लाजिस्टिक और पीएचडी के सभी पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षा 25 मई को कराई जाएगी।

कार्यपरिषद की बैठक में मां विंध्यवासिनी राज्य विश्वविद्यालय मिर्जापुर की कुलपति प्रो. शोभा गौड़, प्रदेश के मुख्यमंत्री के सलाहकार डा. जीएन सिंह, अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान वाराणसी के निदेशक डा. सुधांशु सिंह, एमपी शिक्षा परिषद के वरिष्ठ सदस्य रामजन्म सिंह, प्रमथनाथ मिश्र, वरिष्ठ सदस्य, वरिष्ठ कैंसर सर्जन डा. सीएम सिन्हा, प्रदेश सरकार के प्रमुख सचिव के प्रतिनिधि संयुक्त सचिव प्रेम किशोर पांडेय, प्रिंसिपल, श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कालेज हास्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्रिंसिपल डा. अनुराग श्रीवास्तव, आयुर्वेद कालेज के प्रिंसिपल डा. गिरिधर वेदांतम, महायोगी गोरखनाथ अस्पताल के चिकित्सा निदेशक राजीव कुमार पाटनी, संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के डीन डा. सुनील कुमार, डीन संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान, फार्मास्युटिकल के प्रिंसिपल डा. एस.के. सिंह, प्रिंसिपल, डीन एग्रीकल्चर डा. विमल कुमार दुबे, विश्वविद्यालय के आयुर्वेद कालेज में शरीर रचना विभाग की प्रोफेसर डा. मिनी केवी, संहिता सिद्धांत के सहायक आचार्य, डा. साध्वी नंदा पांडेय, रामा विश्वविद्यालय, कानपुर में डीन अकादमिक डा. हरिओम शरण, डा. मधुसूदन पुरोहित, डा. प्रशांत सदाशिवमूर्ति, डा. रघु राम, वास्तुविद आशीष श्रीवास्तव मौजूद रहे।

## एमजीयूजी में चलेंगे बीसीए, बीएससी व एमएससी फोरेंसिक साइंस के कोर्स

कार्यपरिषद की बैठक में दर्जनभर से अधिक नए पाठ्यक्रमों के संचालन को मिली मंजूरी

गोरखपुर, 27 अप्रैल (जनमित्र)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) की कार्यपरिषद की 14वीं बैठक रविवार को कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह की अध्यक्षता में हुई जिसका संचालन कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने किया। कार्यपरिषद ने विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों में दर्जनभर से अधिक समयानुकूल नए पाठ्यक्रमों के संचालन पर मुहर लगाई। कार्यपरिषद की बैठक में लिए गए निर्णयों की जानकारी देते हुए उप कुलसचिव (प्रशासन) श्रीकांत ने बताया कि कार्यपरिषद ने वर्तमान परिदृश्य में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय महत्व वाले कई पाठ्यक्रमों को शुरू करने के प्रस्ताव को सर्वसम्मति से अनुमति दे दी है। नए पाठ्यक्रमों में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संकाय के तहत सत्र 2025-26 से बैचलर आफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन (बीसीए), स्वास्थ्य एवं

जीवन विज्ञान संकाय के अंतर्गत सत्र 2025-26 से एमएससी फोरेंसिक साइंस तथा बीएससी फोरेंसिक साइंस, मानविकी और प्राकृतिक विज्ञान संकाय के तहत सत्र 2026-27 से मास्टर ऑफ आर्टस इन इंग्लिश एण्ड इकोनामिक्स प्रमुख रूप से शामिल हैं। इसके साथ ही वाणिज्य संकाय के प्रबंधन विभाग के तहत सत्र 2026-27 से एमबीए इन मार्केटिंग, एमबीए इन डिजिटल मार्केटिंग, एमबीए इन फाइनेंस, एमबीए इन ह्यूमन रिसोर्स, एमबीए इन फार्मेसी एडमिनिस्ट्रेशन, एमबीए इन हास्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन, एमबीए इन होटल मैनेजमेंट, एमबीए इन हॉस्पिटैलिटी एंड टूरिज्म, एमबीए इन फार्मा मार्केटिंग और एमबीए इन पेट्रोलियम मार्केटिंग जैसे विशिष्ट पाठ्यक्रमों पर भी कार्यपरिषद ने मुहर लगा दी है। उप कुलसचिव ने बताया कि कार्यपरिषद ने संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अंतर्गत संचालित पाठ्यक्रमों को संरक्षित करते हुये निर्णय लिया है कि बीएससी, एमएससी एवं पीएचडी इन बायोटेक्नोलॉजी, बीएससी, एमएससी एवं पीएचडी इन बायोकेमेस्ट्री तथा बीएससी, एमएससी एवं पीएचडी इन माइक्रोबायोलॉजी कोर्स स्वास्थ्य एवं जीवन विज्ञान संकाय के तहत चलाए जाएंगे। जबकि बीएससी, एमएससी एवं पीएचडी इन मेडिकल बायोकेमेस्ट्री और बीएससी, एमएससी और पीएचडी इन मेडिकल माइक्रोबायोलॉजी कोर्स श्री गोरखनाथ मेडिकल कालेज हास्पिटल एण्ड रिसर्च सेंटर के अंतर्गत संचालित किए जाएंगे।

## एमजीयूजी में चलेंगे बीसीए, बीएससी और एमएससी फोरेंसिक साइंस के कोर्स

- कार्यपरिषद की बैठक में दर्जनभर से अधिक नए पाठ्यक्रमों के संचालन को मिली मंजूरी
- एमबीए में कई विशिष्ट कोर्स चलाने की अनुमति भी दी कार्यपरिषद ने

## समाचार दर्पण

# एमजीयूजी के छात्र का एमएनसी में हुआ चयन

**संवाददाता**

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के संबद्ध

स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के बीएससी मेडिकल माइक्रोबायोलॉजी के विद्यार्थि भानु मिश्रा का चयन मल्टीनेशनल कंपनी (एमएनसी) एमिल फार्मास्यूटिकल लिमिटेड में हुआ है। यह जानकारी देते हुए संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के प्लेसमेंट एवं ट्रेनिंग सेल के प्रमुख धनंजय पांडेय ने बताया कि एमिल फार्मास्यूटिकल ने भानु मिश्रा का चयन 3.50 लाख रुपये के वार्षिक पैकेज पर किया है। संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो सुनील कुमार सिंह ने कहा है कि बायोटेक्नोलॉजी, बायोकेमेस्ट्री, और माइक्रोबायोलॉजी में जॉब की अनंत संभावनाएं है और विभाग के लिए यह गर्व का विषय है कि यहां के विद्यार्थी मल्टीनेशनल कंपनियों में चयनित हो रहे हैं। मल्टीनेशनल कंपनी में छात्रों के चयन पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह और कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने शुभकामनाएं दी हैं।

## स्वास्थ्य और विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान की असीम संभावना -प्रो. जोशी

गोरखपुर, २८ अप्रैल। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के एमएससी बायोटेक्नोलॉजी के विद्यार्थियों ने आईसीएमआर)-आरएमआरसी का शैक्षिक भ्रमण कर वहां के विविध लैबों में जाकर जरूरी जानकारी हासिल की।क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केंद्र (आरएमआरसी) गोरखपुर के निदेशक प्रो. हरि शंकर जोशी ने विद्यार्थियों का ज्ञानार्जन करते हुए कहा कि स्वास्थ्य और विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान की असीम संभावना है। जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के विद्यार्थियों में अन्वेषकीय दृष्टि है। शोध ज्ञानार्जन के लिए छात्र आरएमआरसी के संपर्क में हैं जहां वैज्ञानिको के दिशा निर्देशन में भविष्य के नवाचार को नई ऊर्जा मिलेगी। वैज्ञानिक डॉ. अशोक कुमार पांडेय ने कहा कि क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केंद्र का गठन 2008 में हुआ है। इंसेफेलाइटिस के प्रकोप से निपटने में आरएमआरसी के अनुसंधान ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वैज्ञानिक डॉ राजीव सिंह, डॉ. बृज रंजन मिश्रा इस केंद्र की प्रयोगशाला के विभिन्न पहलुओं की विस्तार से जानकारी दी। वैज्ञानिक डॉ. अमन अग्रवाल, डॉ. नलिनी मिश्रा, डॉ. एसपी बेहरा, डॉ. रोहित बेनीवाल ने भी विद्यार्थियों का ज्ञानवर्धन किया। यह शैक्षिक भ्रमण संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो.सुनील कुमार सिंह और विभागाध्यक्ष डॉ अमित कुमार दुबे के निर्देशन में हुआ।

❖ एमजीयूजी के एमएससी बायोटेक्नोलॉजी के विद्यार्थियों ने किया आरएमआरसी का शैक्षणिक भ्रमण

## एमजीयूजी के छात्र का एमएनसी में हुआ चयन

स्वतंत्र चेतना, गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के बीएससी मेडिकल माइक्रोबायोलॉजी के विद्यार्थि भानु मिश्रा का चयन मल्टीनेशनल कंपनी एमिल फार्मास्यूटिकल लिमिटेड में हुआ है।

यह जानकारी देते हुए संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के प्लेसमेंट एवं ट्रेनिंग सेल के प्रमुख धनंजय पांडेय ने बताया कि एमिल फार्मास्यूटिकल ने भानु मिश्रा का चयन 3.50 लाख रुपये के वार्षिक पैकेज पर किया है। संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो सुनील कुमार सिंह ने कहा है कि बायोटेक्नोलॉजी, बायोकेमेस्ट्री, और माइक्रोबायोलॉजी में जॉब की अनंत संभावनाएं है और विभाग के लिए यह गर्व का विषय है कि यहां के विद्यार्थी मल्टीनेशनल कंपनियों में चयनित हो रहे हैं। मल्टीनेशनल कंपनी में छात्रों के चयन पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह और कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने शुभकामनाएं दी हैं।

## स्वास्थ्य और विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान की असीम संभावना

■ एमजीयूजी के विद्यार्थियों ने किया आरएमआरसी का शैक्षणिक भ्रमण

■ विभिन्न लैब में जाकर हासिल की जानकारी

गोरखपुर(एसएनबी)।महायोगी गोरखनाथ विवि (एमजीयूजी) के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के एमएससी बायाटेक्नोलॉजी के विद्यार्थियों ने आईसीएमआर) आरएमआरसी का शैक्षिक भ्रमण कर वहां के विविध लैबों में जाकर जरूरी जानकारी हासिल की।

क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केंद्र (आरएमआरसी) गोरखपुर के निदेशक प्रो. हरि शंकर जोशी ने विद्यार्थियों का ज्ञानार्जन करते हुए कहा कि स्वास्थ्य और विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान की असीम संभावना है। जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के विद्यार्थियों में अन्वेषकीय दृष्टि है। शोध ज्ञानार्जन के लिए छात्र आरएमआरसी के संपर्क में हैं जहां वैज्ञानिकों के दिशा निर्देशन में भविष्य के नवाचार को नई ऊर्जा मिलेगी। वैज्ञानिक डॉ. अशोक कुमार पांडेय ने कहा कि क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केंद्र का गठन 2008 में हुआ है। इंसेफेलाइटिस के प्रकोप से निपटने में आरएमआरसी के अनुसंधान ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वैज्ञानिक डॉ. राजीव सिंह, डॉ. बृज रंजन मिश्रा ने इस केंद्र की प्रयोगशाला के विभिन्न पहलुओं की विस्तार से जानकारी दी। वैज्ञानिक डॉ. अमन अग्रवाल, डॉ. नलिनी मिश्रा, डॉ. एसपी बेहरा, डॉ. रोहित बेनीवाल ने भी विद्यार्थियों का ज्ञानवर्धन किया। यह शैक्षिक भ्रमण संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो.सुनील कुमार सिंह और विभागाध्यक्ष डॉ. अमित कुमार दुबे के निर्देशन में हुआ।

## स्वास्थ्य और विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान की असीम संभावना : प्रो. जोशी

**»एमजीयूजी के एमएससी बायोटेक्नोलॉजी के विद्यार्थियों ने किया आरएमआरसी का शैक्षणिक भ्रमण**

स्वतंत्र चेतना, गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के एमएससी बायोटेक्नोलॉजी के विद्यार्थियों ने आईसीएमआर)-आरएमआरसी का शैक्षिक भ्रमण कर वहां के विविध लैबों में जाकर जरूरी जानकारी हासिल की।

क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केंद्र (आरएमआरसी) गोरखपुर के निदेशक प्रो. हरि शंकर जोशी ने विद्यार्थियों का ज्ञानार्जन करते हुए कहा कि स्वास्थ्य और विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान की असीम संभावना है। जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के विद्यार्थियों में अन्वेषकीय दृष्टि है। शोध ज्ञानार्जन के लिए छात्र आरएमआरसी के संपर्क में हैं जहां वैज्ञानिको के दिशा निर्देशन में भविष्य के नवाचार को नई ऊर्जा मिलेगी।

वैज्ञानिक डॉ. अशोक कुमार पांडेय ने कहा कि क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केंद्र का गठन 2008 में हुआ है। इंसेफेलाइटिस के प्रकोप से निपटने में आरएमआरसी के अनुसंधान ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वैज्ञानिक डॉ राजीव सिंह, डॉ. बृज रंजन मिश्रा इस केंद्र की प्रयोगशाला के विभिन्न पहलुओं की विस्तार से जानकारी दी। वैज्ञानिक डॉ. अमन अग्रवाल, डॉ. नलिनी मिश्रा, डॉ. एसपी बेहरा, डॉ. रोहित बेनीवाल ने भी विद्यार्थियों का ज्ञानवर्धन किया। यह शैक्षिक भ्रमण संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो.सुनील कुमार सिंह और विभागाध्यक्ष डॉ अमित कुमार दुबे के निर्देशन में हुआ।

# अप्रैल माह की मुख्य बैठकें

**07 अप्रैल, 2025** || माननीय कुलपति की अध्यक्षता में आयोजित आवास समिति की बैठक का कार्यवृत्त

कार्यसूची : मेडिकल कॉलेज में भर्ती मेडिकल फैकल्टी को पूर्ण फर्निश और सेमी फर्निश आवास उपलब्ध करानाए विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो बाहर के स्थानों से आए हैं और विश्वविद्यालय के डीन के लिए।

निर्णय : क्वार्टर नंबर 201, 203, 204, 104 में निवास कर रहे फैकल्टी को पूर्ण फर्निश सुविधा प्रदान करना और महंत गोपाल नाथ छात्रावास में 2 बीएचके कमरे में निवास कर रहे फैकल्टी को। क्वार्टर नंबर 202 में निवास कर रहे फैकल्टी को सेमी फर्निश सुविधा जैसे–आरओ, गीजर, एयर कंडीशनर और सोफा सेट प्रदान करना, कमरे नंबर 205 में आरओ् की सुविधा और कमरे नंबर 102 में एयर कंडीशनर की सुविधा। स्टाफ क्वार्टर की सुरक्षा के लिए 7/24 घंटे एक सुरक्षा गार्ड की तैनाती। स्टॉफ क्वार्टर में अनियमित जल आपूर्ति को नियंत्रित करना। स्टॉफ क्वार्टर में बिजली बैकअप के लिए तंत्र विकसित करना। प्राथमिकता के आधार पर जनरेटर बैटरी को बदलना। स्टॉफ क्वार्टर की प्रथम और द्वितीय फ्लोर पर धूल आने से रोकने के लिए आवश्यक व्यवस्था करना। गलियारों में पानी के अवशेष को रोकना चाहिए। बंद सड़क बनाई जानी चाहिए।

**14 अप्रैल, 2025** || संजय वेदी, आईसीएसएसआरआई के साथ माननीय कुलपति की अध्यक्षता में आयोजित बैठक का कार्यवृत्त।

निर्णय :
1. श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों का दौरा किया जाना चाहिए और अध्ययन किया जाना चाहिए कि छात्र विशेष रूप से कृषि के लिए उनके पास क्यों आते हैं।
2. आईसीएआर से मान्यता प्राप्त कर अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के लिए अलग छात्रावास बनाया जाए।
3. चिकित्सा पर्यटन के विकास पर विचार किया जाना चाहिए।
4. आने वाले वर्षों में अनुसंधान सुविधाओं का विकास किया जाना चाहिए।
5. वेबसाइट की सामग्री का अनुवाद जापानी, फ्रेंच और रूसी जैसी 3 विदेशी भाषाओं में किया जाना चाहिए।
6. भारतीय ज्ञान प्रणाली की स्थापना की जानी चाहिए।
6. क्षेत्र के स्थानीय हितोंध्वरीयताओं को ध्यान में रखते हुए विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों के लिए भौगोलिक वरीयता तय की जाएगी (उदाहरण के लिए यूरोप में जैव–प्रौद्योगिकी की क्षमता है)
7. विस्तार संभावनाएं : परिसर में विदेशियों के लिए अल्पकालिक पाठ्यक्रम (योग, आयुर्वेद, वैदिक विज्ञान) चिकित्सा पर्यटन–उपचार और रिट्रीटय विदेशों में साझेदारी–भारत के बाहर परिसरों का विकासय विदेशों में अध्ययन कर रहे चिकित्सा में भारतीय छात्रों के लिए नैदानिक प्रशिक्षण (विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ गठजोड़ और एनएमसी की अनुमति आवश्यक होगी) आयुष मंत्रालय के समर्थन से विदेशों में आयुष सूचना प्रकोष्ठों की स्थापना, एमडीएमयू में डिग्री पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने के लिए एमजीएमयू में विदेशी छात्रों के लिए स्लॉट।
8. महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के वैश्विक आउटरीच के लिए विशेष रूप से काम करने वाले पर्याप्त कर्मचारियों के साथ अंतर्राष्ट्रीय सहयोग प्रभाग बनाने के लिए। डिजिटल अपग्रेडेशन : वेबसाइट : इंटरैक्टिव, एक समान तरीके से और दुनिया की 5.6 प्रमुख भाषाओं में गुणवत्ता वाली सामग्रीय लक्षित दर्शकों के लिए इंस्टाग्राम और अन्य सोशल मीडिया प्लेटफार्मों? पर भुगतान के आधार पर विज्ञापन सहित सोशल मीडिया में उपस्थिति बढ़ाना।
9. डिजिटल अपग्रेडेशन : वेबसाइट– इंटरैक्टिव, एक समान तरीके से और दुनिया की 5.6 प्रमुख भाषाओं में गुणवत्ता सामग्रीय लक्षित दर्शकों के लिए इंस्टाग्राम और अन्य सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर भुगतान के आधार पर विज्ञापन सहित सोशल मीडिया में उपस्थिति बढ़ाना। 3 वैर्श्विक सहभागिता–छात्रों और संकाय के आदान–प्रदान के प्रावधान को ध्यान में रखते हुए समझौता ज्ञापन का मसौदा तैयार करना और संयुक्त संगोष्ठियों/सम्मेलनों का आयोजन। वैश्विक सहयोग के लिए क्षेत्रों की पहचान (उदाहरण के लिए, कृषि, फार्मा, चिकित्सा, आयुर्वेद, योग)।

# मई, 2025 की प्रस्तावित कार्ययोजनाएं

## विभागीय आयोजन

### गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस

| | |
|---|---|
| 01 मई, 2025 | अभिभावक–शिक्षक बैठक एवं वाग्भट्ट बैच के द्वितीय व्यावसायिक सत्र का आरम्भ |
| 16 मई, 2025 | अतिथि व्याख्यान |

### महंत अवेद्यनाथ पैरामेडिकल कॉलेज

| | |
|---|---|
| 12 मई, 2025 | अतिथि व्याख्यान |

### फॉर्मेसी संकाय

| | |
|---|---|
| 24 मई से 05 जून, 2025 | बी फार्म सेमेस्टर परीक्षा |
| 24 मई से 05 जून, 2025 | डी फॉर्म वार्षिक परीक्षा |

### सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय

| | |
|---|---|
| 07 से 14 मई, 2025 | वाह्य सेमेस्टर परीक्षा प्रायोगिक (संभावित) |
| 15 से 30 मई, 2025 | वाह्य सेमेस्टर परीक्षा लिखित संभावित) |

### कृषि संकाय

| | |
|---|---|
| 01 से 06 मई, 2025 | द्वितीय आंतरिक परीक्षा |
| 07 से 14 मई, 2025 | प्रयोगात्मक परीक्षा |
| 24 से 10 जून, 2025 | वाह्य समेस्टर परीक्षा |

### श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेण्टर

| | |
|---|---|
| 02 मई, 2025 | पल्मोनरी फंक्शन ऐंड स्लिप लब इनॉग्रेशन |
| 28 मई, 2025 | महिला स्वास्थ्य दिवस |
| 31 मई, 2025 | विश्व तंबाकू निषेध दिवस |

### गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग

| | |
|---|---|
| 05 मई, 2025 | विश्व हाथ स्वच्छता दिवस |
| 12 मई, 2025 | अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस |

# निर्माणाधीन परिसर

01 निर्माणाधीन क्रीडांगन

02 निर्माणाधीन फार्मेसी संकाय

03 निर्माणाधीन प्रेक्षागृह

04 निर्माणाधीन शिक्षक आवास

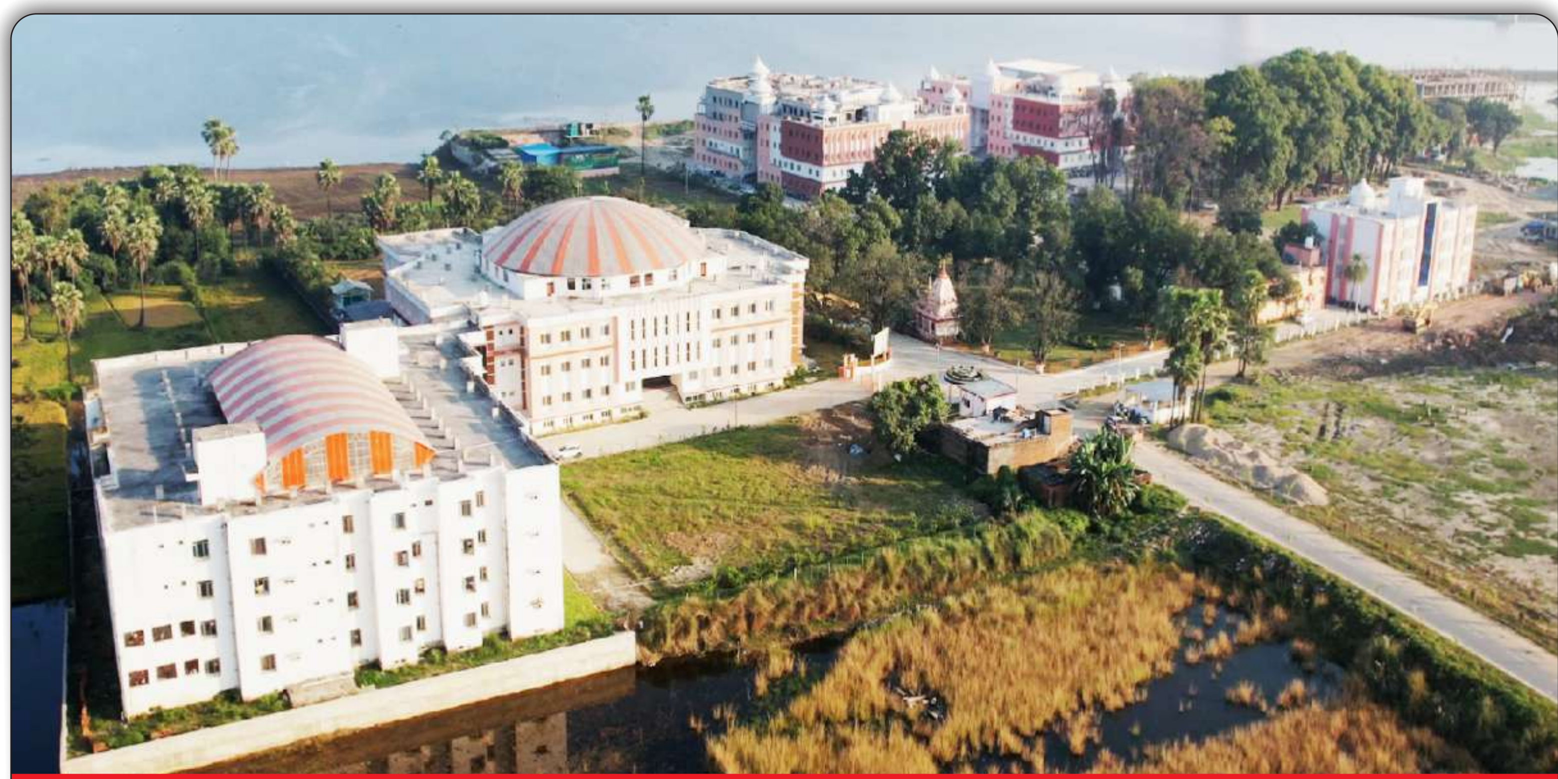

05 विश्वविद्यालय परिसर का वायवीय दृश्य

# आरोग्य पथ

मासिक ई-पत्रिका

01 प्रो. (डॉ.) चंचाई बूनला

02 डॉ. अजीत कुमार शासनी

03 प्रो. (डॉ.) सुरिन्दर सिंह

04 बच्चो को स्वास्थ्य जागरूकता समझाती नर्सिंग की छात्राएं

05 डॉ. अंजू टी.आर.

06 डॉ. तरुण कुमार उपाध्याय

07 स्वास्थ्य जागरूकता के तहत बच्चों के साथ छात्राएं

08 आचार्य सचिदानन्द चतुर्वेदी

09 डॉ. तरुण कुमार उपाध्याय

10 कार्यपरिषद की बैठक में उपस्थित गणमान्य


**प्रधान सम्पादक**
डॉ. विमल कुमार दूबे

**सम्पादक**
आचार्य साध्वीनन्दन पाण्डेय

**संपादक मण्डल**
श्री रोहित श्रीवास्तव, डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. कुलदीप सिंह एवं सुश्री स्वेता अल्बर्ट

**ग्राफिक्स डिजाइनर:** श्री शारदानन्द पाण्डेय



mguniversitygkp@mgug.ac.in https://www.mgug.ac.in/ +91-9415266014, +91-9935904499, +91-9794299451
Arogya Dham, Balapar Road, Sonbarsa, Gorakhpur